● वर्ष-3
● अंक-179
रायपुर, बुधवार
06 मार्च 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› महाशिवरात्रि के मौके पर .....

400 के पास पहुंच सकता है एनडीए

नई दिल्ली। अगर अभी चुनाव हों तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) 543 लोकसभा सीटों में से 378 सीटें जीत सकता है। इंडिया टीवी-सीएनएक्स ओपिनियन पोल के सर्वेक्षण में इस बात का दावा किया गया है। वहीं, विपक्षी कांग्रेस के नेतृत्व वाली इंडिया ब्लॉक (तृणमूल कांग्रेस को छोड़कर) 98 सीटें जीत सकता है, जबकि ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी, चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व वाली टीडीपी, नवीन पटनायक की बीजेडी और निर्दलीय सहित अन्य को

शेष 67 सीटें मिल सकती हैं।

जनमत सर्वेक्षण 5 से 23 फरवरी के बीच सभी 543 निर्वाचन क्षेत्रों में आयोजित किया गया था, और उत्तरदाताओं की कुल संख्या 1,62,900 थी। इनमें 84,350 पुरुष और 78,550 महिलाएं शामिल हैं। सर्वे के मुताबिक, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) अपने दम पर 335 सीटें जीत सकती है। वह गुजरात की सभी 26 सीटों, मध्य प्रदेश की सभी 29 सीटों, राजस्थान की सभी 25 सीटों, हरियाणा की सभी 10 सीटों, दिल्ली की सभी सात सीटों, उत्तराखंड की सभी 5 सीटों और सभी 4 सीटों पर क्लीन स्वीप करने जा रही है। जनमत सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल प्रदेश।

सबसे शानदार जीत उत्तर प्रदेश में होने जा रही है, जहां भाजपा 74 सीटें जीत सकती है, और उसके गठबंधन सहयोगी राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) और अपना दल कुल 80 सीटों में से दो-दो सीटें जीत सकते हैं। शेष दो सीट अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी (सपा) जीत सकती है। यूपी में कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) को एक भी सीट नहीं मिल सकती। अन्य राज्य जहां भाजपा उल्लेखनीय जीत हासिल करने जा रही है वे हैं बिहार (40 में से 17), झारखंड (14 में से 12), कर्नाटक (28 में से 22), महाराष्ट्र (48 में से 25), ओडिशा (21 में से 10)), असम (14 में से 10) और पश्चिम बंगाल (42 में से 20)।

एमएनएस-भाजपा में गठबंधन की चर्चा, लेकिन राज ने बनाया अलग प्लान, 13 सीटों पर उम्मीदवार उतारने की तैयारी

जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव नजदीक आ रहे हैं, भारतीय जनता पार्टी-महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना गठबंधन को लेकर कोई सकारात्मक बातचीत आगे परवान चढ़ती नहीं नजर आ रही है। मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे ने आज से मुंबई में अपना लोकसभा दौरा शुरू कर दिया है। इसलिए चर्चा है कि एमएनएस अपने दम पर लड़ने की तैयारी कर रही है। एमएनएस ने लोकसभा के लिए जोरदार तैयारियां शुरू कर दी हैं, लेकिन एमएनएस-बीजेपी गठबंधन सकारात्मक नहीं होने के कारण ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि एमएनएस अपने दम पर लड़ने की तैयारी कर रही है, क्योंकि एमएनएस अध्यक्ष राज ठाकरे खुद मुंबई के लोकसभा क्षेत्र में घूम रहे है। इसलिए एमएनएस राज्य में अपने दम पर 13 से 14 उम्मीदवारों को चुनाव लड़ाने की तैयारी कर रही है। इस मुद्दे पर मनसे नेता अविनाश अभ्यंकर ने एक सुझाव देते हुए कहा है कि हम पिछले 17 सालों से अपने दम पर लड़ रहे हैं, इसलिए मनसे की प्रगति एकला चलो की दिशा में है।

तेलंगाना में बीआरएस-बीएसपी गठबंधन की घोषणा, सीट बंटवारे के फॉर्मूले पर चर्चा जल्द

भारत राष्ट्र समिति के प्रमुख और तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री केसीआर ने मंगलवार को आगामी लोकसभा चुनाव के लिए मायावती के नेतृत्व वाली बहुजन समाज पार्टी के साथ अपनी पार्टी के गठबंधन की घोषणा की। उन्होंने कहा कि दोनों पार्टियों ने कई पहलुओं पर मिलकर काम किया है और सीट बंटवारे को लेकर फैसला करेंगे। केसीआर ने घोषणा करते हुए कहा कि हमने तय किया है कि बीआरएस और बसपा अगला संसदीय चुनाव मिलकर लड़ेंगे। हमने कई पहलुओं पर साथ मिलकर काम किया है। हम कल तय करेंगे कि कितनी सीटों पर चुनाव लड़ना है। केसीआर ने कहा कि मेरी अभी तक मायावती से बात नहीं हुई है। मेरी सिर्फ आरएस प्रवीण कुमार से बात हुई है। बीएसपी नेता आरएस प्रवीण ने कहा कि केसीआर से मिलकर अच्छा लगा। यह संविधान को नष्ट करने की साजिश है। देश में कांग्रेस और बीजेपी दोनों को एक साथ रोकने की जरूरत है। हमारी (बीआरएस और बीएसपी) दोस्ती तेलंगाना को पूरी तरह से बदल देगी। विशेष रूप से, केसीआर का बीआरएस विपक्ष के इंडिया ब्लॉक का हिस्सा नहीं था और अपने दम पर चुनाव में उतरता। हालांकि, बीएसपी के साथ गठबंधन की घोषणा के बाद लोकसभा चुनाव में तेलंगाना में त्रिकोणीय मुकाबला होने की संभावना है।

राहुल गांधी के रोड शो मोदी-मोदी के भी लगे नारे

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता और वायनाड सांसद राहुल गांधी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा की राजनीतिक यात्रा में एक आध्यात्मिक यात्रा को एकीकृत करते हुए, उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यह यात्रा न केवल राजनीति के साथ आस्था के मिश्रण का प्रतीक है, बल्कि कांग्रेस के चल रहे अभियान प्रयासों में उज्जैन की अद्वितीय प्रासंगिकता को भी रेखांकित करती है, जो भारत जोड़ो यात्रा और भारत जोड़ो न्याय यात्रा दोनों में प्रदर्शित एकमात्र शहर है। कांग्रेस ने तस्वीरों को साझा करते हुए कहा कि धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो। प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो। कांग्रेस ने लिखा कि आज उज्जैन के विश्वप्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर में राहुल गांधी ने भगवान शिव की पूजा-अर्चना कर देश की सुख-शांति और समृद्धि की कामना की। श्री महाकाल के आशीर्वाद से हम देश में अन्याय को हराकर, न्याय स्थापित करने में जरूर सफल होंगे। इसके बाद उन्होंने एक सभा में कहा कि हमें नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोलनी है। ये काम बहुत आसान

है- जैसे यात्रा के दौरान भाजपा के कार्यकर्ता झंडा लिए खड़े थे, वे चिल्ला रहे थे। मैं गाड़ी से उतरकर उनसे मिला तो उन्होंने चिल्लाना बंद कर दिया और फिर मुस्कुराना शुरु कर दिया।

राहुल ने कहा कि मोहब्बत की दुकान खोलना काफी आसान होता है। उन्होंने कहा कि जो लोग डरते हैं, नफरत उन्हीं के अंदर पैदा होती है। जो निडर होकर मुश्किलों का सामना करते हैं, वे जीवन में कुछ भी कर सकते हैं। राहुल गांधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो न्याय यात्रा मंगलवार को जब मध्य प्रदेश के शाजापुर शहर से गुजर रही थी तो उनका मोदी-मोदी के नारे के साथ स्वागत किया गया। कांग्रेस नेता ने अपना काफिला रोककर नारे लगाने वाले भाजपा कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। गांधी को आगे बढ़ने से पहले अपने वाहन से भाजपा कार्यकर्ताओं को 'फ्लाइंग किस' देते हुए देखा गया। गांधी की यात्रा ने शनिवार दोपहर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासित मध्य प्रदेश में प्रवेश किया।

जब यह यात्रा शाजापुर से गुजर रहा था, तो एबी रोड पर पार्षद मुकेश दुबे के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं के एक समूह को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा में मोदी-मोदी के नारे लगाते देखा गया। उन्हें देखकर गांधी ने गाड़ी उनके पास रोकने को कहा और फिर उन्होंने वाहन से उतरकर उनसे मुलाकात की। जब वह उनसे मिल रहे थे.

रायपुर। ''रामकाज किन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम'', मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार मानस की इन पंक्तियों के अनुरूप राम के आदर्शों के अनुरूप काम कर रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के निरंतर आदर्शों से सीख लेते हुए राज्य के नागरिक तथा तंत्र एक आदर्श समाज का निर्माण कर सकें, इसके लिए रामलला दर्शन योजना आरंभ की गई। मुख्यमंत्री साय ने रामलला दर्शन योजना के तहत आज राजधानी रायपुर के रेल्वे स्टेशन से अयोध्या जाने वाली विशेष ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। ट्रेन में 850 राम भक्तों की टोली जय राम का नारा लगाते हुए अयोध्या के लिए रवाना हुआ।

नई न्याय प्रणाली मानवीय संवेदनाओं को देती है सर्वोच्च प्राथमिकता: साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की उपस्थिति में आज पुलिस मुख्यालय, नवा रायपुर में नवीन आपराधिक कानूनों पर पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने हेतु छत्तीसगढ़ पुलिस एवं हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, नवा रायपुर के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किये गए। एमओयू के तहत नवीन कानूनों भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, भारतीय न्याय संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 पर पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि नवीन कानून छत्तीसगढ़ राज्य के कानूनी परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होंगे। नवीन अपराधिक कानूनों पर छत्तीसगढ़ के पुलिस

ऐसा एमओयू करने वाला छत्तीसगढ़ पहला राज्य

अधिकारियों को व्यापक रूप से प्रशिक्षण प्रदाय करने हेतु हिदायतुल्लाह राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय एवं छत्तीसगढ़ पुलिस के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करना कानूनी प्रणाली को मजबूत करने एवं सभी के लिए त्वरित न्याय सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सरकार नवीन आपराधिक कानूनों की मंशानुरूप छत्तीसगढ़ के नागरिकों को त्वरित एवं समुचित न्याय प्रदान करने कृत संकल्पित है। हमारी नई न्याय प्रणाली मानवीय संवेदनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। यह भारतीय न्याय प्रणाली का बहुत बड़ा टर्निंग पाईंट है एवं देश में नये अध्याय की शुरूआत होती है। जहां अंग्रेजों के कानून में दंड पर जोर दिया गया है, वहीं देश के नवीन कानून न्याय की बात करता है। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि तीन कानूनों के संदर्भ में जब चर्चा प्रारंभ हुई तब हमने भी राज्य में विचार विमर्श कर निर्णय लिया कि महिलाओं के विरूद्ध कोई अपराध घटित होता है तो इस मामले में समुचित कार्रवाई के लिए महिला थाना की संख्या बढ़ानी चाहिए।

प्रमुख समाचार

19 बार लॉन्च हुआ राहुलयान, 20वीं बार प्रयास जारी-शाह

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव से पहले केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह महाराष्ट्र दौरे पर है। उन्होंने जलगांव में युवा सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान शाह ने विपक्षी दलों पर जमकर निशाना साधा। शाह ने कहा कि आने वाला चुनाव 2047 में आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाने का चुनाव है। ये चुनाव भारत के युवाओं और भारत के भविष्य का चुनाव है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भाजपा को वोट का मतलब - युवाओं के उज्ज्वल भविष्य को वोट, भाजपा को वोट मतलब - महान भारत की रचना को वोट, भाजपा को वोट का मतलब - मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए वोट। अमित शाह ने कहा कि आपमें से जो लोग पहली बार वोट करेंगे, मैं उन युवा साथियों से विशेषकर कहने आया हूं कि आप अपना वोट उस पार्टी को दीजिएगा जो पार्टी भारत माता को विश्वगुरु के स्थान पर बैठा पाए, महान भारत की रचना कर पाए। अपना वोट लोकतंत्र को मजबूत करने वाली पार्टियों को दीजिए। उन्होंने कहा कि मोदी जी की खिलाफत करने वाली घमंडिया गठबंधन की सभी पार्टियां परिवारवादी पार्टियां हैं।

सीबीआई जांच के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची ममता

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल सरकार ने मंगलवार को संदेशखली मामले में सीबीआई जांच के निर्देश देने वाले कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने सुप्रीम कोर्ट के समक्ष याचिका का उल्लेख किया। जिसके बाद शीर्ष अदालत ने वकील से रजिस्ट्रार जनरल के समक्ष इसका उल्लेख करने को कहा। इससे पहले आज, कलकत्ता उच्च न्यायालय ने संदेशखाली में ईडी अधिकारियों पर हमले की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को स्थानांतरित करने का आदेश दिया। अदालत ने पश्चिम बंगाल पुलिस को मामले के मुख्य आरोपी शाजहान शेख को सीबीआई को सौंपने का भी आदेश दिया। पश्चिम बंगाल सरकार ने मामले की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया था। शेख की गिरफ्तारी के बाद राज्य सरकार ने मामले की जांच बशीरहाट पुलिस से लेकर सीआईडी ??को सौंप दी थी, जो अब सीआईडी ??की पुलिस रिमांड में है। टीएमसी नेता को पुलिस ने 29 फरवरी को गिरफ्तार किया था, जिसके एक दिन बाद उच्च न्यायालय ने आदेश दिया था कि महिलाओं पर कथित यौन अत्याचार और संदेशखाली में जमीन हड़पने के मुख्य आरोपी शेख को सीबीआई, ईडी या पश्चिम बंगाल द्वारा गिरफ्तार किया जा सकता है।

चुनावी बॉन्ड का ब्यौरा जल्द सार्वजनिक हो- श्रीनिवास

नयी दिल्ली। भारतीय युवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्रीनिवास बी.वी. ने मंगलवार को कहा कि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) को उच्चतम न्यायालय के आदेश का पालन करते हुए छह मार्च तक चुनावी बॉन्ड का ब्यौरा सार्वजनिक करना चाहिए क्योंकि लोकतंत्र में जनता को यह जानने का हक है किसने किस पार्टी को चंदा दिया है। उन्होंने एक बयान में यह आरोप भी लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 'रिश्वतखोरी का काला सच' छिपाने के लिए एसबीआई को ढाल बनाया है। श्रीनिवास ने कहा, ''उच्चतम न्यायालय ने चुनावी बॉन्ड कोअवैध करार हुए कहा था कि लोकतंत्र में किसने, किस पार्टी को, कितना पैसा दिया, यह सच जानने का हक जनता को है। न्यायालय ने एसबीआई को आदेश दिया था कि छह मार्च तक चुनावी बॉन्ड के तहत चंदा देने वालों के नाम सार्वजनिक किए जाएं और चुनाव आयोग के साथ साझा किए जाएं।'' उन्होंने कहा कि एसबीआई को इस समयसीमा के भीतर ही न्यायालय के आदेश का पालन करना चाहिए। एसबीआई ने राजनीतिक दलों द्वारा भुनाए गए प्रत्येक चुनावी बॉण्ड के विवरण का खुलासा करने के लिए 30 जून तक समय देने का सोमवार को उच्चतम न्यायालय से अनुरोध किया।

हिंद महासागर में नहीं चलेगी किसी की दादागिरी- राजनाथ

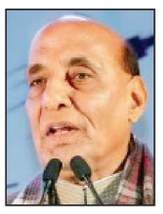

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को कहा कि भारतीय नौसेना यह सुनिश्चित कर रही है कि कोई भी देश, अपनी जबरदस्त आर्थिक और सैन्य शक्ति के साथ, हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में मित्र देशों पर प्रभुत्व स्थापित करने या उनकी संप्रभुता को खतरे में डालने में सक्षम न हो। रक्षा मंत्री ने रेखांकित किया कि भारत हिंद महासागर क्षेत्र में तटीय देशों को पूर्ण सहायता प्रदान करके अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र में, हमने यह सुनिश्चित किया है कि नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था मजबूत हो। सिंह ने गोवा में नेवल वॉर कॉलेज (एनडब्ल्यूसी) में नए प्रशासनिक और प्रशिक्षण भवन के औपचारिक उद्घाटन के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि भारत यह सुनिश्चित कर रहा है कि हिंद महासागर के सभी पड़ोसी देशों को उनकी स्वायत्तता और संप्रभुता की रक्षा करने में मदद की जाए। हमने यह सुनिश्चित किया है कि कोई भी इस क्षेत्र में आधिपत्य का प्रयोग न करे। मंत्री ने खतरे की आशंका से निपटने में बदलाव पर भी प्रकाश डाला।

चीन-मालदीव ने किया समझौता, मुफ्त सैन्य मदद देगा ड्रैगन

नई दिल्ली। हिंद महासागर क्षेत्र में बदलती गतिशीलता के बीच मालदीव और चीन ने दो सैन्य समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। ये सौदे दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में एक नया अध्याय जोड़ते हैं, खासकर ऐसे समय में जब मालदीव की भारत के साथ बातचीत में तनाव के संकेत दिख रहे हैं। समझौतों को एक समारोह में औपचारिक रूप दिया गया जहां मालदीव के रक्षा मंत्री घासन मौमून और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के अंतर्राष्ट्रीय सैन्य सहयोग कार्यालय के उप निदेशक मेजर जनरल झांग बाओकुन ने दस्तावेजों का आदान-प्रदान किया। मालदीव मीडिया के अनुसार, एक समझौते की शर्तों के तहत, चीन ने मालदीव को बिना किसी कीमत के सैन्य सहायता प्रदान करने का वादा किया है। हालांकि सहायता की बारीकियों का खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन चीन की ओर से यह इशारा दोनों देशों के बीच सैन्य और रणनीतिक संबंधों को गहरा करने का संकेत देता है। मालदीव के रक्षा मंत्रालय ने अभी तक सहायता के विवरण का खुलासा नहीं किया है, जिससे सैन्य समर्थन की प्रकृति और दायरे पर अटकलों की गुंजाइश बनी हुई है। इसके अतिरिक्त, चीनी अनुसंधान पोत जियांग यांग होंग 3 के संबंध में एक समानांतर समझौते पर हस्ताक्षर किए गए.

लोकसभा चुनाव 2024 में नरेंद्र मोदी के सामने विपक्ष का चेहरा कौन?

डॉ. आशीष वशिष्ठ

अगले कुछ दिनों में चुनाव आयोग लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा करेगा। राजनीतिक दल चुनाव मैदान में कूद चुके हैं। देश का राजनीतिक तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। भाजपानीत एनडीए का चेहरा नरेंद्र मोदी हैं। ऐसे में अहम प्रश्न है कि मोदी के सामने विपक्ष का चेहरा कौन होगा? क्या विपक्ष चुनाव मैदान में उतरने से पहले किसी एक चेहरे पर सहमति बना पाएगा? या फिर विपक्ष बिना चेहरे के ही मोदी को चुनौती देगा? विपक्ष अभी तक यह तय नहीं कर पाया है कि मोदी के सामने कौन विपक्ष को चेहरा कौन होगा।

भाजपा ने पिछले चुनाव में भी इस बात को खूब प्रचारित किया था कि विपक्ष के पास मोदी का कोई विकल्प नहीं है। सोशल मीडिया पर आज भी इस बात की चर्चा होती है कि आम चुनाव में विपक्ष के पास प्रधानमंत्री के लिए कौन ऐसा उम्मीदवार है, जो मोदी की बराबरी करता दिखे? इसका कोई जवाब विपक्ष के पास नहीं है। विपक्ष में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार अनेक हैं। दलों में क्षेत्रीय स्तर पर टकराव बहुत हैं। इनके चलते विपक्ष चुनाव, संसद के भीतर या सड़क पर सरकार के खिलाफ एकजुट नहीं दिखाई देता है। नीतीश कुमार ने विपक्षी एकता का प्रयास किया था, लेकिन कांग्रेस के रवैये से रुष्ट होकर वो दोबारा एनडीए में शामिल हो चुके हैं। इंडी अलायंस पिछले दस महीने में आधा दर्जन बैठकों के बाद भी किसी एक चेहरे के नाम पर सहमति नहीं बना पाया। विपक्ष का हर नेता स्वयं को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार समझता है। 2014 के बाद जब से नरेंद्र मोदी की अगुवाई में नई बीजेपी सामने आई तब से देश में चेहरा आधारित चुनाव का नया दौर शुरू हुआ। नरेंद्र मोदी के सामने विकल्प कौन? यह विपक्ष का सबसे अनसुलझा सवाल रहा। बीता साल भी विपक्ष ने इसी के जवाब में निकाल दिया। विपक्ष ने 27 दलों का इंडी अलांयस भी बनाया तब भी उसमें एक आम चेहरा सामने नहीं ला पाया। वहीं अगर पिछले कुछ सालों का रिकार्ड देखें तो जिस राज्य में विपक्ष ने विधानसभा चुनाव में मजबूत चेहरा रखा वहां उसे विजय हासिल हुई। लेकिन केंद्र में आकर वह ऐसा करने में विफल रहा। बीती 19 दिसंबर को इंडी अलांयस की मीटिंग में यह मसला उठा और कुछ नेताओं ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का नाम आगे किया लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जोर देकर कहा कि विपक्षी दलों के लिए पहली प्राथमिकता आम चुनाव जीतना और फिर प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार का नाम तय करना होगा। उन्होंने कहा, ''आवश्यक सदस्यों के बिना पीएम उम्मीदवार के बारे में चर्चा निरर्थक है।'' खड़गे के गैर-प्रतिबद्ध रुख ने संकेत दिया कि गठबंधन का चेहरा नामित करने का मुद्दा विवादास्पद बना हुआ है। जबकि तमाम आंकड़े और सर्वेक्षण बताते हैं कि आजकल मतदाता चुनाव में नेतृत्व की स्पष्टता वाले दल की ओर अधिक जाना पसंद करते हैं।

ऐसे में विपक्ष के लिए इस अनसुलझे प्रश्न की तलाश सबसे अधिक है। मुकाबला तो साफ तौर पर घोषित उम्मीदवारों के बीच होता है। जब विपक्ष ने किसी को अपना चेहरा घोषित ही नहीं कर पाया, ऐसे में आमजन में यह संदेश गया कि विपक्ष के पास मोदी का मुकाबला करने वाला कोई नाम और चेहरा नहीं है। बिना किसी चेहरे के विपक्ष अपनी आधी लड़ाई शुरू होने से पहले ही हार चुका है। इंडी अलांयस के गठन के पहले ही दिन से कांग्रेस बड़ी चालाकी से गठबंधन के संयोजक के मुद्दे पर हीलाहवाली करती रही। सीट बंटवारे को लेकर भी उसका रूख कभी साफ नहीं रहा। वास्तव में कांग्रेस ने बड़ी चालाकी से नीतीश कुमार के बनाए मंच पर अपना वर्चस्व और प्रभुत्व स्थापित कर लिया। और रणनीति के तहत वो संयोजक के नाम की घोषणा जैसे अहम मुद्दे को बैठक दर बैठक टालती रही। गठबंधन में संयोजक ही प्रधानमंत्री पद का चेहरा होता। कांग्रेस यह नहीं चाहती थी कि राहुल गांधी के अलावा कोई दूसरा चेहरा गठबंधन की ओर से घोषित किया जाए। हालांकि कांग्रेस की चालाकी को नीतीश, केजरीवाल और ममता भांप गए। इसलिए इन तीन नेताओं ने कांग्रेस के रवैये की आलोचना करने से परहेज नहीं किया। नीतीश तो गठबंधन से अलग हो गए। ममता ने मल्लिकार्जुन का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए आगे बढ़ाकर राहुल और अन्य संभावित प्रत्याशियों का रास्ता रोकने का काम किया। केजरीवाल कांग्रेस के साथ आए भी तो अपनी शर्तों पर। कांग्रेस ने झुककर आप से सीटों का बंटवारा किया। ममता अकेले चुनाव लड़ने का संदेश दे ही चुकी है। मतलब साफ है कि गठबंधन में कोई किसी को आगे बढ़ता देखना नहीं चाहता। विपक्ष का हर नेता स्वयं को प्रधानमंत्री पद का दावेदार मानता है। और वो प्रधानमंत्री पद के लिए अपना रास्ता साफ रखना चाहता है। देश की जनता विपक्षी नेताओं के चाल चरित्र और सत्ता की लोलुपता को बड़े ढंग से देख रही है। जनता को पता है कि एक ओर प्रधानमंत्री मोदी जैसे ऊर्जावान और निस्वार्थ व्यक्ति है.

देश के विकास में श्रमिकों के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता: श्रम मंत्री

श्रम मंत्री देवांगन ने बाल्को में किया शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न योजना का शुभारंभ, श्रमिकों के लिए शुरू हुई 5 रूपए में भरपेट भोजन की व्यवस्था

कोरबा। श्रम, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने कल कोरबा जिले के बाल्को में शहीद वीर नारायणसिंह श्रम अन्न योजना अंतर्गत निर्माण, संगठित एवं असंगठित वर्ग के श्रमिकों के लिए 05 रूपए में भरपेट भोजन की व्यवस्था हेतु दाल-भात केंद्र का शुभारंभ किया। उन्होंने स्वयं भी श्रमिकों को भोजन परोसने के साथ भोजन भी किए और श्रमिकों से अपील की कि वे इस दाल-भात केंद्र में भोजन अवश्य करें। श्रम मंत्री ने इस पहल को गरीब श्रमिकों के लिए लाभदायक बताते हुए श्रम विभाग अंतर्गत श्रमिकों और उनके परिवार के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि देश के विकास में श्रमिकों का बहुत बड़ा योगदान है। श्रमिकों ने सड़क, पुल-पुलिया, महल सहित अन्य बड़े-बड़े कार्य किए हैं। उद्योग मंत्री होने के नाते उनकी भी कोशिश है कि प्रदेश में ज्यादा से

ज्यादा उद्योग स्थापित हों और छत्तीसगढ़ के युवाओं को रोजगार मिले।

दाल-भात केंद्र का शुभारंभ करते हुए मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि इस योजना को प्रारंभ करने के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने तत्काल सहमति दी और आज उनके प्रयास से गरीब मजदूरों को किफायती दर में भरपेट भोजन उपलब्ध होगा। श्रम मंत्री ने बताया कि उन्होंने भी गरीबी को बहुत ही करीब से देखा है। इसलिए वे श्रमिकों क ी आवश्यकताओं को भलीभांति जान और समझ सकते हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में 21 स्थानों पर दाल-भात केंद्र प्रारंभ है। अन्य 22 स्थानों पर भी इसका संचालन किया जाएगा। कोरबा जिले में तीन स्थानों पर दाल-भात केंद्र का संचालन होगा। मंत्री श्री देवांगन ने कहा कि बहुत से श्रमिक भाई कार्य की वजह से हड़बड़ी में घर से खाना खाकर नहीं आ पाते। ऐसे में दाल-भात केंद्र के माध्यम से कम कीमत पर भोजन उनके लिए लाभदायक साबित होगा। मंत्री श्री देवांगन ने श्रमिकों को बताया कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय गरीबों और श्रमिकों के कल्याण के लिए सोचते हैं। उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के लिए योजनाएं बनाई हैं। प्रदेश में महतारी वंदन योजना के माध्यम से सभी महिलाओं को साल के 12 हजार रूपए देने, किसानों को 3100 रूपए समर्थन मूल्य तथा तेंदूपत्ता संग्राहकों को 5500 रूपए मानक बोरा सहित अनेक योजनाओं के माध्यम से लाभान्वित करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रधानमंत्री द्वारा कोरोना काल में गरीबों को मुफ्त चांवल भी दिया गया ताकि गरीब भूखे पेट न सोए। इसी तरह प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना लागू की गई है। इनमें पंजीयन कराने वाले गरीब परिवारों को लोन देकर जीवन स्तर आगे बढ़ाने का काम किया जा रहा है। श्रम मंत्री ने श्रम विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी श्रमिकों को दी और उनका लाभ उठाने की अपील भी की। कार्यक्रम में बाल्को के सीईओ श्री राजेश कुमार ने दाल-भात केंद्र का शुभारंभ किए जाने पर छत्तीसगढ़ सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह सरकार श्रमिकों के योगदान और उनके कल्याण के विषय में सोचती है। देश को विकास की राह में आगे बढ़ाने में श्रमिकों का बड़ा योगदान है। बाल्को में लगभग 14 हजार श्रमिक हैं, जो अपने परिश्रम की बदौलत एल्यूमिनियम के उत्पादन में सहयोग दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम सब मिलजुल कर इस योजना को अच्छे से चलाएंगे और सभी श्रमिकों को भोजन उपलब्ध कराएंगे। कार्यक्रम को नेता प्रतिपक्ष श्री हितानंद अग्रवाल ने भी संबोधित किया। इस दौरान पार्षद श्री लुकेश्वर चौहान, श्री नरेंद्र देवांगन, नर्मदा लहरे, ईश्वर साहू, नरेंद्र पाटनवार, प्रफुल्ल तिवारी, आकाश श्रीवास्तव सहित सहायक श्रम आयुक्त श्री राजेश आदिले, बाल्को के अवतार सिंह, प्रज्ञा पाण्डेय तथा श्रमिक संगठन के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रमिक उपस्थित थे।

श्रम मंत्री श्री लखनलाल देवांगन ने बाल्को में दाल-भात केंद्र का शुभारंभ करने के साथ भोजन की गुणवत्ता को परखने तथा श्रमिकों का उत्साह वर्धन करने उनके साथ भोजन किया। उन्होंने भोजन भी परोसे। श्रम मंत्री ने एक साथ भोजन कर रहे श्रमिकों से अपील की कि वे बेझिझक इस केंद्र में आएं और निस्संकोच भरपेट खाना खाएं। उन्होंने श्रमिकों से भूखापेट रहकर काम नहीं करने तथा अन्य मजदूर साथियों को भी इस योजना का लाभ लेने सहयोग करने की अपील की।

धमतरी के विंध्यवासिनी वार्ड में पाथवे निर्माण शुरू होते ही रुका काम

धमतरी। विंध्यवासिनी वार्ड में प्रदेश का सबसे प्रसिद्ध मां विंध्यवासिनी का मंदिर है। जहां दूर दूर से लोग दर्शन करने पहुंचते है। हर साल नवरात्रि के समय यहां भक्तों की भारी भीड़ पहुंचती है। इसी को देखते हुए वार्ड में पाथवे निर्माण बनाने का काम शुरू हुआ लेकिन लोगों की सुविधा के लिए बनाया जा रहा पाथवे मुसीबत बनता जा रहा है।

धमतरी नगर निगम ने विंध्यवासिनी वार्ड में सड़क किनारे पाथवे निर्माण की योजना बनाई। बाकायदा टेंडर जारी करके लगभग 38 लाख की लागत से पाथवे निर्माण का भूमि पूजन कराया गया। काम शुरू हुआ। गड्ढे खोद दिए गए, लेकिन कुछ ही दिनों बाद काम बंद हो गया। तब से दोबारा काम शुरू नहीं हुआ। जिससे खुदी सड़क और गड्ढों से लोगों को काफी मुसीबत झेलनी पड़ रही है। सड़क किनारे पूरी दुकानें है। पाथवे के लिए गड्ढा खोद देने से सड़क से दुकान तक आने वालों को परेशानी उठानी पड़ रही है।

दिनेश नामदेव ने कहा पाथवे बन रहा था। दो दिन काम हुआ। मेले के कारण काम रोके। फिर बोले कि काम रोक दिया गया है। काफी परेशानी हो रही है।

स्थानीय नागरिक मोहन तारक ने कहा गड्ढों के कारण ग्राहक दुकान में आने में परेशानी हो रही है। या तो गड्ढे भर देते या फिर बना देते, हमें बहुत परेशानी हो रही है।

पाथवे का काम रोक देने से दुकानदारों और आने वाले राहगीरों को परेशानी हो रही है। इधर पार्षद का दावा है कि किसी बड़े नेता के कहने पर काम रोका गया है।

पार्षद कमलेश सोनकर ने कहा 21 फरवरी 2024 को इसका भूमिपूजन हुआ। 38 लाख की लागत से विंध्यावासिनी मंदिर से राम बाग तक पाथवे का निर्माण किया जाना था। किसी बड़े नेता के शिकायत के आधार पर काम रोक दिया गया है। आयुक्त साहब से बात करने के बाद जानकारी लग पाएगी।

नगर निगम आयुक्त का कहना है कि सड़क पीडब्ल्यू विभाग की है। विभाग से बात करने के बाद आगे का काम शुरू होगा। ऐसे में लोग सवाल उठा रहे हैं कि निगम ने बिना पीडब्ल्यूडी के सहमति के पाथवे का काम शुरू कर दिया है।

नगर निगम आयुक्त विनय पोयाम ने कहा सड़क पीडब्ल्यूडी की है। पीडब्ल्यूडी विभाग से इस संबंध में चर्चा की जाएगी। उसके बाद रोड का काम चालू होगा।

निगम आयुक्त जल्द पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों से बात कर काम शुरू करवाने की बात कह रहे हैं। आने वाले कुछ दिनों में नवरात्र शुरू हो जाएगा। ऐसे में दूर दूर से भक्त विंध्यवासिनी मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचेंगे। पाथवे का काम अधूरा रहने से मुसीबत और बढ़ सकती है।

केनापारा पर्यटन स्थल बदहाली का शिकार लोकार्पण से पहले मोटल्स बर्बादी की कगार पर

सूरजपुर। छत्तीसगढ़ में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। एसईसीएल क्षेत्र में बंद पड़ी खदानों को पिछली सरकार ने पर्यटन स्थल के तौर पर विकसित किया। इसमें करोड़ों रुपए खर्च किए गए लेकिन देखरेख के अभाव में अब पर्यटन स्थल खंडहर में बदल रहे हैं।ताजा मामला सूरजपुर के एसईसीएल क्षेत्र का है।जहां के केनापारा खदान को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया।इस जगह की प्राकृतिक सुंदरता ऐसी है कि जो भी यहां एक बार आए तो उसका मन यहां से जाने का नहीं करता।यही वजह थी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत पूर्व सीएम भूपेश बघेल भी कर चुके हैं। तत्कालीन कलेक्टर के।सी देवसेनापति ने इस जगह को डेपलेप करवाया था।

केनापारा के खुली खदान को डल लेक की तर्ज पर विकसित किया गया।तालाब में वोटिंग से साथ फ्लोटिंग रेस्टोरेंट खोला गया।केनापारा के कायाकल्प के कारण इस जगह पर सैलानियों की भीड़ जुटने लगी।लोग शाम ढलते ही इस जगह पर आते और रेस्टोरेंट में ठंडी हवाओं के झोंकों के साथ गरम चाय का आनंद लेते।आधी रात कर केनापारा में सैलानियों का मेला लगा रहता। केनापारा के सरोवर को नया लुक देने के साथ आसपास मोटल्स का निर्माण किया गया।मकसद ये था कि सैलानी इस जगह पर रूकें।लेकिन प्रशासनिक अनदेखी के कारण करोड़ों की लागत से बने मोटल्स अब खंडहर बनते जा रहे हैं।

मीडिया ने केनापारा पर्यटन स्थल का दौरा किया। जो तस्वीरें कैमरे में कैद हुई वो चौकाने वाली थी।हमारी टीम ने पाया कि केनापारा के आसपास जिन मोटल्स का निर्माण हुआ,उनके ताले तक नहीं खुले हैं। बिना लोगों की सेवा

किए ही ये मोटल्स खंडहर में तब्दील हो गए हैं।मोटल्स को रात्रि विश्राम के लिए बनाया गया था।लेकिन अब दो मिनट भी इन मोटल्स में कोई ठहर नहीं सकता।

इन मोटल्स में सैलानी तो नहीं ठहरे लेकिन चोरों ने अपनी नजर जरुर गड़ा दी।चोर बेखौफ होकर मोटल्स को अपना निशाना बनाने लगे।जितने भी कीमती समान साज सज्जा के लिए लगाए गए थे वो चोरों अपने साथ ले गए।ना तो पुलिस में इसकी कंप्लेन हुई और ना ही प्रशासन ने इस ओर ध्यान दिया। साफ सफाई ना होने से ये मोटल्स कबाड़खाने से ज्यादा कुछ नहीं है।

केनापारा पर्यटन स्थल के मोटल्स को जब बनाया गया था तो हर कोई इनकी तारीफ करते नहीं थकता था।लेकिन आज यदि कोई इस जगह का दौरा कर ले तो शायद ही कभी वापस लौटेगा। जिला कलेक्टर से जब इस बारे में बात की गई तो उन्होंने इस बारे में कदम उठाने का आश्वासन दिया है। कलेक्टर रोहित व्यास ने कहा पर्यटक विभाग को पत्र लिखकर जिले में स्थित पर्यटक क्षेत्रों को सूचीबद्ध करने के लिए कहा गया है।मोटल्स के रखरखाव के लिए योजना बनाई जा रही है।जरुरत पड़ी तो प्राइवेट वेंडर्स को इसमें शामिल करेंगे।ताकि मोटल्स अच्छे से चल सके।

पटवारियों ने समस्याओं को लेकर सौंपा ज्ञापन

बिना भवन-फर्नीचर के चल रहा काम

कबीरधाम। कबीरधाम जिले के पटवारियों ने अपनी समस्या को लेकर ज्ञापन सौंपा है। जिला अध्यक्ष पालेश्वर सिंह ने बताया कि जिले के पटवारियों को अभिलेखों का सत्यापन किये जाने हेतु टोकन दिया गया है, जिसकी वैधता समाप्ति की ओर है। अत: शासन प्रशासन के द्वारा पटवारियों के टोकन का नवीनीकरण किया जाए ताकि किसानों के अभिलेखों का सत्यापन करने में असुविधा न हो।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत फसल कटाई प्रयोग करने का प्रावधान है, जिसके लिए 2016-17 में मोबाइल भत्ता 10000 रुपये तीन किश्तों में तीन वर्ष के लिए दिए जाने का प्रावधान किया गया था, तीन किश्त में सिर्फ दो ही किश्त मिल पाई हैं। उसके बाद नियुक्त हुए पटवारियों को एक भी किश्त तक नहीं दी।

तीन वर्ष बीत जाने के बाद भी नवीनीकरण हेतु कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कबीरधाम जिले में 220 पटवारी हल्के है, इन हल्कों में पटवारियों का मुख्यालय निर्धारित किया गया है। जिले में सिर्फ 60 हल्कों में ही मुख्यालय कार्यालय भवन का निर्माण करवाया गया था। जिसमें अधिकांश आज की स्थिति में जर्जर अवस्था में हैं।

मुख्यालय में भवन निर्माण के साथ-साथ आवश्यक फर्नीचर और सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मांग की है। इस संबंध में उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा को भी अवगत कराया जा चुका है। जिला सचिव प्रवीण चंद्रवंशी ने बताया कि कुल छह मांगो को लेकर ज्ञापन सौंपा गया है। मोबाइल भत्ता, पटवारियों का परिवीक्षा अवधि समाप्त कर स्थायीकरण किया जाना, मुख्यालय में कार्यालय भवन, पटवारियों का गोपनीय प्रतिवेदन, वर्ष 2016 के पटवारियों के नियुक्ति तिथि को सुधार करने की मांग शामिल है।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

डोंगरगढ़ स्टेशन में भी अब रुकेगा वन्दे भारत एक्सप्रेस

बिलासपुर। रेलवे ने बिलासपुर-नागपुर-बिलासपुर 20825/20826 वन्दे भारत एक्सप्रेस का डोंगरगढ़ स्टेशन में ठहराव शुरू करने की घोषणा की थी और यह सुविधा 6 मार्च से शुरू हो रही है। नागपुर से चलने वाली ट्रेन 6 मार्च से तथा बिलासपुर से चलने वाली ट्रेन 7 मार्च से डोंगरगढ़ में एक-एक मिनट के लिए रुकेगी। बिलासपुर से निकलकर यह ट्रेन सुबह 9.21 बजे पहुंचकर 9.22 बजे छूटेगी। नागपुर से छूटने वाली ट्रेन शाम 16.29 बजे डोंगरगढ़ पहुंचकर 16.30 बजे रवाना होगी। फिलहाल यह ठहराव 6 माह के लिए प्रायोगिक तौर पर दिया गया है।

अमर अग्रवाल गिरफ्तार भाजपा नेता पर चलाई थी गोली

रायगढ़। जमीन विवाद पर भाजपा नेता को गोली मारने वाले आप नेता अमर अग्रवाल को रायगढ़ पुलिस ने महज 10 घंटे के भीतर गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई है। पुलिस ने दिल्ली भागने की जुगत में आरोपी को रायपुर एयरपोर्ट में धर दबोचा। इधर घायल भाजपा नेता गोपाल गिरी का रायगढ़ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में उपचार जारी है, जहां उसकी स्थिति स्थिर बताई गई है। बता दें कि सोमवार को जमीन विवाद पर खरसिया में आप नेता अमर अग्रवाल के भाजपा नेता गोपाल गिरी को गोली मारे जाने की खबर से सनसनी मच गई थी। घायल गोपाल गिरी को खरसिया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद स्थिति को देखते हुए रायगढ़ मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया था। इस मामले में पुलिस ने अपराध क्रमांक 134/24 धारा 294, 307, 506 आईपीसी, 25, 27 आर्म्स एक्ट पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया। मामले में विशेष टीम गठित कर आरोपी की पतासाजी प्रारंभ किया गया। जांच में मालूम हुआ कि आरोपी दिल्ली भागने के फिराक में था।

अधिकारियों के ऑफिस में एजेंटों का कब्जा

सारंगढ़-बिलाईगढ़। उप पंजीयक सारंगढ़ कार्यालय में अधिकारी से सांठगांठ कर अनाधिकृत लोगों ने कब्जा जमा रखा है। जहां प्रत्येक रजिस्ट्री में मेनेजमेंट के नाम से 5 से 6 हजार रुपये अतिरिक्त लिया जा रहा है। अधिकारी का खुला संरक्षण मिलने के कारण एजेंट बेखौफ़ चेंबर में चढ़कर कार्य कर रहे और सुबह से पहुंचे किसान अपनी पारी का इंतजार करते रहे है। बता दें कि उप पंजीयक कार्यालय में बिना एजेंट के कुछ भी नहीं हो रहा है। बकायदा कार्यालय में काम कराने के लिए कच्ची रेट लिस्ट तैयार कर काम कराने पहुंचे लोगों को दिया जा रहा। शिकायत के बावजूद जिम्मेदार संज्ञान नहीं ले रहे हैं। जिसके चलते किसानों और खरीदी-बिक्री करने वालों को रजिस्ट्री के लिए भारी रकम चुकाना पड़ रहा है। बहरहाल कलेक्टर ने मामले की जांच का आश्वासन दिया है।

सरगुजा से कांग्रेस शशि सिंह को बना सकती है उम्मीदवार

बलरामपुर। लोकसभा चुनाव से पहले चुनावी सरगर्मियां तेज हो चुकी है। बीजेपी ने सरगुजा लोकसभा सीट से चिंतामणि महाराज को प्रत्याशी बनाया है जबकि कांग्रेस ने अपने पत्ते नहीं खोले हैं। युवा कांग्रेस की राष्ट्रीय सचिव और जिला पंचायत सदस्य शशि सिंह अपनी मजबूत दावेदारी पेश कर रही है। शशि का कहना है कि कांग्रेस उन्हें जरूर टिकट देगी। युवा कांग्रेस की राष्ट्रीय सचिव और जिला पंचायत सदस्य शशि सिंह प्रदेश के कद्दावर आदिवासी नेता व पूर्व मंत्री तुलेश्वर सिंह की बेटी है। शशि सिंह इन दिनों सरगुजा संभाग में काफी सक्रिय हैं और सरगुजा लोकसभा क्षेत्र का भ्रमण कर कार्यकर्ताओं से भेंट मुलाकात करने के साथ फीडबैक भी ले रही हैं। रामानुजगंज में कांग्रेस कार्यकर्ताओं से भेंट मुलाकात करने पहुंची शशि सिंह ने कहा कि कांग्रेस इस बार छत्तीसगढ़ में बेहतर प्रदर्शन करेगी। 11 लोकसभा सीटों में से 8 पर कांग्रेस की जीत का दावा शशि ने किया है। शशि का कहना है कि चुनाव में बीजेपी के खिलाफ हजारों मुद्दे हैं। इन्हीं मुद्दों को लेकर कांग्रेस जनता के बीच जाएगी।

आस्था गुरुकुल में नए स्कूल भवन का निर्माण कार्य प्रारंभ

दंतेवाड़ा। दंतेवाड़ा जिले में दूरस्थ अंचलों के नक्सली अहिंसा से पीड़ित अनाथ बच्चों के लिए जिला प्रशासन की अनोखी पहल आस्था गुरुकुल आवासीय विद्यालय, इस विद्यालय की स्थापना 2007-08 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से नक्सल पीड़ित परिवारों के बच्चों के लिए स्थापित किया गया है। यह विद्यालय दंतेवाड़ा जिले में शैक्षणिक संस्थानों में से एक है। आस्था गुरुकुल विद्यालय में वर्तमान में संचालित पहली से लेकर आठवीं क्लास तक संचालित थी। आस्था गुरुकुल आवासीय विद्यालय में बीते दिनो कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी द्वारा उक्त विद्यालय का निरीक्षण किया गया। इस दरमियान विद्यालय के अधीक्षक और बच्चों द्वारा विभिन्न समस्याओं से कलेक्टर को अवगत कराया गया। उन्होंने बच्चों और अधीक्षक की मांग पर त्वरित कार्रवाई करते हुए नए स्कूल भवन का निर्माण कार्य आस्था गुरुकुल विद्यालय दंतेवाड़ा में प्रारंभ करने का भी निर्देश संबंधित को दिए गए। जिससे आने वाले सत्र में बच्चों के लिए 9 वीं से 10 वीं तक कक्षाएं संचालित करने के निर्देश भी दिए।

मरम्मत का बाट जोह रहा ब्रुक्स स्कूल, पूर्व छात्रों ने जीर्णोद्धार का उठाया बीड़ा

मुंगेली। मुंगेली के जरहागांव (मोतिमपुर) स्थित ब्रुक्स उच्चतर माध्यमिक शाला अविभाजित मध्यप्रदेश के समय का बिलासपुर जिले का एक ऐसा स्कूल है, जो उस समय अपनी पढ़ाई, अनुशासन के नाम से न सिर्फ जिला बल्कि पूरे प्रदेश में जाना जाता था। यहां वर्तमान विधायक पुन्नूलाल मोहले, पूर्व सांसद लखन लाल साहू, वर्तमान डिप्टी सीएम के पिता अभय राम, वैज्ञानिक, इंजीनियर, पुलिस, टीचर, अधिवक्ता समेत अन्य अधिकारी-कर्मचारियों ने शिक्षा ग्रहण ग्रहण कर अपनी तकदीर संवारी है, लेकिन आज यह स्कूल संसाधनों के अभाव में मरम्मत का बाट जोह रहा है। यही वजह है अब यहां के पूर्व छात्रों ने इस स्कूल को संवारने के लिए मुहिम चलाया है।

दरअसल बीते दिनों स्कूल प्रबंधन ने पूर्व छात्रों का स्नेह सम्मेलन कार्यक्रम रखा,

जिसमें स्कूल की विभिन्न जरूरत व मांगों को पूर्व छात्रों के समक्ष रखा गया। इस पर स्वस्फूर्त पूर्व छात्रों ने एक स्वर में स्वेच्छानुरूप आर्थिक सहयोग देने की बात कहते हुए स्कूल के जीर्णोद्धार के लिए अभियान चलाने का फैसला लिया। जानकारी के मुताबिक बड़ी संख्या में पूर्व छात्र इस अभियान में शामिल होकर अंशदान दे चुके हैं और लगातार लोग इस अभियान से जुड़ते जा रहे हैं। स्कूल की मरम्मत, रखरखाव व जरूरी संसाधन के लिए भारी भरकम बजट की जरूरत है। यही वजह है कि स्कूल प्रबंधन ने क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों एवं शासन से भी मदद की गुहार लगाई है।

वर्तमान स्कूल प्राचार्य अनवीता लाल ने बताया कि इस स्कूल का संचालन छत्तीसगढ़ डायसिस बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन द्वारा संचालित हो रहा। इसका मुख्यालय रायपुर है। इसके अंतर्गत शाला प्रबंध समिति है। इस विद्यालय के संचालन एवं रख रखाव के लिए शासन से कोई धन राशि नहीं दी जाती है। केवल कर्मचारियों का वेतन अनुदान के रूप में दिया जाता है। इस कारण स्कूल संचालन में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

शाला भवन रिपेयरिंग, नदी पर पुल निर्माण, शाला पहुँच मार्ग, बांउड्रीवॉल निर्माण, स्कूल में फर्नीचर, खेल, प्रैक्टिकल, कम्प्यूटर कक्ष एवं कम्प्यूटर सामग्री, लाइब्रेरी, शौचालय निर्माण, अतिरिक्त शिक्षक की व्यवस्था, छात्राओं के लिए छात्रा कक्ष, सांस्कृतिक मंच एवं भवन जैसी कई तरह की समस्या है। इन संसाधनों का अभाव है, जिसके लिए पूर्व छात्रों ने मुहिम की शुरुआत की है।

1962 में शासन ने इस स्कूल को मान्यता दी। कृषि में बागवानी के साथ सामान्य अंग्रेजी व सामान्य हिंदी की शिक्षा दी जाती थी। शाला पूर्व माध्यमिक शिक्षा के नाम से बिलासपुर में एक मात्र अनुदान प्राप्त संस्था थी। 1959 से 1976 तक कृषि विषय पढ़ाये जाते थे। 32 गांव के लोग पढ़ने आते थे। 1976 से कृषि संकाय बन्द कर दिया गया। 1976 से 2018 तक कला, विज्ञान, गणित, बायलॉजी पढाया जाता रहा है। 2020 में जब प्रबंधक वर्ग ने आई आर सोना को मैनेजर नियुक्त किया तक कृषि विषय की मान्यता प्राप्त कर कृषि विषय पुन: कला, विज्ञान, गणित व बायलॉजी के अतिरिक्त विषय पढ़ाये जा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में है दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग

गरियाबंद। दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग गरियाबंद जिले में स्थित है। भगवान भोलेनाथ की महिमा ऐसी है कि यह शिवलिंग हर साल अपने आप बढ़ रहा है। इस शिवलिंग की ऊंचाई लगभग 70 फीट है, जो दुनियाभर में चर्चित है। यहां सावन और महाशिवरात्रि में सबसे ज्यादा भक्तों की भीड़ देखने को मिलती है।

भूतेश्वर महादेव एक अर्धनारीश्वर प्राकृतिक शिवलिंग है। यहां भूतेश्वर नाथ महादेव को भकुर्रा महादेव के नाम से भी जाना जाता है। छत्तीसगढ़ की भाषा मे हुंकारना (आवाज़ देना) की ध्वनि को भकुर्रा कहा जाता है इसलिए भूतेश्वर महादेव को भकुर्रा महादेव के नाम से भी पुकारा जाता है। इस शिवलिंग में हल्की सी दरार भी है, इसलिए इसे अर्धनारीश्वर के रूप मे पूजा जाता है। इस शिवलिंग का बढ़ता हुआ आकार आज भी शोध का विषय बना हुआ है। भूतेश्वर नाथ महादेव का इतिहास भूतेश्वर महादेव शिवलिंग स्वयं-भू शिवलिंग है, क्योंकि इस शिवलिंग की उत्पत्ति व स्थापना के विषय में आज तक कोई सटीक तर्क नहीं मिल सका है, परंतु जानकारों व पूर्वजों के अनुसार कहा जाता है कि इस मंदिर की खोज लगभग 30 वर्ष पहले हुई थी, जब यहां चारों तरफ घने जंगल थे। इन घने जंगलों के बीच मौजूद एक छोटे से टीले से आसपास के गांव वालों को किसी बैल के हुंकारने की आवाज सुनाई देती थी, परंतु जब ग्रामीणों ने जाकर देखा तो वहां न कोई बैल था और न कोई अन्य जानवर। ऐसी स्थिति को देख धीरे-धीरे ग्रामीणों की आस्था उस टीले के प्रति बढ़ती गई और उन्होंने उसे शिव का स्वरूप मानकर पूजा-अर्चना आरंभ कर दिया। तभी से वह छोटा सा शिवलिंग बढ़ते-बढ़ते विशालकाय शिवलिंग का रूप ले चुका है। अब इसे भक्तों की आस्था कहे या भगवान का चमत्कार, तब से लेकर अब तक शिवलिंग का बढ़ना जारी है। मंदिर में शिव परिवार विराजमान है। भूतेश्वर नाथ महादेव के पीछे भगवान शिव की प्रतिमा स्थित है, जिसमें भगवान शिव, माता पार्वती, भगवान गणेश, भगवान कार्तिक, नंदी जी के साथ विराजमान हैं।

शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में 93 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक, 43 छात्रों को दी गई पीएचडी की डिग्री

बस्तर के विकास में अहम भूमिका निभाएंगे विवि के विद्यार्थी : मुख्यमंत्री साय

जगदलपुर। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय का चतुर्थ दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते राज्यपाल एवं कुलाधिपति विश्वभूषण हरिचंदन ने कहा कि उच्च शिक्षा वास्तव में युवाओं के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए उन्नत ज्ञान, कौशल और अवसर प्रदान करता है। उच्च शिक्षा के माध्यम से युवा गंभीर सोच क्षमताओं, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों को प्राप्त करते हैं, जो उन्हें जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। यह बेहतर करियर संभावनाओं के द्वार खोलता है, आर्थिक विकास में योगदान देता है और अपने समुदायों में सशक्त नेताओं और सक्रिय नागरिकों को तैयार करता है। एक साक्षर युवा किसी भी समाज, राज्य या देश के भविष्य का प्रतिनिधित्व करता है।

बस्तर जैसे क्षेत्रों में छत्तीसगढ़ सरकार विशेष रूप से युवाओं से अपेक्षा करती है कि वे शांति, सद्भाव और प्रगति के मूल्यों को बनाए रखते हुए अपने समुदायों के सामाजिक- आर्थिक विकास में सक्रिय रूप से भाग लें। विशेष रूप से, उन्हें रोजगार क्षमता बढ़ाने और क्षेत्रीय विकास में योगदान देने के लिए शिक्षा और कौशल विकास पहल में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

राज्यपाल हरिचंदन ने समारोह का हिस्सा बनकर हर्ष व्यक्त कर उपाधि और स्वर्ण पदक प्राप्त किए छात्रों और शोधकर्ताओं को हार्दिक बधाई देते हुए शुभकामनाएं दी। साथ ही छात्रों के माता-पिता, गुरुओं और मित्रों की भी सराहना की, जिनके समर्थन से स्नातकों की सफलता हासिल की। राज्यपाल और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के द्वारा दीक्षांत समारोह में 93 छात्रों को गोल्ड मेडल, 43 छात्रों को पीएचडी और एक मानद उपाधि प्रदान की गई।

राज्यपाल ने अपने संबोधन में कहा कि सत्र 2021-22 और 2022-23 को मिलाकर 76 फीसदी स्वर्ण पदक युवतियों को मिले हैं। इसी प्रकार महिला शोधकर्ताओं की संख्या पुरुष समकक्ष से अधिक है। आज आपकी उपलब्धियाँ महिलाओं की उल्लेखनीय क्षमताओं का एक शानदार प्रमाण हैं। पदक प्राप्तकर्ताओं में आदिवासी और पिछड़े वर्गों की महिलाओं का शामिल होना भी उतना ही उत्साहजनक है, जो हमारे शैक्षणिक समुदाय की विविधता और समावेशिता को रेखांकित करता है।

बस्तर समृद्ध, प्राकृतिक प्रचुरता से समृद्ध और जीवंत सांस्कृतिक परंपराओं से समृद्ध भूमि हैं। बस्तर की कहानी सहस्राब्दियों से बुनी गई एक टेपेस्ट्री है, जो प्राचीन सभ्यताओं और मध्ययुगीन साम्राज्यों के नक्शेकदम पर चलती है। प्रकृति ने बस्तर को अप्रतिम सौंदर्य का उपहार दिया है। इसके हरे-भरे जंगल, बहती नदियाँ और खनिज युक्त मिट्टी इसकी पारिस्थितिक समृद्धि का प्रमाण हैं। बस्तर के आकर्षण के केंद्र में इसकी जीवंत सांस्कृतिक पच्चीकारी निहित है। गोंड, माड़िया और मुरिया जैसी जनजातियों ने अद्वितीय भाषाओं, रीति-रिवाजों और कला रूपों का पोषण किया है। बस्तर आधुनिकता को अपनाते हुए सतत विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और समावेशी विकास को बढ़ावा देने की पहल की जा रही है।

युवाओं के बीच उद्यमशीलता की गतिविधियां क्षेत्र

के भीतर नवाचार, रोजगार सृजन और आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित कर सकती हैं। दूरदर्शी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को अमृत काल थीम के साथ मना रहा है, युवाओं की भूमिका, जिसे अक्सर अमृत पीढ़ी कहा जाता है, देश के विकास पथ को आकार देने में महत्वपूर्ण है। युवा भारत को समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने के लिए आवश्यक उत्साह, नवीनता और गतिशीलता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

देश के विकास में अमृत बिरुवा की भूमिका पारंपरिक सीमाओं से परे तक फैली हुई है। आधुनिक उपकरणों, प्लेटफार्मों और संसाधनों तक पहुंच के साथ, आज के युवाओं के पास गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य देखभाल जैसी गंभीर चुनौतियों से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार का उपयोग करने की क्षमता है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपके विश्वविद्यालय को केंद्रीय परियोजना मेरु के तहत 100 करोड़ रुपये के अनुदान की स्वीकृति मिली है, जिससे विश्वविद्यालय में सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी, जिनमे कई विभागों का संचालन भी शामिल है।

इसके अलावा, मुझे दूरदर्शी कार्यक्रम विकसित भारत में शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के छात्रों की सक्रिय भागीदारी के बारे में जानकर बेहद खुशी हुई। यह पहल सिर्फ कार्रवाई के बारे में नहीं है; यह 2047 तक पूर्ण विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अपने मजबूत विचारों और योगदान को साझा करने के लिए प्रत्येक युवा मस्तिष्क को खुला निमंत्रण देते हुए, एक पूरी पीढ़ी को शामिल करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। आइए हम सब मिलकर एक प्रगतिशील और समावेशी भारत के निर्माण की दिशा में प्रयास करना जारी रखें। ऐसा समाज जहां हर व्यक्ति की क्षमता का पोषण और महत्व किया जाता है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर समारोह में उपाधियों से सम्मानित किए विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि बस्तर अंचल में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय का बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय से 41 हजार 119 डिग्री प्रदान की जा चुकी है। विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर निकले सभी स्नातक एवं स्नाकोत्तर छात्र बस्तर के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे। उन्होंने इस समारोह में पिछले दो सत्रों में 93 स्वर्ण पदक प्राप्त युवाओं से भेंट की, जिसमें 71 महिलाएं शामिल हैं। हमारी सरकार की पहली प्राथमिकता बस्तर और सरगुजा के विकास को लेकर है जनजातीय क्षेत्र को भी विकास की दौड़ में आगे बढ़ाना है। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इन्हीं पिछड़े क्षेत्रों को आगे लाने के लिए अनेक योजनाएं प्रारंभ की हैं। विशेष पिछड़ी जनजातियों के विकास के लिए प्रधानमंत्री जनमन योजना आरंभ की गई है।

सीएम ने कहा कि बस्तर में बेटियां पढ़ रही हैं यह बहुत सुखद है। यहां शिक्षा को लेकर जिस तरह से परिवर्तन आया है, वह बहुत सुखद है। बस्तर में यह जो परिवर्तन आया है उसके पीछे इस विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों का बड़ा योगदान है। प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार ने संयुक्त रूप से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के मेरु योजना के अंतर्गत 100 करोड़ रुपए का अनुदान दिया है। इस अनुदान से बस्तर में उच्च शिक्षा के एक नये युग की शुरुआत होगी। आपको बहुत तेज गति से काम करने वाले कंप्यूटर लैब मिलेंगे। आपको पाठ्य सामग्री आनलाइन मिल सकेगी। जो नये शोध आपके विषय से संबंधित होंगे, वे विश्वविद्यालय में उपलब्ध होंगे। अभी सरकार ने 100 करोड़ रुपए का फंड विश्वविद्यालय को दिया है। रिसर्च में अथवा अन्य जरूरतों के संबंध में आगे राशि की कमी होगी तो हम अतिरिक्त राशि उपलब्ध कराएंगे। सीएम ने कहा कि हमारी सरकार विश्वविद्यालय को आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह प्रतिबद्धता हमारे बजट में भी दिखी है।सरकार ने इस साल से विश्वविद्यालय को 20 नये विभागों में 33 नये पाठ्यक्रम आरंभ करने की स्वीकृति प्रदान की। इन नये पाठ्यक्रमों में बहुत से पाठ्यक्रम ऐसे हैं जो उद्यम के इच्छुक युवाओं के लिए काफी उपयोगी हैं। बस्तर के उद्यमशील युवाओं को तैयार करने के लिए यह पाठ्यक्रम काफी उपयोगी होंगे।

संक्षिप्त समाचार

जीएसटी की टीम ने रायपुर रेलवे स्टेशन में मारा छापा

रायपुर। जीएसटी की टीम ने रायपुर रेलवे स्टेशन में छापा मारा है। सूत्रों के मुताबिक टीम ने पार्सल से जुड़े कई बॉक्स की जांच शुरू की है। अभी तक ये स्पष्ट नहीं हो सका है कि इस बॉक्स में क्या है। हालांकि इसकी जांच और सामान के बिल की जांच टीम कर रही है। बता दे कि चंद दिनों पहले ही रायपुर रेलवे स्टेशन में पार्सल से जुड़े दो एजेंट पर कार्रवाई की थी। कई बॉक्स जब्त कर जुर्माने की कार्रवाई की थी। जीएसटी की टीम जब पार्सल ऑफिस में पहुंची ही है तो ये कयास लगाए जा रहे है कि जीएसटी की टीम श्री राधास्वामी कारगो की भी जीएसटी चोरी की जांच करें। बता दें कि पार्सल ऑफिस में मौजूद ये कारगो कंपनी रेलवे से बुकिंग कर ग्राहक को देने वाली रसीद में जीएसटी में गोलमाल कर रहा है और अनाधिकृत तरीके से गाड़ियों की बुकिंग भी। हालांकि रेलवे के कमर्शियल विभाग ने बिना जुर्माना लगाए गाड़ियों की बुकिंग पर तो रोक लगा दी, लेकिन जीएसटी का खेल यहां अब भी जारी है, जिसका खुलासा टीम की जांच के बाद स्पष्ट होगा।

महादेव बेटिंग एप मामले में ईडी ने दो और आरोपियों को किया गिरफ्तार

रायपुर। ईडी ने महादेव बेटिंग एप मामले में दो और आरोपियों सूरज चोखानी व गिरीश तलरेजा को गिरफ्तार किया है। दोनों से पूछताछ जारी है। जांच में पता चला है कि कोलकाता से गिरफ्तार सूरज चोखानी सट्टेबाजी का पैसा शेयर बाजार में लगाता था। वहीं, भोपाल से गिरफ्तार गिरीश तलरेजा सट्टेबाजी की कमाई को एप के प्रमोटर शुभम सोनी के साथ मिलकर बैंक खातों के जरिये खपा रहा था। दोनों आरोपियों को अदालत ने मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत पूछताछ के लिए ईडी के रिमांड पर दिया है। ईडी के वकील सौरभ पांडे ने बताया कि पिछले दिनों गिरफ्तार नितीश दीवान से पूछताछ के आधार पर चोखानी व तलरेजा को बयान के लिए बुलाया गया था।

किरायेदार ने मकान मालकिन को उनके बच्चों को जान से मारने के धमकी दी

रायपुर। राजधानी रायपुर में पैसे के लिए एक किराएदार ने अपने ही माकन मालकिन को उनके बच्चों को जान से मारने के धमकी दी। आरोपी ने कॉल करके कहा कि अगर दोनों बच्चों की सलामती चाहते हो तो ढाई लाख रुपये देना होगा, नहीं तो जान से मार दूंगा। यह मामला गंज थाना क्षेत्र का है। मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। प्रार्थिया सीमा सिरके ने थाना गंज में रिपोर्ट दर्ज कराई। उसने रिपोर्ट में बताया कि वह पीली बिल्डिंग गली रायपुर में रहती है। दो मार्च को अपने बच्चों के साथ घर में सो रही थी, तब लगभग साढ़े 10 बजे रात को अज्ञात नंबर से कॉल आया। उन्होंने बताया कि फोन पर आरोपी ने डराते-धमकाते हुए बोला कि अपने दोनों बच्चों की सलामती चाहते हो तो ढाई लाख रुपये देना होगा। आरोपी ने दो मार्च को रात में वीआईपी रोड में पैसे लेकर आने को कहा। अगर पैसा लेकर नहीं आई तो दोनों बच्चों को मार डालुंगा कहते हुए धमकी दी। प्रार्थिया कि रिपोर्ट पर अज्ञात मोबाइल नंबर धारक के खिलाफ थाना गंज में अपराध क्रमांक 131/24 धारा 384 भादवि. का अपराध पंजीबद्ध किया गया।

हृदय रोग के ऑपरेशन के लिए अंजली ने जताया मुख्यमंत्री का आभार

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज बस्तर जिले के चित्रकोट महोत्सव में प्रदर्शनी हेतु लगाए गए स्टॉल निरीक्षण के दौरान नन्हीं बालिका कु. अंजली से मुलाकात कर स्वास्थ्य की जानकारी ली। कु. अंजली पहले हृदय रोग से पीड़ित थी। ऑपरेशन के बाद अब वह बिल्कुल स्वस्थ हैं। कु. अंजली ने हृदय के ऑपरेशन के लिए मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। गौरतलब है कि टकरागुड़ा निवासी छह वर्षीय कु. अंजली के हृदय का ऑपरेशन चिरायु योजना के तहत किया गया है।

रामलला दर्शन के लिए छत्तीसगढ़ से रवाना हुए 850 श्रद्धालु

■ सीएम साय ने आस्था स्पेशल ट्रेन को दिखाई हरी झंडी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के राम भक्तों को रामलला के दर्शन कराने छत्तीसगढ़ से अयोध्या के लिए आस्था स्पेशल ट्रेन रवाना हो गई है। आज मंगलवार को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने रायपुर रेलवे स्टेशन में ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया है।

इस मौके पर रेलवे स्टेशन जय श्री राम के नारों से गूंज उठा। ढोल नगाड़े बजाये गए। इस विशेष ट्रेन में रायपुर संभाग के सभी पांच जिलों के 850 श्रद्धालुओं रवाना किया गया है।

12 कोच वाली इस ट्रेन में एक बार में छत्तीसगढ़ के करीब 850 श्रद्धालु श्री रामलला के दर्शन करने अयोध्या जा सकेंगे। रामलला दर्शन योजना के तहत श्रद्धालुओं को पूरा पैकेज मिलेगा, जिसमें छत्तीसगढ़ से अयोध्या जाने, वहां रहने की व्यवस्था, मंदिर दर्शन, नाश्ते और खाने की भी व्यवस्था रहेगी। इस ट्रेन में टूर एस्कॉर्ट, सुरक्षा कर्मी और चिकित्सकों का दल भी मौजूद रहेगा। आने वाले समय में अयोध्या के साथ-साथ इस ट्रेन के माध्यम से काशी में भगवान विश्वनाथ के दर्शन और प्रयागराज तीर्थ भ्रमण की व्यवस्था भी की जाएगी।

रायपुर रेलवे स्टेशन में आस्था स्पेशल ट्रेन को रवाना करते समय सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित की गई। इसके साथ ही ढोल नगाड़े बजाये गए। ट्रेन में भजन कीर्तन करते ट्रेन रवाना हुई। रामलला दर्शन के लिए जाने वाली विशेष ट्रेन सुबह साढ़े 10 बजे रायपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 7 से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

इस मौके पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के साथ ही उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, मंत्री रामविचार नेताम, दयाल दास बघेल, विधायक मोती लाल साहू, अनुज शर्मा, राजेश मूणत समेत बीजेपी नेता और भारी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भानुप्रतापपुर से 1100 श्रद्धालु रवाना हुए अयोध्या धाम

भानुप्रतापपुर। मंगलवार को जिले से 1100 श्रद्धालु अयोध्या धाम के लिए रवाना हुए। इनमें अंतागढ़, कांकेर, नारायणपुर और भानुप्रतापुर विधानसभा क्षेत्र से करीब 660 श्रद्धालु शामिल हैं। ट्रेन सुबह 7 बजे भानुप्रतापपुर रेलवे स्टेशन से अयोध्या के लिए रवाना हुई जो बुधवार सुबह 10:30 बजे अयोध्या पहुंचेगी। जहां श्रद्धालु भगवान श्रीराम के दर्शन कर 8 मार्च को वापस भानुप्रतापपुर पहुंचेंगे। ट्रेन को रवाना करने के लिए कांकेर लोकसभा सांसद मोहन मंडावी, अंतागढ़ विधायक विक्रम उसेंडी, कांकेर विधायक आशाराम नेताम सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे। कांकेर लोकसभा के भाजपा प्रत्याशी भोजराज नाग भी इस दौरान मौजूद थे। कांकेर विधायक आशा राम नेताम ने बताया कि गांव-गांव से लोग अयोध्या जाने के लिए निकल रहे हैं। लोगो में जबरदस्त उत्साह है।तो वहीं भानुप्रतापपुर भाजपा मंडल अध्यक्ष नरोत्तम सिंह चौहान ने बताया कि यह मोदी की गारंटी के तहत लोगों को भगवान के दर्शन करवाए जा रहे हैं। मोदी ने कहा था कि जब छत्तीसगढ़ में हमारी भाजपा की सरकार बनेगी तो हम यहां के लोगों को अयोध्या में भगवान श्री राम के दर्शन करवाएंगे।

छत्तीसगढ़ का तुलसी शिवधाम रचेगा इतिहास

आज पारद शिवलिंग की होगी स्थापना

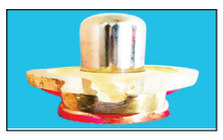

रायपुर। ग्राम तुलसी (पाटन) स्थित शिवधाम में महाशिवरात्रि पूर्व 6 मार्च को एक नया धर्म इतिहास रचा जाएगा। धर्म ग्रंथों में शिवलिंग के सभी प्रकारों में से चमत्कारी एवं सभी साधनाओं के लिए उत्तम पारद से निर्मित 108 किलोग्राम के शिवलिंग की यहां प्रतिष्ठा की जाएगी। पारा अत्यंत ही तरल पदार्थ है। इससे निर्मित शिवलिंग बहुत ही पवित्र व शक्तिशाली होता है। इसके दर्शन मात्र से नकारात्मक शक्तियों का नाश होकर सुख-समृद्धि के साथ ही सकारात्मक ताकतों का संचार होता है।

शिवधाम शोध एवं सेवा संस्थान, रायपुर की ओर से खारून नदी के तट पर विकसित शिवधाम तीर्थ क्षेत्र में पारद शिवलिंग प्रतिष्ठा समारोह 6 मार्च को पूर्वान्ह सवा दस बजे से रखा गया है। पवित्र और अद्भुत प्रतिष्ठा अनुष्ठान अघोर पीठ क्रीं कुण्ड, वाराणसी के पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम के करकमलों से होगा। इस अवसर पर अघोर गणेश, मां पार्वती एवं बाबा काल भैरव के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा भी की जाएगी। भव्य मंदिर में अघोरेश्वर भोलेनाथ का विशाल शिवलिंग प्राण प्रतिष्ठित भी होगी। इस मंदिर में ही भगवान अघोरेश्वर राम तथा मां काली (अघोरेश्वरी) प्रतिमा रूप में साक्षात विराजित हैं।

लोकसभा चुनाव से पहले रायपुर में 27 लाख की चांदी के जेवरात बरामद

रायपुर। रायपुर पुलिस ने चांदी तस्करों पर बड़ी कार्रवाई की है। मंदिरहसौद थाना इलाके से एक शख्स चांदी की खेप के साथ एक युवक को पकड़ा। आरोपी के पास से 35 किलो के चांदी के जेवरात बरामद किए गए हैं। इस जेवरात की कीमत 27 लाख रुपए बताई जा रही है। लोकसभा चुनाव को लेकर हो रही चेकिंग के दौरान रायपुर पुलिस को यह सफलता मिली है।

चांदी की खेप ले जा रहे आरोपी के पास सिल्वर की ज्वैलरी से जुड़े दस्तावेज नहीं थे। पुलिस ने जब 35 किलो की चांदी के कागजात मांगे तो वह उसे नहीं दिखा सका। जिसके बाद पुलिस ने आरोपी को पहले हिरासत में लेकर पूछताछ की और फिर चांदी को जब्त कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को छोड़ दिया है जब वह चांदी से जुड़े कागजात दिखाने में समक्ष होगा तब उसे जब्त की हुई चांदी मिलेगी। पुलिस आरोपी के खिलाफ वांछित धाराओं के तहत कार्रवाई कर रही है।

मंदिर हसौद थाना प्रभारी रोहित मालेकार ने कहा लोकसभा चुनाव के मद्देनजर रायपुर पुलिस वाहनों की चेकिंग कर रही है। इस कार्रवाई में सोमवार को पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी। देर रात को मंदिरहसौद टोल नाका के पास एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट और मंदिरहसौद पुलिस ने संयुक्त रूप से वाहन चेकिंग का काम किया। इस दौरान एक वाहन से चांदी के जेवरात बरामद किए गए।

छत्तीसगढ़ के सामने भी जलवायु परिवर्तन की चुनौती : साय

छत्तीसगढ़ क्लाइमेट चेंज कॉन्क्लेव, प्रकृति को बचाने के लिए सेमिनार

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और वनमंत्री केदार कश्यप दो दिवसीय छत्तीसगढ़ क्लाइमेट चेंज कॉन्क्लेव 2024 में शामिल हुए। इस दौरान मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ स्टेट एक्शन प्लान ऑन क्लाइमेट चेंज और बस्तर में ट्रेडिशनल हेल्थ प्रेक्टिसेस पर केंद्रित पुस्तक एन्शिएंट विसडम और बॉयोडायवर्सिटी इन कांगेर वैली पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर जलवायु परिवर्तन पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म भी दिखाई गई।

कॉन्क्लेव में सीएम विष्णुदेव साय ने कहा कि जलवायु परिवर्तन को वैश्विक समस्या माना। सीएम साय के मुताबिक जलवायु परिवर्तन के कारण कई चुनौतियों का सामना दुनिया को करना पड़ता है। इसके लिए सभी को मिलकर प्रकृति को बचाने और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करना होगा।

विष्णुदेव साय ने कहा हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। ज्यादा सुख-सुविधाओं की ओर बढ़ रहे है। जिससे असंतुलन की स्थिति बनती है, विसंगतियां आती हैं।वैश्विक समस्या के समाधान के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

इस दौरान वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप ने भी प्रकृति के संरक्षण पर जोर दिया। केदार कश्यप ने कहा कि हमें प्रकृति को बचाना होगा।ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रहे। हमारे देश की जनजातियां प्रकृति का महत्व अच्छे से समझती है।

कार्यशाला का आयोजन छत्तीसगढ़ स्टेट सेंटर फॉर क्लाइमेट चेंज और वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग ने फाउन्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी के तकनीकी के सहयोग से किया था। इस कॉन्क्लेव में 15 राज्यों और राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थानों के प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में सीएम और वनमंत्री के अलावा विधायक अनुज शर्मा, पद्मश्री फूलबासन यादव, पद्मश्री हेमचंद मांझी और पद्मश्री जागेश्वर यादव भी शामिल हुए।इनके अलावा वन विभाग के अपर मुख्य सचिव मनोज कुमार पिंगुआ, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख व्ही। श्रीनिवास राव समेत जनजाति समुदायों के प्रतिनिधि समेत वैद्यराज भी कार्यक्रम का हिस्सा बनें।

एसीबी की एफआईआर में चिंतामणि का नाम हटा, कांग्रेस ने उठाया सवाल

रायपुर। लोकसभा चुनाव से पहले छत्तीसगढ़ में एक बार फिर कोल स्कैम का मामला गरमाने लगा है। %कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में जाने के बाद चिंतामणी महराज का चिंता टल गया है।% भाजपा ने अब उन्हें लोकसभा के लिए टिकट भी दे दिया है। वहीं कोल स्कैम मामले को लेकर प्रदेश कांग्रेस ने सवाल उठाया। छत्तीसगढ़ कांग्रेस संचार के प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि जब चिंतामणी कांग्रेस में थे, तो कोल घोटाले का आरोप लगा। उन्हें भी आरोपी ठहराया गया था, लेकिन भाजपा में प्रवेश करते ही घोटले के सारे दाग धुल गया। उन्होंने मांग की है कि बाकी आरोपियों की तरह चिंतामणी महराज पर भी एफआइआर दर्ज हो।

प्रदेश कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में सुशील आनंद शुक्ला ने पत्रकार वार्ता में कहा कि कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार और कांग्रेस नेताओं को बदनाम करने के उद्देश्य से कांग्रेस की सरकार के दौरान ईडी ने अनेक कार्यवाहियां किया था। ईडी ने तथाकथित कोल घोटाला को लेकर तीन सालों तक जांच किया और जब कुछ हासिल नहीं कर पाई,

तो ईडी ने राज्य के एंटी करप्शन ब्यूरो को 11 जनवरी 2024 को पत्र लिखकर इस मामले में एफआईआर दर्ज करने को कहा।

उन्होंने आगे कहा कि इस पत्र में ईडी ने इस तथाकथित कोल घोटाले को लेकर विस्तृत ब्यौरा भी दिया। इसमें कुछ लोगों के नाम भी सौंपा जिनके खिलाफ एफआईआर दर्ज किये जाने को कहा गया था। इस पत्र में ईडी ने जिन लोगों के नाम सौंपा है, उनके सामने तथाकथित रूप से कितनी राशि प्राप्त हुई उसका उल्लेख भी किया है। इसी में 10वें क्रम पर ईडी ने तत्कालीन कांग्रेस के सामरी से विधायक चिंतामणी महराज के नाम का उल्लेख करते हुए पांच लाख रुपये लिए जाने का दावा किया है। ईडी ने उनके खिलाफ भी मुकदमा दर्ज करने को लिखा है।

कमल छाप का ताबीज पहनकर महराज ईमानदार हो गए

शुक्ला ने कहा कि ईडी ने इस पत्र के आधार पर एसीबी ने जो एफआईआर 17 जनवरी 2024 को दर्ज किया है, उसमें चिंतामणी महराज का नाम नहीं है। चिंतामणी महराज जो कांग्रेस के विधायक थे, अब भाजपा में शामिल होकर भाजपा से सरगुजा लोकसभा क्षेत्र के उम्मीदवार हैं। उन्होंने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि जैसे ही मोदी के वाशिंग मशीन में डाले गए उनके सारे पाप धुल गया। कमल छाप का ताबीज पहनकर वे ईमानदार हो गए। एक पत्र के आधार पर जब 3 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाता है, तो फिर चिंतामणी महराज का नाम एफआईआर से बाहर क्यों किया गया? इसीलिए कि वे भाजपा में शामिल हो गए हैं?

भाजपा में शामिल होने के बाद रोक दी जाती है कार्रवाई

उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि यह भाजपा का चरित्र है विपक्षी दलों के नेताओं के खिलाफ ईडी, आईटी, सीबीआई को आगे कर मुकदमा दर्ज किया जाता है, दबाव बनाया जाता है, जेल भेजा जाता है, लेकिन जैसे ही वह नेता भाजपा में शामिल हो जाता है उसके खिलाफ सारी कार्रवाई रोक दी जाती है। उन्होंने कहा कि अजीत पवार, हेमंत बिसवा सर्मा, नारायण राणे, रेड्डी बंधु, मुकुल राय, शुवेंदु अधिकारी, एकनाथ शिंदे, अशोक चौहान जैसे कई उदाहरण है।

चिंतामणी महराज बताए आरोप गलत या सही

शुक्ला ने आरोप लगाते हुए कहा कि ईडी और एसीबी की इस कार्रवाई से साफ हो रहा है कि यह तथाकथित कोल घोटाले का आरोप भाजपा का राजनैतिक षड़यंत्र है। भाजपा के इस राजनैतिक एजेंडे को ईडी के माध्यम से अमल किया गया। ईडी के माध्यम से विरोधियों को फंसाने का षड़यंत्र रचा गया है। अपने सुविधा और राजनैतिक षड़यंत्रों के आधार पर लोगों को बदनाम करने नाम जोड़े गए, काटे गए। उन्होंने कहा कि चिंतामणी महराज प्रदेश की जनता को बताए कि ईडी ने तथाकथित कोल स्केम में 5 लाख लेने का जो गंभीर आरोप लगा वह आरोप सही या गलत। उन्होंने सीएम पर सवाल उठाते हुए कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बताये कि ईडी के पत्र में चिंतामणी महराज के खिलाफ एसीबी को एफआईआर करने को लिखा है फिर किसके दबाव में एसीबी ने चिंतामणी का नाम हटाया।

अपने मुख्यमंत्रियों से भाजपा की अपेक्षाएं

प्रभु चावला

जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आठ सप्ताह की वोट यात्रा पर रवाना हो रहे हैं, तब भाजपा को अपने मुख्यमंत्रियों से अपेक्षा है कि वे प्रधानमंत्री की आभा का विस्तार करेंगे। पार्टी के लिए हर राज्य में मुख्यमंत्री दूसरे इंजन हैं, तो उनकी क्षमता का आकलन अंततः सीटों की संख्या से होगा। भाजपा के 12 में छह मुख्यमंत्री- गुजरात, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और असम के- पहली बार लोकसभा चुनाव में अपने राज्य का नेतृत्व करेंगे। महाराष्ट्र में भाजपा के सहयोगी एकनाथ शिंदे की अगुवाई में चुनावी लड़ाई होगी। इन सात राज्यों में 158 सीटें हैं, जिनमें से भाजपा और उसके सहयोगी शिव सेना ने 2019 में 142 सीटें जीती थीं। निस्संदेह, प्रधानमंत्री अपनी पार्टी के बजाय अपने व्यक्तित्व से गतिशील होकर तीसरे कार्यकाल के लिए प्रचार में हैं, फिर भी उनकी नजर क्षेत्रीय नेताओं और मुख्यमंत्रियों पर है, जिन्हें उन्होंने सीधे चुना है। वे अपने रोड शो और बड़ी सभाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और वोटों को लामबंद करने का जिम्मा राज्य इकाइयों को दिया गया है। मुख्यमंत्रियों का आकलन तीन आधारों पर होगा- प्रदर्शन, जुड़ाव और स्वीकार्यता। उनमें से अधिकतर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसकी छात्र इकाई विद्यार्थी परिषद से संबद्ध रहे हैं तथा उससे अपेक्षा है कि केंद्र और राज्यों में एक दशक के शासन के बाद वे फिर जनादेश हासिल करें। महाराष्ट्र, जहां 48 सीटें हैं, भाजपा नेताओं के ध्यान में सबसे ऊपर है। साल 2019 में वहां भाजपा को 23 और सहयोगी शिव सेना को 18 सीटें पहली बार मुख्यमंत्री बने देवेंद्र फड़नवीस के नेतृत्व में मिली थीं, जो अभी उपमुख्यमंत्री हैं। हालांकि वह प्रधानमंत्री के पक्ष में जनादेश था, पर स्थानीय नेतृत्व ने एक टीम के रूप में मिलकर चुनाव लड़ा था। अब राज्य की अगुवाई शिव सेना के विद्रोही नेता शिंदे के हाथ में है। स्वभाव से किसी को माफ नहीं करने वाले साठ वर्षीय शिंदे काडर प्रबंधन और जमीनी कार्यकर्ताओं के मामले में कमजोर माने जाते हैं। हालांकि भाजपा अपने प्रदर्शन को लेकर आश्वस्त है, पर शिंदे की शिव सेना सिरदर्द का कारण बनी हुई है। उसकी सीटों में कुछ भी कमी आने से दूसरे राज्यों से भरपाई के लिए भाजपा पर दबाव बढ़ जायेगा। मध्य प्रदेश भी 29 सीटों के साथ प्रधानमंत्री के भाजपा द्वारा 370 सीटें जीतने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अहम है। पिछली बार राज्य में कांग्रेस की सरकार होने के बावजूद भाजपा ने 28 सीटों पर जीत दर्ज की थी। पिछले साल दिसंबर में राज्य विधानसभा चुनाव में जीत के बाद मोदी ने अनुभवी शिवराज चौहान को हटाकर अपेक्षाकृत कम जाने जाने वाले मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाने का सोचा-समझा जोखिम उठाया। साफ छवि के सौम्य ओबीसी नेता को इसलिए नहीं चुना गया कि वे यादव हैं, बल्कि इसलिए चुना गया कि वे किसी गुट से जुड़े हुए नहीं थे। वे बिना किसी शोर-शराबे के दृढ़ संकल्प के साथ हिंदुत्व के एजेंडे को आगे बढ़ाने में जुटे रहते हैं। भाजपा के बड़े नेताओं के किनारे होने तथा कमजोर कांग्रेस को देखते हुए यादव को कोई खतरा नहीं है और वे मोदी के सम्मोहक आकर्षण को वोटों में बदलने के लिए अच्छी स्थिति में हैं। गुजरात एक ठोस केसरिया राज्य है, जहां 26 सीटें हैं। वहां भाजपा लगभग तीन दशक से सत्ता में है। जब विजय रुपानी मुख्यमंत्री थे, भाजपा को सभी सीटों पर जीत मिली थी। भूपिंदर पटेल 2021 से मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने बिना किसी विवाद के राज्य को संचालित किया है। गुजरात और मोदी एक दूसरे के लिए बने हैं। पटेल उस राज्य से एक भी सीट हारने का जोखिम नहीं उठा सकते, जिसने भारत को सबसे शक्तिशाली एवं लोकप्रिय प्रधानमंत्री दिया है। राजस्थान संभवतः भाजपा के लिए सबसे कमजोर राज्य है। साल 2019 में भाजपा ने अशोक गहलोत जैसे कद्दावर कांग्रेसी मुख्यमंत्री के होने के बावजूद 25 में से 24 सीटें जीती थी। अभी पहली बार विधायक बने भजन लाल शर्मा मुख्यमंत्री हैं। विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकर्ता शर्मा ने अभी तक कोई प्रशासनिक या राजनीतिक कौशल नहीं दिखाया है। हालांकि दो अनुभवी और अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय उपमुख्यमंत्रियों के होने के बावजूद शर्मा के सामने मजबूत कांग्रेस की बड़ी चुनौती है।

निर्वाचितों के भ्रष्टाचार पर फैसला

अजय सेतिया

सुप्रीमकोर्ट ने अपनी 26 साल पहले की गलती सुधार ली है। यह कांड 1993 में हुआ था, जब कांग्रेस के प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने अविश्वास मत में अपनी अल्पमत सरकार बचाने के लिए सांसदों को खरीदा था। राव के सिपहसालारों ने सांसद तो कई खरीदे थे लेकिन झारखंड मुक्ति मोर्चा के चार सांसद शिबू सोरेन, शलेन्द्र महतो, सूरज मंडल, साइमन मरांडी 55 -55 लाख रूपए लेने के सबूत के साथ पकड़े गए थे। उन्होंने रिश्वत में मिले रुपए अपने बैंक खातों में जमा करवा दिए थे। कुछ दिन बाद विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद भवन के भीतर ही एक प्रेस कांफ्रेंस करके सांसदों की खरीद फरोख्त का खुलासा किया था।

रिश्वत का धन क्योंकि चारों सांसदों ने एक ही दिन बैंक खातों में जमा किया था, इसलिए कोई मुकर भी नहीं सकता था। चारों सांसद उन रुपयों का कोई हिसाब नहीं दे पाए थे। मामला सुप्रीमकोर्ट में गया, उन चारों ही सांसदों ने भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत मुकदमे की सुनवाई के दौरान स्वीकार किया था कि 1993 में उन्हें विश्वासमत के पक्ष में मत देने के लिए कांग्रेस पार्टी ने धन दिया था। इसके बावजूद सुप्रीमकोर्ट की पांच जजों की बेंच ने बहुमत के आधार पर संविधान के अनुच्छेद 105(2) में सांसदों को मिले विशेषाधिकार का हवाला देकर मुकद्दमे को ही रद्द कर दिया था। यह फैसला नरसिम्हा राव के प्रधानमंत्री पद से हटने के दो साल बाद आया था। इस दौरान तीन सरकारें बदल चुकी थीं।

हालांकि इतनी देर बाद आए फैसले का कोई ज्यादा मतलब भी नहीं रह गया था, इसके बावजूद सारा देश यह मान कर चल रहा था कि रिश्वत के पुख्ता सबूतों के कारण कोई बच नहीं सकता। यहाँ तक कि नरसिम्हा राव के सरकारी आवास को जेल में बदलने की तैयारियां भी शुरू हो गई थीं, लेकिन पांच जजों की बेंच ने अनुच्छेद 105(2) को आधार बना कर सभी आरोपियों को बरी कर दिया। पांच सदस्यीय बेंच के तीन जज इस अनुच्छेद के तहत सांसदों को मिलने वाली विशेषाधिकार की छूट से सहमत थे, लेकिन दो जज सहमत नहीं थे। यह अनुच्छेद सांसदों को संसद के भीतर किए गए किसी भी भाषण या मतदान पर क़ानून के दायरे से बाहर करता है। इसी तरह का एक प्रावधान अनुच्छेद 194 (2) में भी है, जो विधायकों को भी इसी तरह का विशेषाधिकार देता है।

यह एक अद्भुत फैसला था, रिश्वत संसद के भीतर नहीं दी गई थी, रिश्वत संसद के बाहर दी गई थी। भ्रष्टाचार निरोधक क़ानून के अंतर्गत वह एक अपराध था, लेकिन अगर संविधान का अनुच्छेद सजा देने में आड़े आ रहा था, तो उसी समय अनुच्छेद 105 (2) की समीक्षा की जानी चाहिए थी। अब 26 साल बाद उसी सुप्रीमकोर्ट ने 1998 का अपना फैसला पलटते हुए कहा है कि इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि घूस लेने वाले ने घूस देने वाले के मुताबिक वोट दिया या नहीं। अनुच्छेद 105 (2) या अनुच्छेद 194 (2) में मिला विशेषाधिकार सदन के साझा कामकाज से जुड़े विषय के लिए है, वोट के लिए रिश्वत लेना विधायी काम का हिस्सा नहीं है।

अब 26 साल बाद जाकर सुप्रीमकोर्ट की सात सदस्यीय बेंच ने सर्वसम्मति से माना कि सांसदों और विधायकों को घूस लेने की छूट नहीं दी जा सकती है, यह विशेषाधिकार के तहत नहीं आता है। चीफ जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़, जस्टिस ए एस बोपन्ना, एम एम सुंदरेश, पी एस नरसिम्हा, जेबी पारदीवाला, संजय कुमार और मनोज मिश्रा की संविधान पीठ ने कहा कि वे 1998 में दिए गए फैसले से सहमत नहीं हैं, जिसमें सांसदों और विधायकों को सदन में भाषण देने या वोट के लिए रिश्वत लेने पर मुकदमे से छूट दी गई थी। 26 साल बाद आया यह फैसला सुप्रीमकोर्ट के कामकाज पर भी सवाल खड़ा करता है। क्योंकि इसी सुप्रीमकोर्ट ने 26 साल पहले लोकतंत्र का सौदा करने वाले अपराधियों को बरी कर दिया था। अब इस फैसले का उन चार सांसदों पर क्या असर होगा, क्या वह मुकद्दमा फिर से खुलेगा? रिश्वत देने वाले मुख्य आरोपी नरसिम्हा राव का तो देहांत हो चुका है। शिबू सोरेन अभी भी राज्यसभा के सांसद और झारखंड मुक्ति मोर्चे के अध्यक्ष हैं।

इतने बड़े रिश्वत कांड के बावजूद झारखंड मुक्ति मोर्चा की राजनीति पर कोई असर नहीं हुआ। उनके बेटे हाल ही तक झारखंड के मुख्यमंत्री थे, जब उन्हें भी ईडी ने सरकारी जमीन हड़पने, खदानों की लूटखसोट करने के आरोपों में गिरफ्तार किया, तब उन्होंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया। वैसे 26 साल बाद भी एक गलत फैसले की समीक्षा नहीं होती, अगर उन्हीं शिबू सोरेन की पुत्रवधू और झारखंड मुक्ति मोर्चा की ही विधायक सीता सोरेन पर 2012 में राज्यसभा चुनाव के दौरान वोट के बदले रिश्वत लेने का आरोप न लगता। सीता सोरेन ने बचाव में तर्क दिया था कि उन्हें सदन में %कुछ भी कहने या वोट देने% के लिए संविधान के अनुच्छेद 194(2) के तहत छूट हासिल है। सीनियर एडवोकेट राजू रामचंद्रन ने 1998 के फैसले को ही आधार बनाकर सुप्रीम कोर्ट में सीता सोरेन का पक्ष रखा था। उन्होंने हाल ही में लोकसभा में बसपा सांसद दानिश अली के खिलाफ भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी के अपमानजनक बयान का जिक्र करते हुए कहा कि वोट या भाषण से जुड़ी किसी भी चीज के लिए मुकद्दमे से छूट पूरी तरह होनी चाहिए, भले ही वह रिश्वत हो या साजिश हो। हालांकि मोदी सरकार के अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने कहा कि राज्यसभा चुनाव के लिए वोटिंग का सदन की कार्यवाही से कोई संबंध नहीं है, इसलिए राज्यसभा चुनाव में वोटिंग के लिए रिश्वत लेने के खिलाफ सीता सोरेन का मामला कानूनी दायरे में आता है।

बहस के दौरान जब सांसदों और विधायकों को मिले विशेषाधिकार का जिक्र आ गया, तो सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने तर्क दिया कि रिश्वतखोरी को कभी भी अनुच्छेद 105(2) और 194(2) के तहत छूट के दायरे में नहीं लाया जा सकता, अपराध भले ही संसद या विधानसभा में दिए गए भाषण या वोटिंग से जुड़ा हो, उसे सदन के बाहर अंजाम दिया जाता है। इस तरह मोदी सरकार ने 1998 के फैसले को फिर से खोलने का आग्रह कर दिया। 20 सितंबर को सुप्रीम कोर्ट ने मुकदमेबाजी से छूट वाले 1998 के फैसले पर फिर से विचार करने पर सहमति प्रकट की और मामला सात जजों की बेंच को सौंप दिया था। सात जजों की बेंच ने सुनवाई के बाद 23 अक्टूबर 2023 को फैसला सुरक्षित रख लिया था।

चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली सात जजों की बेंच का यह साझा फैसला है, जिसका सीधा असर अब झारखंड मुक्ति मोर्चा की विधायक सीता सोरेन पर पड़ेगा। जबकि उनके देवर हेमंत सोरेन को जब पिछले महीने गिरफ्तार किया गया, तो सीता सोरेन मुख्यमंत्री बनने पर अड़ गई थी। कोर्ट ने साफ किया कि कोई भी विधायक अगर रुपए लेकर सवाल पूछता है या रुपए लेकर किसी को वोट करता है (राज्यसभा चुनाव में) तब उसे कोई संरक्षण नहीं मिलेगा, न ही उसे कोई प्रोटोकॉल मिलेगा बल्कि उसके खिलाफ भ्रष्टाचार का मुकदमा चलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पैसे लेकर सवाल पूछना और वोट करना संसदीय लोकतंत्र के लिए जहर जैसा है। यह संसदीय लोकतंत्र के लिए कैंसर है और इसलिए इसे रोकना बहुत जरूरी है। इस तरह अब भविष्य में पैसा लेकर संसद में कुछ भी करने पर कोई इम्युनिटी नहीं होगी। जिस तरह अपराधी के खिलाफ केस चलता है, वैसे ही सासंद के खिलाफ भी केस चलेगा।

फैसला सुनाते हुए चीफ जस्टिस डी.वाई. चन्द्रचूड ने कहा- अगर कोई घूस लेता है तो केस बन जाता है। यह मायने नहीं रखता है कि उसने बाद में वोट दिया या फिर स्पीच दी। आरोप तभी बन जाता है, जिस वक्त कोई सांसद या विधायक घूस स्वीकार करता है। बेंच ने कहा- संविधान के अनुच्छेद 105 और 194 सदन के अंदर बहस और विचार-विमर्श का माहौल बनाए रखने के लिए हैं। लेकिन जब कोई सदस्य घूस लेकर सदन में वोट देने या खास तरीके से बोलने के लिए प्रेरित होता है, तो उसे अनुच्छेद 105 या 194 के तहत छूट हासिल नहीं है। इन दोनों अनुच्छेदों के तहत रिश्वतखोरी के लिए संरक्षण की इजाजत नहीं दी जा सकती। इस फैसले के बाद अब यह सवाल तो उठेगा ही कि तब सुप्रीमकोर्ट ने सत्ता का लिहाज क्यों किया था।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-23)

गतांक से आगे...

वे स्वतः अपने मन के अनुकूल रहकर ही मैत्री, करुणा, मुदिता एवं उपेक्षा आदि गुणों से विभूषित होते रहते हैं। है सौम्य ! वे समान भाव में रहते हुए सतत साधु वृत्ति में एकरस बने रहते हैं। मर्यादा से परे होकर भी वे समुद्र के समान विशाल हृदय वाले हो जाते हैं। वे भगवान् भास्कर की भाँति अपने नियत-पथ पर हमेशा गमन करते रहते हैं।

प्राज्ञों, संतजनों के साथ प्रयत्नपूर्वक यह चिन्तन करना चाहिए कि मैं कौन हूँ? यह विराट् विश्व-प्रपञ्च किस प्रकार प्रादुर्भूत हुआ? कभी निरर्थक कार्यों में न लगा रहे तथा अनार्य पुरुष के संग से सदैव अपने को बचाता रहे। सभी की संघारक, मृत्यु के प्रति उपेक्षा भाव से न देखे। यदि उपेक्षा करनी ही है, तो शरीर, अस्थि, मांस एवं रक्त आदि को घृणास्पद जानकर उनकी उपेक्षा करनी चाहिए।

जिस प्रकार मोती की लड़ियों में सूत्र पिरोया जाता है, उसी प्रकार प्राणियों में पिरोये हुए परमपिता परमात्मा पर ही दृष्टि रखे। उपयोगी वस्तु की ओर भागना एवं अनुपयोगी वस्तु का सदैव के लिए त्याग कर देना ही मन का स्वभाव है। वह बाह्य है, आन्तरिक नहीं, इसे जानना चाहिए। परमात्मतत्त्व के विषय में गुरु एवं शास्त्र के अनुसार बताये हुए मार्ग से तथा स्वानुभूति से मैं ही ब्रह्म हूँ, ऐसा जानकर शोक-रहित हो जाए।

ऐसी अवस्था में खड्ग जैसा कठोर आघात, कमल के कोमल आघात के सदृश तथा अग्नि द्वारा दग्ध किये जाने का प्रभाव, शीतल जल में स्नान करने की भाँति सहन करने योग्य हो जाता है। आग के दहकते अंगारों पर लेटना, चन्दन के लेप के समान शीतल प्रतीत होता है। शरीर पर सतत बाणों के समूह का आघात, गर्मी को शान्त करने वाले फव्वारे के जलकणों की वर्षा के सदृश बन जाता है।

क्रमशः ...

समुद्र तटों को साफ करने का मिशन

मल्हार कलंबे

लंबे समुद्र तट मुंबई की पहचान हैं, लेकिन शहर के ज्यादातर तट कचरे से पटे पड़े रहते हैं। मैंने डेढ़ साल पहले दादर समुद्र तट की सफाई शुरू की थी और इसमें कामयाव रहा। दादर तट पर मुख्य रूप से मीठी नदी का कचरा माहिम प्रभादेवी तट से आता है। करीब 18 किलोमीटर लंबी मीठी मुंबई के बीचोबीच बहने वाली नदी है। बोरीवली से निकलती मीठी नदी महिम में समुद्र से मिलती है। इसमें मुंबई के लोग सबसे ज्यादा कचरा डालते हैं और हर बरसात में यहाँ बाढ़ का यह प्रमुख कारण है। यह कचरा दादर तट पर आता है। मैं दादर में पला-बढ़ा और बचपन से इन्हीं समुद्री तटों पर खेला हूँ। ये तट मेरे घर से बमुश्किल सिर्फ डेढ़ किलोमीटर दूर है। दो साल पहले, जब मैं 19 बरस का था, तब मुझे लगता था कि बचपन में जो तट साफ-सुथरा था, वह अब इतना गंदा क्यों है ? समझ में आया कि लोग गंदा कर रहे हैं। मैंने माँ से बात की, तो उन्होंने कहा कि तुम्हें लगता है कि तट साफ-सुथरा होना चाहिए, तो खुद यह काम करो। तब मैंने स्कूल के दोस्तों को फोन किया और तट साफ करने की बात की। वे साथ आए और हमने काम शुरु किया। दोस्तों के साथ मैंने 65-70 हफ्तों तक काम करके दादर समुद्र तक को कचरा मुक्त बनाने के बाद मीठी नदी को कचरा मुक्त करने का अभियान शुरु किया।

बीते 12-13 हफ्तों से हम लोग शनिवार को दादर तट साफ करते हैं और रविवार को मीठी नदी से कचरा निकालते हैं। डेढ़ साल में हमने किसी वीकेंड पर छुट्टी नहीं ली है। हमें देखकर धीरे-धीरे स्थानीय लोग, कॉरपोरेट, नेता और सेलेब्रिटी भी आने लगे। फिर हमने इस काम में स्कूलों-कॉलेजों को आमंत्रित किया। अब यह हमारे लिए मिशन जैसा बन गया है और हम दादर और मीठी नदी की सफाई के साथ-साथ अन्य समुद्र तटों की सफाई की भी योजना बना रहे हैं। हालांकि मेरा शुरूआती उद्देश्य कतई नहीं था कि यह काम मिशन बन जाए, लेकिन लोग खुद-ब-खुद इससे जुड़ते चले गए।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि समुद्र और नदी में मिलने वाला 90 फीसदी कचरा प्लास्टिक का होता है। इसके अलावा कपड़े, जूते, स्कूल बैग, डायपर, कंडोम सेनेटरी नेपकिन से लेकर चिकित्सा से जुड़ी अन्य चीजें भी इनमें होती हैं। यह धारणा गलत है कि जो लोग समुद्र किनारे जाते हैं, वही कचरा फैलाते हैं। वे लोग भी गंदगी करते हैं, लेकिन इसमें उनकी भागीदारी बहुत कम होती है। मुंबई के तटों पर ज्यादातर कचरा नदी-नालों-नालियों के माध्यम से घरों से निकल कर आ रहा है। लोग प्लास्टिक की थैलियाँ बना-बनाकर नदी-नालों में फेकते हैं। मुंबई में कचरे के निस्तारण की समस्या है और इससे निपटना बड़ी चुनौती है। अगर लोग सूखे और गीले कचरे को अलग-अलग निकालना शुरु करें, तो समुद्र में कचरा आने की समस्या 60-70 फीसदी तक कम हो सकती है।

लोगों को जागरूक करने के लिए अब हम स्कूल-कॉलेज के बच्चों के संग हाउसिंग सोसाइटियों को भी अपने साथ जोड़ रहे हैं। उनकी जागरूकता ही कचरे को समुद्र में जाने और समुद्र को प्रदूषित होने से रोक सकती है। मेरा मानना है कि यदि हम ऐसे ही लगातार काम करते रहे, तो एक दिन अवश्य मुंबई अपने साफ-सुथरे समुद्र तटों पर नाज करेगी और हमारे शहर की रौनक भी यूरोप या अमेरिका के तटीय शहरों से कम नहीं होगी।

शहबाज शरीफ के सामने आगे कौन-कौन सी चुनौतियां?

अभिनय आकाश

पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में आठ फरवरी को चुनाव हुए और 13 फरवरी को नतीजे आए। लेकिन सरकार का गठन 24 दिन बाद 3 मार्च को हुआ। शहबाज शरीफ पाकिस्तान के 24वें प्रधानमंत्री बन गए। पाकिस्तान की संसद में चुने हुए प्रतिनिधियों ने प्रधानमंत्री चुनने के लिए मतदान किया। पीएमएनएल के उम्मीदवार शहबाज शरीफ 201 वोटों के साथ पाकिस्तान के वजीर-ए-आलम बन गए। उनके विरोधी और इमरान समर्थन नेता उमर अयूब को केवल 92 वोट ही हासिल हुए। सरकार बनाने के लिए नवाज शरीफ की पार्टी ने पीपीपी सहित सात पार्टियों के साथ गठबंधन किया। यानी पाकिस्तान में इस वक्त आठ दलों की सरकार है। शहबाज शरीफ विक्ट्री स्पीच देने के लिए नेशनल असेंबली में खड़े हुए। उन्होंने नवाज शरीफ को सबसे पहले धन्यवाद कहा। उन्होंने सभी सहयोगियों को उन पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद कहा। इसके बाद शहबाज शरीफ की जुबान फिसल गई। उन्होंने खुद को प्रधानमंत्री की जगह विपक्ष का नेता बता दिया।

भले ही शहबाज की जुबान फिसली हो। लेकिन पाकिस्तान में चर्चा है कि वो हकीकत में बहुत जल्द विपक्ष में बैठे नजर आएंगे। जिन हालात में वो प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे हैं ऐसी परिस्थितियों में उनके लिए देश चलाना बहुत मुश्किल होने वाला है। शहबाज शरीफ के सत्ता में आने के साथ ही जाने की भविष्यवाणी भी होने लगी है। पिछले कार्यकाल में जब शहबाज शरीफ कटोरा फैलाकर मुल्क वापस लौटते थे तो बेहद फर्क से सबको बताते थे कि वो कैसे अमीर देशों से खैरात मांगकर लाए हैं। कहा तो ये भी जा रहा है कि खैरात मांगने में जिस तरह की महारत शहबाज शरीफ को हासिल है। इसलिए नवाज ने खुद ये पद ठुकरा कर प्रधानमंत्री की कुर्सी पर भाई शहबाज को बिठाया है।

शहबाज शरीफ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी

(पीपीपी) के सर्वसम्मति से उम्मीदवार चुने गए। जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) केउमर अयूब खान से अधिक वोट हासिल करने के बाद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के रूप में उनके नाम पर मुहर लग गई। चुनाव के बाद, कई लोगों ने मान लिया था कि शहबाज़ के बड़े भाई नवाज़ शरीफ़ प्रधान मंत्री होंगे। हालाँकि, चीजें तब बदल गईं जब पीएमएल-एन ने फरवरी के चुनाव में अनुमान से कम सीटें जीतीं। दरअसल, जब दोनों भाई नेशनल असेंबली के मुख्य हॉल में पहुंचे तब भी शरीफ परिवार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और नारेबाजी हुई। कई सदस्यों ने जेल में बंद इमरान खान के पोस्टर उठाए। शरीफ के प्रधानमंत्री बनने की पुष्टि होते ही संसद में विरोध प्रदर्शन जारी रहा। उन्हें वोट चोर कहा गया और शर्म करो के नारे लगाए गए। हालाँकि, अपने पहले संबोधन में शहबाज़ शरीफ़ ने सुलह की पेशकश की और कहा कि आइए हम पाकिस्तान की बेहतरी के लिए मिलकर काम करें। लेकिन विरोध जारी रहा।

अब जब शहबाज़ शरीफ़ प्रधानमंत्री हैं तो उनकी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक शासन व्यवस्था होगी। कई मामलों में फंसाए जाने और कार्यालय से बाहर किए जाने और उनकी पार्टी के सदस्यों को उनके चुनाव चिन्ह से वंचित किए जाने के बावजूद, इमरान खान की पीटीआई ने चुनाव में दूसरों से बेहतर प्रदर्शन किया और 93 सीटें जीतीं। ऐसा लगता है कि अब वे एक मजबूत और बेहद मुखर विपक्ष बनने पर तुले हुए हैं। दरअसल, खान की पार्टी के नेताओं ने एक शक्तिशाली विपक्ष के रूप में काम करने का वादा किया है। उमर अयूब के हवाले से कहा गया है कि हमारी प्राथमिकता हमारे नेताओं को रिहा कराना और उन्हें संसद में लाना होगा। ऐसी भी आशंका है कि पूर्व क्रिकेटर के समर्थक खान की जेल से रिहाई की मांग करते हुए सड़कों पर उतरेंगे, जिससे शरीफ के काम में जटिलता आ जाएगी। पीटीआई नहीं है जो शरीफ के लिए समस्या है। कई विश्लेषकों के अनुसार, सत्ता में गठबंधन सरकार कमजोर होने की संभावना है, क्योंकि पीएमएल-एन और पीपीपी के बीच शासन को लेकर मतभेद होना तय है। ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन की फेलो मदीहा अफजल ने भी डॉयचे वेले की एक रिपोर्ट में कहा कि शरीफ सरकार का रुख पाकिस्तानी सेना के प्रति सम्मानजनक होने की संभावना है। यह शहबाज़ शरीफ़ या पाकिस्तान में लोकतंत्र के भविष्य के लिए अच्छा संकेत नहीं हो सकता है। इसके अलावा, सहयोगियों ने कहा कि वे केवल मामले-दर-मामले के आधार पर सरकार का समर्थन करेंगे। इससे यह आशंका पैदा हो गई है कि यह गठबंधन पिछले गठबंधन से कमजोर होगा। केवल समय ही बताएगा कि पाकिस्तान के सबसे अधिक आबादी वाले प्रांत पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में एक दशक से अधिक समय तक सेवा करने वाले शहबाज शरीफ गठबंधन को बरकरार रखने में सक्षम होंगे या नहीं। प्रधानमंत्री के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल में शहबाज़ शरीफ़ के लिए सबसे बड़ी चुनौती देश की आर्थिक अस्थिरता होगी। भ्रष्टाचार, कुप्रबंधन, कोविड-19 महामारी, वैश्विक ऊर्जा संकट और प्राकृतिक आपदाओं ने अर्थव्यवस्था पर भारी असर डाला है। देश आसमान छूती मुद्रास्फीति से जूझ रहा है जो लगभग 25-30 प्रतिशत आंकी गई है बेरोजगारी, किसी अन्य के विपरीत कर्ज का बोझ और केवल दो प्रतिशत की विकास दर भी। ऐसी स्थिति के कारण, आवश्यक वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही हैं, जिससे आम आदमी भूखा और निराश है। ऐसे आर्थिक संकट में, शहबाज शरीफ को एक और आईएमएफ बेलआउट हासिल करना होगा, जैसा कि उन्होंने पहले किया था। हालाँकि, इसके लिए उसे कुछ कठोर उपाय लागू करने होंगे, जिससे और अधिक अशांति फैलेगी। विश्लेषकों का मानना ??है कि उन्हें कर बढ़ाना पड़ सकता है। एक ऐसा कदम जिससे लोगों का नाराज होना तय है। जैसा कि कराची में रहने वाले एक अर्थशास्त्री, अक़दस अफ़ज़ल ने न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया कि कोई भी नया बेलआउट .6 बिलियन से .8 बिलियन के पड़ोस में होगा, जिसके लिए संभवतः नए मितव्ययिता उपायों की आवश्यकता होगी जो जनता में निराशा पैदा कर सकते हैं। आर्थिक विश्लेषक फरहान बुखारी ने भी डॉयचे वेले से कहा कि पाकिस्तान के आर्थिक इतिहास में यह बहुत कठिन समय है। निर्वाचित सरकार को नए आईएमएफ ऋण के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए अलोकप्रिय विकल्प चुनने के लिए मजबूर किया जाएगा। वे निर्णय निकट भविष्य में जनता के असंतोष का जोखिम लाएंगे। आने वाली सरकार के लिए कोई हनीमून पीरियड नहीं होगा। लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के कार्यवाहक संघीय मंत्री उमैर सैफ, जिन्होंने पंजाब में शरीफ के साथ काम किया था, ने कहा कि शरीफ को पाकिस्तान की प्रणाली को समझने का लाभ मिला है। इस देश को क्रांति की ज़रूरत नहीं है। पाकिस्तान जिस आर्थिक और राजनीतिक संकट से जूझ रहा है, उसके अलावा शहबाज शरीफ सरकार को देश में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति से भी निपटना होगा। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) और इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकवादी समूहों ने पाकिस्तान पर अपने हमले बढ़ा दिए हैं, खासकर खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान प्रांतों में। सीमा पर अफ़ग़ानिस्तान के साथ भी तनाव बढ़ा हुआ है। दरअसल, 2023 में पाकिस्तान में आतंकी हमलों की संख्या उस स्तर पर पहुंच गई जो 2016 के बाद से नहीं देखी गई। पिछले साल हमलों में लगभग 400 नागरिक और 550 सुरक्षाकर्मी मारे गए थे। संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान की पूर्व प्रतिनिधि मलीहा लोधी ने कहा कि शहबाज शरीफ की सरकार को आतंकवादी गतिविधि में वृद्धि और अन्य सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए पाकिस्तान के सैन्य प्रतिष्ठान के साथ मिलकर काम करना होगा।

आज का इतिहास

1964 कॉन्स्टेंटाइन द्वितीय अपने पिता राजा पॉल की मृत्यु के बाद ग्रीस के राजा बने।
1971 स्विट्जरलैंड के बुर्घोल्ज़ली शहर के एक मानसिक अस्पताल में आग लगने से 28 लोग मारे गए।
1975 पहली बार टेलीविज़न पर जॉन एफ. कैनेडी की हत्या की ज़ेरुडर फिल्म।
1975 ईरान और इराक ने एक सीमा विवाद को निपटाने के लिए अल्जीयर्स समझौते पर हस्ताक्षर किए, केवल पांच साल बाद फिर से लड़ना शुरू करने के लिए -इराक-इराक युद्ध।
1981 अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने 37000 संघीय नौकरियों में कटौती करने की घोषणा की।
1988 ऑपरेशन फ्लेवियस में, ब्रिटिश स्पेशल एयर सर्विस ने तीन प्रोविजनल आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के स्वयंसेवकों को मार डाला, जब वे जिब्राल्टर में ब्रिटिश सैन्य बैंड की परेड पर बमबारी करने की साजिश रच रहे थे।
1994 कॉलिन जैक्सन ने 60 मीटर बाधा दौड़ में विश्व रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने सिर्फ 4.30 सेकंड में 60 मीटर की दौड़ पूरी की।
1996 ईराक ने संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के तहत खाद्य के लिये तेल योजना को स्वीकार किया, आयरिश रिपब्लिक आर्मी ने त्वरित युद्ध विराम को नकारते हुए ब्रिटेन के साथ 25 वर्षीय युद्ध की घोषणा की।
1996 श्रीलंका के बल्लेबाज अरविंदा डी सिल्वा ने कैंडी में विश्व कप में 145 रन बनाए। केन्या के खिलाफ 50 ओवर की समाप्ति के बाद श्रीलंका ने 5-398 रन बनाए।
1998 पहली बार बकिंघम पैलेस के ऊपर ब्रिटिश झंडा फहराया गया था।
2003 अल्जीरिया का एक विमान तामारासेट में दुर्घटनाग्रस्त, 102 से भी अधिक यात्री मरे।
2003 अल्जीरिया के तमनरासेट एयरपोर्ट पर एयर अल्जीरी फ्लाइट के दुर्घटनाग्रस्त होने से करीब 103 लोग मारे गए।
2007 मेगा मिलियनों में सबसे ज्यादा लॉटरी जैकपॉट है। विजेता के लिए निर्धारित राशि .370 मिलियन डॉलर है।
2008 एक फिलिस्तीनी बंदूकधारी ने आठ छात्रों की गोली मारकर हत्या कर दी और यरूशलेम में मरकज़ हैव कूकेयेशवा के पुस्तकालय में गंभीर रूप से घायल ग्यारह छात्रों को मार दिया।
2010 पाकिस्तान में तालिबान कमांडर फ़कीर मोहम्मद की पाकिस्तान में ड्रोन की चपेट में आने से मौत हो गई।
2011 कार्डिफ और वेल्स में बोलते हुए, यू.के. के प्रधान मंत्री, डेविड कैमरन ने दुश्मनों के उद्यम पर एक युद्ध की घोषणा की।

दल बदलने के लिए क्यों उतारू हैं राजनेता

शेखर गुप्ता

हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में राज्य सभा चुनावों में हुई क्रॉस-वोटिंग और दलबदल के घटनाक्रम ने कई महत्त्वपूर्ण सियासी सवाल खड़े कर दिए हैं। जैसे कि नेताओं को पार्टी के प्रति वफादार रहने या उसे छोड़ने का मुख्य प्रेरणास्रोत क्या है? किन वजहों से कुछ दल एक साथ रहते हैं जबकि कुछ विभाजित हो जाते हैं? पार्टियों को एकजुट रखने का मूल आधार क्या है और किन वजहों से यह आधार कमजोर हो जाता है?

पहली वजह, निश्चित रूप से सत्ता और पूंजी की ताकत है जो लोगों को पार्टी में रहने या छोड़ने के लिए प्रेरित करता है। ये वजहें इन दलों को एक साथ बनाए रखने वाले गोंद या दूर करने वाले चुंबक की तरह ही होनी चाहिए। लेकिन यह सच नहीं है। अगर ऐसा होता, तब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) 1984 में कांग्रेस की 414 सीट की तुलना में सिर्फ दो सीट पर सिमट जाने के बाद भी सबसे अधिक एकजुटता बनाए रखने वाली राष्ट्रीय पार्टी कैसे बनी रहती? भाजपा, वर्ष 1980 में मूल भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के नए अवतार के रूप में उभरी थी। लेकिन भारतीय जनसंघ राजनीतिक वनवास के दौर में भी दशकों तक अपना अस्तित्व मजबूती से बनाए रखने में कामयाब रही थी। वर्ष 1947 और 1989 के बीच न तो इस पार्टी और न ही इसके उत्तराधिकारी दल को केंद्र की सत्ता का स्वाद चखने को मिला। हालांकि जनता पार्टी के घटक के रूप में वर्ष 1977-79 के 28 महीने के दौरान इसे जरूर सत्ता से जुड़ने का मौका मिला था।

जनसंघ ने खुद को जनता पार्टी में मिला लिया और इसके सभी सदस्यों ने भी कर्तव्यपरायणता दिखाते हुए बिना किसी विरोध के अपनी सहमति व्यक्त की। इसका स्पष्ट तर्क यह हो सकता है, 'बेशक, उन्होंने सत्ता के लिए ऐसा किया।' लेकिन इस तर्क में भी खामियां हैं। ऐसा इसलिए कि सत्ता जाने के बाद, जनसंघ के सभी लोग भाजपा के रूप में फिर से संगठित हो गए। कोई भी कांग्रेस में शामिल नहीं हुआ या अपना खुद का कोई दल नहीं बनाया। इससे यह निष्कर्ष निकालने में सहूलियत मिल सकती है कि विचारधारा के चलते दल एकजुट हो

सकते हैं। मैं यहां कुछ और तर्क की चुनौती देने के लिए तैयार हूं। क्या लोग भाजपा/जनसंघ को नहीं छोड़ते रहे हैं? बिल्कुल, बलराज मधोक और कुछ अन्य लोगों ने 1970 के दशक की शुरुआत में पार्टी में एक शख्सियत के बढ़ते प्रभाव को लेकर विरोध किया था और पार्टी छोड़ दी थी। लेकिन वे दल बदल कर कांग्रेस में नहीं गए, चाहे इंदिरा गांधी उन्हें कितना भी लुभाने की कोशिश करतीं। समसामयिक स्तर पर देखा जाए तो शंकरसिंह वाघेला, कल्याण सिंह, उमा भारती और बीएस येदियुरप्पा ने पार्टी छोड़ दी और अपने छोटे राजनीतिक दल बना लिए।

केवल वाघेला ने मुख्यमंत्री बनने के लिए कांग्रेस के साथ हाथ मिलाया और यह बात वर्ष 1996 की है। वह उस वक्त से पार्टी छोड़ चुके हैं और अब नरेंद्र मोदी की प्रशंसा कर रहे हैं। बाकी तीनों नेताओं की भाजपा में घर वापसी हो चुकी है। भाजपा अकेली ऐसी राष्ट्रीय पार्टी है जिसकी कोई राजनीतिक उप शाखा नहीं है। भारतीय राजनीति उतनी दिलचस्प नहीं होती अगर वह किसी भी स्पष्ट लगने वाले विचार या 'निस्संदेह' से शुरू होने वाले उत्तर का खंडन नहीं करती। लेकिन एक सवाल यह भी है कि अगर विचारधारा दलों को एक साथ रखती है, तब समाजवादी पार्टी में सबसे अधिक विभाजन क्यों देखा गया और प्रारंभिक दौर में व्यक्तिगत संस्थापकों के अधीन अलग सियासी दल बनाने के रास्ते क्यों अपनाए गए?

समाजवादियों के पास एक विचारधारा भी थी और इसके भीतर एक और भी स्पष्ट रूप से परिभाषित विचारधारा थी, लोहियावाद। अब उन धड़ों को गिनें जिनमें लोहियावादी विभाजित हो गए हैं और उन्होंने अलग-अलग रास्ते चुने। इनमें नीतीश कुमार, रामविलास पासवान, मुलायम/अखिलेश, लालू/तेजस्वी शामिल हैं। यह गिनती जारी रखी जा सकती है। हमारे पास एक और विकल्प है जो बहुत स्पष्ट लगता है। भाजपा का मुख्य नेतृत्व कभी संसाधन विहीन नहीं था बल्कि इनमें से ज्यादातर का तालुल्क संपन्न परिवारों से था। इन्हें संघ की तरफ से प्रशिक्षण मिला था और इसलिए वे पूरी गहराई से उस विचारधारा से जुड़े थे। जो चीज राजनीतिक दलों को एक साथ जोड़े रखती है वह है आर्थिक रूप से आरामदायक व्यक्तिगत जीवन और वैचारिक प्रतिबद्धता का होना। इसके साथ ही, सत्ता का स्वाद भी जो भाजपा को 1989 से ही मिला है। लेकिन भारत के वामपंथियों के बारे में क्या कहा जा सकता है?

ऐसी मिसाल शायद ही मिले जब वामपंथी दलों के सदस्य ने दल बदला हो। अगर विचारधारा की बात छोड़ दे तों उनकी वफादारी कैसे बनी रहती है, खासतौर पर इस तथ्य पर विचार करते हुए कि उन्हें शायद ही कभी सत्ता मिलती है और उनके पास निजी तौर पर खूब संपत्ति भी नहीं है? इस संदर्भ में 'स्पष्ट रूप से और निस्संदेह' वाला उत्तर भी नहीं कारगर होगा। इसकी वजह यह है कि वामपंथी दल नहीं बदलते बल्कि वे विभाजित हो जाते हैं। लेकिन वे सत्ता या पैसे के लिए ऐसा नहीं करते हैं। वे वैचारिक शुद्धता की तलाश में विभाजित होते हैं और उनका गहन तर्क इस बात पर होता है कि किसका अनुसरण करना है: लेनिन, माओ, त्रोत्सकी, रूस या फिर चीन? सवाल फिर भी है कि क्या कोई ताकतवर शख्सियत या कोई राजनीतिक वंशवादी परंपरा ही राजनीतिक दलों को एकजुट रख सकती है और नई प्रतिभा को अपनी ओर आकर्षित भी कर सकती है। आप नरेंद्र मोदी की भाजपा, स्तालिन की द्रमुक (जिसकी एक खास विचारधारा है, हालांकि यह एक राज्य तक ही सीमित है) और ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस को बाहरी स्तर पर देखें क्योंकि इन्हें भी कुछ लोगों ने छोड़ा है।

लेकिन अन्य सभी व्यक्तित्व/वंशवादी परंपरा वाले राजनीतिक दलों पर भी गौर करें तब आपको मालूम पड़ेगा कि मायावती की बसपा, शिवसेना, शरद पवार की राकांपा या बादल परिवार के शिरोमणि अकाली दल को छोड़कर जाने वाले लोग भी मिलेंगे। हम आज के संदर्भ के लिहाज से सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर वापस आते हैं जो कांग्रेस की अपने संगठन को एकजुट रखने में विफलता से जुड़ी है। पार्टी यह दावा करती है कि इसकी एक विचारधारा हैं और शीर्ष स्तर पर एक नेता/वंशवादी परंपरा भी है। जब हिमंत विश्व शर्मा से लेकर ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे नेता इस पार्टी छोड़ देते हैं तब उन्हें पार्टी की विचारधारा के प्रति सच्चा न रहने के लिए खारिज कर दिया जाता है। पार्टी में देने के लिए शक्ति और संरक्षण का दायरा भी है लेकिन यह कम हो रहा है। शीर्ष स्तर पर एक मजबूत शख्सियत/वंशवादी नेतृत्व होने के चलते यह शत-प्रतिशत उपयुक्त भी लगता है। हालांकि पार्टी से प्रतिभाशाली लोगों का पलायन हो रहा है। हालात यहां तक बिगड़े कि इसके एक मुख्यमंत्री (पेमा खांडू, अरुणाचल प्रदेश) को पूरे विधायक दल के साथ भाजपा में शामिल होते देखा गया है।

इसकी वैचारिक प्रतिबद्धता विश्वसनीय नहीं है और यह इस बात से स्पष्ट है कि इसके कई प्रमुख नेता आसानी से भाजपा से जुड़ जाते हैं। क्या इसके लिए पैसा, सत्ता और 'एजेंसियों से सुरक्षा' के साथ-साथ मोदी-शाह भाजपा के अनूठे 'आकर्षण' को भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? हालांकि 1969 के बाद से ही पार्टी हर कुछ वर्षों में विभाजित हो रही है। आखिरी बड़ा विभाजन तब हुआ जब जनवरी 1978 में पार्टी के वरिष्ठतम नेता सत्ता से कुछ महीने बाहर रहने का दुख नहीं सह सके। इनमें शामिल थे 'इंदिरा इज इंडिया' वाले डी के बरुआ, वसंतदादा पाटिल, वाई बी चव्हाण और स्वर्ण सिंह। बाद में, पार्टी के हमेशा वफादार रहे ए के एंटनी कांग्रेस (अर्स) में शामिल हुए और फिर अपनी खुद की पार्टी कांग्रेस (ए) बना ली। चौधरी चरण सिंह, शरद पवार, वाईएस जगनमोहन रेड्डी, ममता बनर्जी और हिमंत विश्व शर्मा सभी ने मुख्य पार्टी के कमजोर होने के साथ ही अपनी खुद की राजनीतिक ताकत बनाने की कोशिश की। इसका निष्कर्ष क्या है? पहली बात यह है कि विचारधारा एक मजबूत बंधन हो सकती है, लेकिन इसके लिए यह स्पष्ट और धारदार विचारधारा होनी चाहिए और इसे कम उम्र से ही लोगों के दिमाग में बिठाया जाना चाहिए, जैसा कि भाजपा/संघ, वामपंथियों और द्रविड़ दलों ने किया है। एक मजबूत व्यक्तित्व या वंशवादी परंपरा पार्टी को एकजुट रख सकती है, लेकिन ऐसा तभी संभव है जब वे अपने समर्थकों को वोट दिलवाने की गारंटी दे सकें। आंध्र प्रदेश में जगन मोहन और बंगाल में ममता की ताकत यही है। पैसे और सत्ता का लोभ भी पार्टी में शामिल होने वालों की संख्या बढ़ा सकता है, जैसा कि आज भाजपा ने दिखाया है। कांग्रेस इन सभी परीक्षाओं में विफल हो गई। इसकी विचारधारा अस्पष्ट है। यह खुद को जेएनयू-वामपंथी विचारधारा की तर्ज पर धर्मनिरपेक्ष होने की बात करती है, लेकिन इसके साथ ही यह अपने 'शिवभक्त' नेता की 'जनेऊधारी' (पवित्र धागा पहनने वाले) दत्तात्रेय ब्राह्मण पहचान को भी प्रदर्शित करने से परहेज नहीं करती है। वहीं दूसरी ओर यह अयोध्या में मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के लिए निमंत्रण ठुकरा देती है।

कांग्रेस का आर्थिक मुद्दों पर वामपंथी रुख और अदाणी, अंबानी और 'भारत के मुट्ठी भर अमीरों' के खिलाफ तीखी बयानबाजी खोखली लगती है क्योंकि उसी जमात के साथ इसके अपने पुराने रिश्ते रहे हैं। पार्टी के सदस्यों को भी यह पता नहीं है कि वह किस चीज के लिए संघर्ष करें और उन्हें पैसे या सत्ता का कोई रास्ता नहीं दिखता, उन्हें एक राजनीतिक घराने के नियंत्रण में रहना पड़ता है जो भले ही पार्टी के अंदर कितनी भी ताकतवर हो, उन्हें वोट दिलाने में सक्षम नहीं है, ऐसे में उनके विकल्प तलाशने की संभावना ही दिखती है। यही बात पिछले हफ्ते शिमला में कांग्रेस के साथ और उसके सहयोगी दल समाजवादी पार्टी के साथ लखनऊ में हुई। दूसरी ओर, भाजपा एक मजबूत पैकेज की तरह है और यह पार्टी से जुड़ने वालों को वैचारिक फेविकोल, दल-बदल कर आने वाले लोगों के लिए शक्ति और सुरक्षा के साथ 'मोदी की तरफ से वोटों की गारंटी' भी देती है। आम चुनाव की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय राजनीति की तस्वीर कुछ ऐसी ही है।

'एक देश, एक चुनाव' को लेकर शीघ्र हो सकता है फैसला!

राजकुमार सिंह

एक देश, एक चुनाव के विषय पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में गठित आठ सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति की रफ्तार से लगता है कि वह अपनी रिपोर्ट लोकसभा चुनाव से पहले केंद्र सरकार को दे देगी। समिति को पंचायत और नगर पालिका से लेकर लोकसभा तक सभी चुनाव एक साथ कराने के मुद्दे पर रिपोर्ट देनी है। 1 सितंबर, 2023 को गठित समिति 24 फरवरी को अपने कामकाज की समीक्षा कर चुकी है। छह महीनों में समिति ने राजनीतिक दलों से लेकर जनसाधारण तक से इस जटिल मुद्दे पर विचार मांगे। जनसाधारण के विचारों का तो अभी पता नहीं, लेकिन राजनीतिक दलों की राय अपेक्षित रूप से विभाजित नजर आती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक देश, एक चुनाव के पक्षधर हैं इसलिए भाजपा और उसके मित्र दल पक्ष में नजर आते हैं। एक साथ चुनाव में उन्हें वे सभी लाभ नजर आते हैं, जो इसके पैरोकार गिनाते रहे हैं। मसलन, चुनाव खर्च में भारी कमी आएगी, आचार संहिता के चलते सरकार की निर्णय प्रक्रिया और प्रशासनिक कामकाज प्रभावित होने से जो नुकसान होता है, उससे बचा जा सकेगा।दूसरी ओर भाजपा विरोधी दलों को इसमें संघवाद और राज्यों के अधिकारों का अतिक्रमण तथा राष्ट्रीय मुद्दों से विधानसभा और स्थानीय चुनावों को भी प्रभावित कर क्षेत्रीय दलों को नुकसान की सुनियोजित साजिश दिखती है। याद दिलाना जरूरी है कि एक देश, एक चुनाव कोई अनूठा विचार नहीं है। 1951 से ले कर 1967 तक देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ ही होते रहे। उसके बाद ही यह प्रक्रिया भंग हुई। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लोकसभा चुनाव निर्धारित समय से एक साल पहले कराने के फैसले ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई। 2014 में अकेले दम बहुमत के साथ केंद्रीय सत्ता में आने और फिर देश के कई राज्यों में भी अकेले दम या गठबंधन सहयोगियों के साथ सुविधाजनक बहुमत की सरकारें चलाते हुए भाजपा को लगता है कि एक साथ चुनाव की प्रक्रिया में वापस लौटा जा सकता है। बेशक दुनिया में कुछ लोकतांत्रिक देशों में राष्ट्रीय और प्रांतीय सत्ता के लिए एक साथ चुनाव होते हैं, पर कुछ में नहीं भी होते हैं। यह पूरी तरह देश विशेष की राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि उसके लिए क्या सही है। दो राय नहीं कि एक साथ चुनाव से खर्च काफी घट जाएगा, आचार संहिता के चलते प्रशासन पर पड़नेवाले प्रभाव से भी बचा जा सकेगा, लेकिन उसके खतरे भी हैं। विधानसभा चुनाव अक्सर राज्य के और स्थानीय मुद्दों पर लड़े जाते हैं। एक साथ चुनाव कराने पर क्या राष्ट्रीय मुद्दे हावी और स्थानीय मुद्दे गौण नहीं हो जाएंगे? इन सवालों का जवाब खोजा जाना चाहिए।

जनता पूछ रही- कांग्रेस-आम आदमी पार्टी के रिश्ते को क्या नाम दें?

राकेश सैन

देश में लोकसभा चुनावों की तैयारी को लेकर 'इंडी' गठजोड़ के तहत कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबन्धन हो चुका है। देश के अन्य हिस्सों जैसे दिल्ली, हरियाणा, गुजरात और गोवा में दोनों दल मिल कर चुनाव लड़ेंगे जबकि पंजाब में एक-दूसरे के खिलाफ। इस अजीबो-गरीब गठजोड़ को देख कर हास्य अभिनेता कादर खान की उस फिल्म में कॉमेडी का स्मरण हो आया जिसमें प्रेमी की माँ और प्रेमिका का बाप भी एक दूसरे के चक्कर में पड़ कर शादी कर बैठते हैं। अब इस रिश्ते से प्रेमी अपनी प्रेमिका का भाई हो गया और उसका अपना पिता उसका ससुर भी बन गया। प्रेमिका भी अपनी माँ को सासू कहे या मम्मी, उसे समझ नहीं आ रहा था। परिवार में इन दोनों जोड़ियों के होने वाले बच्चों के सामने समस्या पैदा हो गई कि कौन किसको किस रिश्ते से पुकारे? इसी तर्ज पर उक्त राजनीतिक गठजोड़ को देख कर यह बात सत्य साबित हो गई है कि देश में नई तरह की राजनीति का वायदा करके आए अरविंद केजरीवाल ने वास्तव में नया कर दिखाया है। हालांकि इस तरह के बेमेल गठजोड़ अतीत में भी कुछ स्थानों पर होते रहे हैं परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार यह बेर और केर का साथ चर्चा का विषय बना हुआ है। कांग्रेस के भ्रष्टाचार के खिलाफ चले अन्ना हजारे आन्दोलन से उपजी आम आदमी पार्टी अब उसी के पक्ष में दिखाई दे रही है।

रोचक है कि चुनावों में प्रचार के दौरान पंजाब में कांग्रेस जहां भगवंत मान के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी की सरकार को कोसेगी और अरविंद केजरीवाल पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों को उछालेगी वहीं दोनों दल दूसरे राज्यों में एक-दूसरे की पीठ खुजाएंगे। केंद्र में अगर सत्ता परिवर्तन होता है तो यहां के सांसद चाहे वह कांग्रेस के हों

या आप के एक साथ सरकार में बैठेंगे और भाजपा सरकार बनी रहती है तो विपक्ष में गलबहियां डाले दिखेंगे, यानि हमीं से मुहब्बत हमीं से लड़ाई- अरे मार डाला दुहाई दुहाई।

पंजाब में इस रिश्ते को फिक्स मैच या नूरा कुश्ती का नाम दिया जाने लगा है। कल 1 मार्च को पंजाब विधानसभा में शुरू हुए बजट सत्र के दौरान कांग्रेस ने पंजाब में शंभू सीमा पर चल रहे किसान आंदोलन में मारे गए युवक को लेकर आप की सरकार को घेरा तो सत्तापक्ष ने कांग्रेस पर पलटवार किया। भाजपा ने इसे फिक्स मैच बता कर उपहास किया है और कहा है कि किसानों के खिलाफ दोनों अंदर से मिले हुए हैं। इस बेमेल खिचड़ी गठबन्धन को लेकर एक कहानी सुनाई जाने लगी है कि जैसे बाढ़ के समय जान बचाने के लिए अपनी दुश्मनी भुला कर हर तरह के जीव-जन्तु ऊंचाई वाली जगह पर एकत्रित हो जाते हैं परन्तु पानी उतरते ही उनकी मित्रता उसी बाढ़ के जल में प्रवाहित हो जाती है और फिर एक दूसरे की जान के दुश्मन बन जाते हैं। लगता है कि देश में जिस तरह का राजनीतिक वातावरण बना हुआ है और भाजपा की विजय की अभी से भविष्यवाणी करने वालों की संख्या बढ़ रही है, शायद उसी के भय से आम आदमी पार्टी व कांग्रेस ने मिल कर भानुमती का कुनबा जुटाया है। देश के इतिहास में यह दूसरा चुनाव है जब भ्रष्टाचार को लेकर सरकार हावी है और विपक्षी दल रक्षात्मक मुद्रा में हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं पर तो काफी समय से इस तरह के केस चले आ रहे हैं परन्तु कट्टर ईमानदार अरविंद केजरीवाल व आप के कई बड़े नेताओं पर भी दिल्ली आबकारी घोटाले के छींटे पड़े हैं जो उन्हें बेचैन किए हुए हैं। आम आदमी पार्टी के कई नेता तो जेलों में कैद हैं और यहां तक कि उन्हें इन केसों में सर्वोच्च न्यायालय से जमानत तक नहीं मिल पा रही। ये वही केजरीवाल हैं जो सोनिया गांधी को मंच पर खड़े हो कर भ्रष्टाचारी बताते थे और दिल्ली की पूर्व कांग्रेसी मुख्यमंत्री दिवंगत शीला दीक्षित के कथित भ्रष्टाचार के सबूतों का पुलिंदा होने का दावा करते थे। दिल्ली विधानसभा चुनावों में उन्होंने दावा किया था कि सत्ता में आते ही इन सबको जेल की हवा खिलाई जाएगी। पर आज वही केजरीवाल कांग्रेस को परम मित्र बताते नहीं अघाते। पंजाब में भी भगवंत मान की सरकार ने आते ही कथित भ्रष्टाचार उन्मूलन अभियान चला कर एक दर्जन के करीब पूर्व कांग्रेसी मंत्रियों व विधायकों के यहां सतर्कता विभाग की छापामारी करवाई और कईयों को जेल में भेजा परन्तु वर्तमान में न जाने किस कारण से उनका यह अभियान केवल पटवारियों और कलर्कों तक सीमित हो कर रह गया। बड़े नेताओं के केस लम्बी तारीख पर डाल दिए गए हैं।

पंजाब के बड़े कांग्रेसियों के भ्रष्टाचार पर न केवल भगवंत मान बल्कि उनके मंत्रियों व नेताओं तक ने बोलना कम कर दिया। जैसे कि बताया जा चुका है कि विरोधी दलों से गठजोड़ होना कोई नई बात नहीं है परंतु किसी दो दलों में एक स्थान पर तो गठबंधन हो और दूसरी जगह पर एक-दूसरे से भिड़ते दिखें तो अतीत में ऐसा राजनीतिक उदाहरण दुर्लभ ही है। कहने को दोनों दल दावा करते हैं कि वे देश में लोकतंत्र व संविधान बचाने के लिए एक दूसरे के साथ आए हैं अगर ऐसा है तो इतने पवित्र यज्ञ में पंजाब को क्यों आहूति डालने से वंचित कर दिया ? देशवासी अब आम आदमी पार्टी व कांग्रेस दोनों से पूछ रहे हैं कि इस रिश्ते को क्या नाम दें ?

दिल्ली में कितना सफल होगा बीजेपी का दांव?

उमेश चतुर्वेदी

दिल्ली के अपने पाँच लोकसभा सदस्यों का टिकट काटकर भारतीय जनता पार्टी ने एक तरह से दिल्ली वालों को चौंका दिया है। पार्टी के इस कदम की आलोचना अगर आम आदमी पार्टी नहीं करती तो आश्चर्य होता। आम आदमी पार्टी चुटकी ले रही है कि क्या मान लिया जाए कि ये सांसद नकारा थे? कांग्रेस का सुर भी कुछ वैसा ही है। वैसे खुद बीजेपी के अंदरूनी हलके में भी पूछा जा रहा है कि आख़िर दिल्ली के दिग्गज डॉ हर्षवर्धन और रमेश बिधूड़ी के टिकट क्यों काटे गए? टिकट कटते ही डॉ हर्षवर्धन ने तो राजनीति से ही सन्यास की घोषणा कर दी जबकि बीजेपी का बड़ा वोट बैंक जाट समाज भी अपने नेता साहिब सिंह वर्मा के बेटे प्रवेश वर्मा को भी बदले जाने से दुखी हो सकता है।

दिल्ली में अरसे से माना जा रहा था कि नई दिल्ली की सांसद मीनाक्षी लेखी को ज़रूर बदला जाएगा। इसी तरह मनोज तिवारी भी दिल्ली बीजेपी के पारंपरिक पंजाबी, बनिया और स्थानीय आधार वोट बैंक के निशाने पर रहे। लेकिन जिस तरह उन्हें तवज्जो दी गई है, उससे साफ़ है कि पार्टी आलाकमान बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रवासियों के समर्थन के महत्व को समझने लगा है। इससे दिल्ली बीजेपी की राजनीति पर पारंपरिक रूप से प्रभावी रहे वर्ग को भी संदेश देने की कोशिश की गई है कि दिल्ली की बदली हुई डेमोग्राफ़ी को समझते हुए अपनी सोच बदलें। नई दिल्ली से मीनाक्षी की जगह पर बांसुरी स्वराज को मौक़ा देने का मतलब साफ़ है कि पार्टी केजरीवाल के सामने संयत और युवा नेतृत्व को उभारना चाहती है। रमेश बिधूड़ी और प्रवेश वर्मा की शिकायतें आलाकमान को मिलती रही हैं। दोनों के बारे में कहा जाता रहा है कि अपने क्षेत्र के एक वर्ग के लोगों से या तो वे मिलते नहीं थे या फिर उन्हें अनदेखा करते थे। रमेश बिधूड़ी संसद में अपनी बदज़ुबानी को लेकर विपक्षी निशाने पर भी रहे। उनकी छवि भी दबंग की रही है। हालाँकि उनकी जगह पर लाए गए रामवीर

विधूड़ी कभी जनता दल और फिर लोक ज़नशक्ति पार्टी में रहे हैं। बेशक आज वे बीजेपी में हैं लेकिन पार्टी का कोर कार्यकर्ता उन्हें उस तरह स्वीकार नहीं करता, जैसे पारम्परिक संघ पृष्ठभूमि के बीजेपी नेताओं को स्वीकार करता है। चुनाव अभियान के दौरान इस ओर भाजपा को विशेष ध्यान देना पड़ेगा। प्रवेश वर्मा के न रहने से अगर किसी ने राहत की सांस ली है तो वे हैं महाबल मिश्र जो अब आम आदमी पार्टी से उम्मीदवार हैं। वे खुद मान रहे थे कि प्रवेश वर्मा के चलते उनका चुनावी समर कठिन है।

चाँदनी चौक से जिन डॉ. हर्षवर्धन को हटाया गया है, वे दिल्ली बीजेपी के सर्वाधिक लोकप्रिय चेहरे रहे हैं। पार्टी की अंदरूनी राजनीति में उनकी अगुआई को दो-दो बार किनारे लगा दिया गया। टिकट कटने से वे निराश भी हैं। उन्होंने राजनीति से संन्यास का ऐलान भी कर दिया है। उनकी जगह जिन प्रवीण खंडेलवाल को चाँदनी चौक से उम्मीदवार बनाया गया है, वह भी विद्यार्थी परिषद के सदस्य रहे हैं। बनिया वर्ग के हैं और कारोबारियों में उनका असर भी है।

दिल्ली में इस बार बीजेपी का मुक़ाबला आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के गठबंधन से है। आम आदमी पार्टी ने अपने चार उम्मीदवार उतार दिए हैं, जबकि कांग्रेस ने अपने तीनों उम्मीदवारों का नाम घोषित नहीं किया है। पिछले आम चुनाव में बीजेपी ने हर सीट पर पचास प्रतिशत से ज़्यादा वोट हासिल किए थे। शायद यही वजह है कि पार्टी अपने उम्मीदवारों को बदलने का जोखिम उठा रही है। लेकिन ज़रूरी नहीं कि हर बार पिछले नतीजे दोहराए ही जायें, इसलिए हर पार्टी को ज़्यादा सावधान रहना होगा।

तीसरी बार सरकार बनाने को लेकर बीजेपी ने सारे घोड़े खोल रखे हैं। हर कार्यकर्ता को कम से कम 50 वोट बढ़ाने का ज़िम्मा दिया गया है। इसके बावजूद थोक में टिकट काटे जाने से भितरघात और अनदेखी का भी ख़तरा होगा। जिनके टिकट काटे गए हैं, खुले तौर पर भले ही अपना गुस्सा न जता रहे हों, लेकिन सच है कि वे गुस्से और क्षोभ से भरे हैं। बीजेपी इस नज़रिए से अपने लोगों को साधने की कोशिश कर ही रही होगी, लेकिन क्या होगा यह तो चुनाव परिणाम ही बतायेगा। वहीं काँग्रेस और आम आदमी पार्टी की कोशिश बीजेपी के अन्तर्विरोध को उभारने की है। उन्हें लगता है कि बीजेपी का अंतर्विरोध जितना उभरेगा, उतना ही उनके लिए फ़ायदेमंद होगा। लेकिन बीजेपी की छवि अनुशासित पार्टी की है, इसलिए सतह पर अंदरूनी असंतोष के आने की गुंजाइश कम ही है। बीजेपी को प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता और राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से उपजे समर्थन पर ज़्यादा भरोसा है, वहीं केजरीवाल को अपनी लोकलुभावन योजनाओं पर विश्वास है। हालाँकि जिस तरह के उम्मीदवार उन्होंने उतारे हैं, उनसे चुनावी समर में बहुत भरोसा नहीं जगता। कुछ जानकार तो यहाँ तक दावा कर रहे हैं कि केजरीवाल दिल्ली के नतीजे समझ गये हैं, इसलिए उनका पूरा फ़ोकस पंजाब पर है। जबकि कांग्रेस तो दिल्ली में लड़ती हुई भी नहीं दिख रही है। जबकि 2019 के चुनावों में वह दिल्ली की हर सीट पर दूसरे नंबर पर थी। जहां तक टिकट कटने पर नेताओं और समर्थकों में असंतोष की बात है तो यहां ध्यान रखना होगा कि बीजेपी कार्यकर्ताओं की एक ख़ासियत है कि वे आख़िर में पार्टी के साथ खड़े हो ही जाते हैं। इसलिए बीजेपी नेताओं को उम्मीद है कि वो दिल्ली में 2019 की जीत को ही दोहरायेंगे। कांग्रेस और आप के गठजोड़ को हराने के लिए बीजेपी को इस बार सवाई मेहनत करनी होगी। उन्हें अपना वोट प्रतिशत न सिर्फ बरकरार रखना होगा बल्कि उसे बढाना भी होगा। दिल्ली में नये उम्मीदवारों पर लगाया बीजेपी का दांव सफल होता है या असफल, वह इसी बात पर निर्भर करेगा।

भाजपा को आसानी से बहुमत मिलेगा या नहीं, चार राज्यों में कठिन चुनौती

अभय कुमार दुबे

भाजपा को आसानी से बहुमत मिलेगा या नहीं, यह बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक और बंगाल बताने वाला है। भाजपा रणनीतिक प्रबंधन में उस्ताद है। लेकिन इन चारों राज्यों में इस बार उसकी कड़ी परीक्षा होने वाली है। यहां विपक्ष के पास गणित भी है, और कुछ-कुछ रसायनशास्त्र भी है। इसीलिए यहां भाजपा की संगठन-संसाधन शक्ति दांव पर लगी है। ध्यान रहे 2019 में उत्तर प्रदेश के मैदान में भाजपा को सपा-बसपा गठबंधन का सामना करना पड़ा था। उस समय भी कोई केमिस्ट्री उसके साथ नहीं थी, इसलिए सामाजिक रूप से शक्तिशाली होते हुए भी वह मतदाताओं के सामने मोदी का विकल्प बन कर नहीं उभर पाया था। मोदी की हवा तेज थी, इसलिए उप्र में भाजपा के वोटों में 'खासा इजाफा' हो गया था। यह उस 'विफल' अंकगणित का ही परिणाम था कि अपनी संभावनाओं पर खरा न उतर पाने के बावजूद उस गठजोड़ ने एनडीए से दस सीटें छीन ली थीं। जाहिर है कि भाजपा भी जानती है कि बिना केमिस्ट्री की मैथमेटिक्स भी उसे परेशानी में डाल सकती है। भाजपा दो बड़े प्रदेशों में विपक्ष के मजबूत अंकगणित का सामना कर रही है। ये हैं बिहार और महाराष्ट्र। बिहार का महागठबंधन और महाराष्ट्र की महा विकास आघाड़ी दरअसल इंडिया गठबंधन के पहले से चल रहे हैं। उनके कदम अपने-अपने प्रदेश की जमीनों में जमे हुए हैं। इन राज्यों में मिला कर 88 सीटें हैं, और यहां भाजपा ने पिछली बार तकरीबन सौ फीसदी नतीजा निकाला था। इस बार स्वयं भाजपा के खाते में ये दोनों प्रदेश उसकी कमजोर कड़ियां हैं। इनकी मरम्मत करने के लिए भाजपा के रणनीतिकारों ने पहले जीतन राम मांझी और उपेंद्र कुशवाहा को महागठबंधन से छीना। हाल ही में नीतीश कुमार के पालाबदल से एक बारगी ऐसा लगा था कि शायद अब भाजपा विपक्षी तालमेल से आगे निकल जाएगी। लेकिन एक सर्वेक्षण के अनुसार ऐसा नहीं लगता। इसी तरह एक सर्वेक्षण से यह भी लगता है कि अभी भी महागठबंधन भाजपा को करारी टक्कर देने की स्थिति में लग रहा है। तेजस्वी यादव की जन-विश्वास यात्रा को वहां जबरदस्त सफलता प्राप्त हुई है। करीब 3500 किमी चलने के बाद जब उन्होंने पटना के गांधी मैदान में रैली की, तो वहां जिस तरह का विशाल नजारा बना। वह कह रहा था कि बिहार में भाजपा और एनडीए को नुकसान हो सकता है। इसके अलावा एक और पहलू है। भाजपा के लिए बिहार में टिकटों की हिस्सेदारी का फार्मूला निकालना भी मुश्किल हो रहा है। नीतीश को पिछली बार से कम सीटों पर राजी न कर पाने की सूरत में भाजपा के लिए छोटे दलों की मांग पूरी कर पाना कठिन हो रहा है। महाराष्ट्र की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है। वहां शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस को तोड़ देने क बावजूद भाजपा अभी तक जिताऊ स्थिति में नहीं आ पाई है। ये टूटी हुई पार्टियां लोकसभा चुनाव में कैसा प्रदर्शन करेंगी, इसे नापने का कोई बैरोमीटर नहीं है। समझा जाता है कि उद्धव ठाकरे को अभी भी शिवसेना के जनाधार की हमदर्दी प्राप्त है। इसी तरह से शरद पवार की एनसीपी के कदम अजित पवार के चले जाने के बावजूद अपने पारंपरिक इलाकों में जमे हुए हैं। वहां भी भाजपा अपने-आपको पीछे पाती है। बिहार की ही तरह वहां भी टिकटों का बंटवारा पेचीदा है।

तपस्या की प्रतिमूर्ति, प्रतिव्रता नारी माता सीता

माता सीता साक्षात् जगजंबा स्वरूपा जगत् जननी थीं। तपस्या की प्रतिमूर्ति, श्रीराम प्रिया, हरि वल्लभा, जनक दुलारी वह एक प्रतिव्रता नारी थी। वह प्रतिव्रता नारी के रूप में भारतीय संस्कृति में अद्वितीय नारी सम्राट का उच्च स्थान का उदाहरण निज जीवन से प्रस्तुत करती हैं। वह धरती से निकली थीं, पुन: जीवन लीला करके धरती में ही समा गईं। जीवन भर आदर्श व मर्यादा की राह पर चलती रहीं। जिस धनुष को दस हजार महारथी राजाओं ने हिला नहीं सका था, उसे माता सीता ने बचपन में ही घर को लीपते वक्त अपने बायें हाथ से उठा लिया था। उस धनुष को सिर्फ राजा जनक ही सिर्फ उठाने की क्षमता रखते थें। उस धनुष का नाम पिनाक था। राजा जनक को वह धनुष भगवान शिव ने प्रदान किया था। सीता के विवाह के लिए धनुष यज्ञ का आयोजन भी किया गया था। जिसमें देश-विदेश के दस हजार महारथी राजा पधारे थे। राजा जनक का संकल्प था कि जो इस धनुष को उठा लेगा, वही सीता का पति हो सकेगा। पौराणिक शास्त्रों के अनुसार देवी सीता मिथिला के राजा जनक की पुत्री व प्रभु श्रीराम की भार्या थीं। इसलिए उन्हें जनक पुत्री होने के नाते जानकी भी कहा जाता है। रामायण में भी माता सीता को जानकी कहकर संबोधित किया गया है। माता सीता को लक्ष्मी का अवतार माना जाता है, जिनका विवाह अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र और स्वंय भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्रीराम से हुआ था। विवाह के उपरांत माता सीता को भगवान राम के साथ 14 साल का वनवास झेलना पड़ा। हालांकि माता सीता के जन्म को लेकर कई पौराणिक कथाएं प्रचलित है। जिसके अनुसार कहा जाता है कि देवी सीता राजा जनक की गोद ली हुई पुत्री थीं, जबकि कहीं-कहीं इस बात का जिक्र भी मिलता है कि माता सीता लंकापति रावन की पुत्री थीं। आखिर सवाल उठता है कि माता सीता का जन्म कैसे हुआ था? प्रतिवर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि के दिनजानकी जयंती पर्व मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व दिन रविवार 3 मार्च 2024 को मनाया जा रहा है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार इसी दिन माता सीता का प्राकटय हुआ था। पौराणिक शास्त्रों के अनुसार पुष्य नक्षत्र के मध्याह्न काल में जब महाराजा जनक संतान प्राप्ति की कामना से यज्ञ की भूमि तैयार करने के लिए हल से भूमि जोत रहे थे, उसी समय पृथ्वी से एक बालिका का प्राकटय हुआ। जोती हुई भूमि तथा हल के नोक को भी 'सीता' कहा जाता है, इसलिए बालिका का नाम 'सीता' रखा गया था। अत: इस पर्व को 'जानकी नवमी' भी कहते हैं। इस दिन माता सीता के मंगलमय नाम 'श्री सीतायै नम:' और 'श्रीसीता-रामाय नम:' का उच्चारण करना लाभदायी रहता है। मान्यता है कि जो व्यक्ति इस दिन व्रत रखता है एवं राम-सीता का विधि-विधान से पूजन करता है, उसे 15 महान दोनों का फल, पृथ्वी दान का फल तथा समस्त तीर्थों के दर्शन का फल मिल जाता है। इस व्रत को विवाहित स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिए करती हैं। पौराणिक कथा 1.: वाल्मिकी रामायण के अनुसार एक बार मिथिला में पड़े भयंकर सूखे से राजा जनक बेहद परेशान हो गए थे, तब इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए उन्हें एक ऋषि ने यज्ञ करने और धरती पर हल चलाने का सुझाव दिया। ऋषि के सुझाव पर राजा जनक ने यज्ञ करवाया और उसके बाद राजा जनक धरती जोतने लगे। तभी उन्हें धरती में से सोने की खूबसूरत संदूक में एक सुंदर कन्या मिली। राजा जनक की कोई संतान नहीं थी, इसलिए उस कन्या को हाथों में लेकर उन्हें पिता प्रेम की अनुभूति हुई। राजा जनक ने उस कन्या को सीता नाम दिया और उसे अपनी पुत्री के रूप में अपना लिया। पौराणिक कथा 2.: माता सीता के जन्म से जुड़ी एक और कथा प्रचलित है जिसके अनुसार कहा जाता है कि माता सीता लंकापति रावण और मंदोदरी की पुत्री थी। इस कथा के अनुसार सीता जी वेदवती नाम की एक स्त्री का पुनर्जनम थी। वेदवती विष्णु जी की परमभक्त थी और वह उन्हें पति के रूप में पाना चाहती थी। इसलिए भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए वेदवती ने कठोर तपस्या की। कहा जाता है कि एक दिन रावण वहां से निकल रहा था, जहां वेदवती तपस्या कर रही थी और वेदवती की सुंदरता को देखकर रावण उस पर मोहित हो गया। रावण ने वेदवती को अपने साथ चलने के लिए कहा। लेकिन वेदवती ने साथ जाने से इंकार कर दिया। वेदवती के मना करने पर रावण को क्रोध आ गया और उसने वेदवती के साथ दुर्व्यवहार करना चाहा। रावण के स्पर्श करते ही वेदवती ने खुद को भस्म कर लिया और रावण को श्राप दिया कि वह रावण की पुत्री के रूप में जन्म लेंगी और उसकी मृत्यु का कारण बनेंगी। कुछ समय बाद मंदोदरी ने एक कन्या को जन्म दिया। लेकिन वेदवती के श्राप से भयभीत रावण ने जन्म लेते ही उस कन्या को सागर में फेंक दिया। जिसके बाद सागर की देवी वरूणी ने उस कन्या को धरती की देवी पृथ्वी को सौंप दिया और पृथ्वी ने उस कन्या को राजा जनक और माता सुनैना को सौंप दिया।

महाशिवरात्रि के मौके पर जरूर पढ़नी चाहिए यह व्रत कथा

हिंदू धर्म में महाशिवरात्रि के पर्व का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन भगवान शिव की विशेष रूप से पूजा-अर्चना किए जाने का विधान है और शिवलिंग का अभिषेक किया जाता है। इस दिन भगवान शिव और पार्वती माता के विवाह की कथा जरूर पढ़नी चाहिए।

हिंदू धर्म में महाशिवरात्रि के पर्व का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन भगवान शिव की विशेष रूप से पूजा-अर्चना किए जाने का विधान है और शिवलिंग का अभिषेक किया जाता है। शास्त्रों के मुताबिक फाल्गुन माह की महाशिवरात्रि को भगवान शिव और मां पार्वती का विवाह हुआ था। इसी उपलक्ष्य में हर साल इस तिथि पर महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है।

ऐसे में महाशिवरात्रि के मौके पर भगवान शिव की पूजा के अलावा शिव-पार्वती विवाह व्रत कथा जरूर पढ़नी व सुननी चाहिए। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको भगवान शिव और पार्वती माता के विवाह की कथा के बारे में बताने जा रहे हैं। इस व्रत कथा को पढ़ने से दांपत्य जीवन खुशहाल रहता है और भगवान शिव की कृपा व आशीर्वाद प्राप्त होता है।

महाशिवरात्रि की व्रत कथा

माता सती प्रजापति दक्ष की पुत्री थीं। वह भगवान शिव को बेहद पसंद करती थीं और उनको पति के रूप में पाना चाहती थीं। लेकिन जब उन्होंने इस बारे में अपने पिता प्रजापति दक्ष को बताया तो दक्ष ने भगवान शिव का अपमान किया और विवाह के लिए मना कर दिया। लेकिन माता सती ने पिता के खिलाफ जाकर भगवान शिव से विवाह कर लिया। जिस पर उनके पिता दक्ष काफी ज्यादा नाराज हुए और अपनी पुत्री का हमेशा के लिए त्याग कर दिया। एक बार प्रजापति ने महायज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में सभी देवी-देवताओं और ऋषियों-मुनियों को आमंत्रित किया गया। लेकिन भगवान शिव और माता सती को प्रजापति ने यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया। आमंत्रण न मिलने पर भी माता सती ने पिता के घर जाने की जिद की और भगवान शिव की आज्ञा से वह यज्ञ में पहुंच गईं। जहां पर प्रजापति ने भगवान शिव को अपशब्द कहते हुए अपमानित किया। पति के बारे में पिता द्वारा किए गए अपमान को माता सती सह न सकीं और क्रोध में आकर उन्होंने यज्ञ कुंड में अपने शरीर को त्याग दिया। फिर अगले जन्म में माता सती ने पार्वती के रूप में हिमालय राज के घर जन्म लिया। लेकिन इस जन्म में भगवान शिव ने उनसे विवाह करने के लिए मना कर दिया। क्योंकि माता पार्वती मानवीय शरीर में बंधी थीं। महादेव द्वारा विवाह के लिए मना करने के बाद माता पार्वती ने घोर तपस्या की। बता दें कि भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए माता पार्वती ने 12,000 वर्षों तक अन्न-जल त्याग कर तपस्या की। उनके कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने माता पार्वती को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। जिस दिन भगवान शिव-शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ, उसे महाशिवरात्रि के तौर पर मनाया जाने लगा। धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव बारात लेकर माता पार्वती के घर पहुंचे थे और विवाह संपन्न किया था। महाशिवरात्रि के दिन जो भी जातक भगवान शिव और माता पार्वती की यह व्रत कथा सुनता है उसके विवाह में आने वाली बाधा दूर होती है और दांपत्य जीवन खुशहाल होता है।

जगत् माता जानकी श्री राम प्रिया की जयंती

तपस्या की प्रतिमूर्ति, जनक दुलारी जगत् माता जानकी श्रीराम प्रिया की पावन जयंती का त्यौहार-उत्सव संपूर्ण भारत में भक्ति, उल्लास, उत्साह व श्रद्धा के साथ मनाने की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। यह पर्व मां जानकी के जन्म दिवस के रूप में जाना जाता है। वैशाख मास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि को जानकी-जयंती के रूप में मनाया जाता है, परंतु भारत के कुछ क्षेत्रों में फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी को मां जानकी की जयंती के रूप में भी मनाने की परंपरा रही है, जानकी जयंती 3 मार्च रविवार को है। इस तिथि को सीताष्टमी के नाम की भी संज्ञा दी जाती है। इसका वर्णन निर्णय सिंधु में है। मां सीता शक्ति, इच्छा-शक्ति तथा ज्ञान-शक्ति तीनों रूपों में प्रकट होती हैं। वह परमात्मा की शक्ति स्वरूपा हैं। प्रभु श्रीराम की प्रिया व आदर्श लीला सहचरी हैं। राजा जनक को माता सीता खेत में हल जोतने के क्रम में एक कलश में बालिका के रूप में मिली। वह धरती की कोख से उत्पन्न हुई और प्रभु श्रीराम प्रिया के रूप में आदर्श नारीत्व का लीला प्रदर्शन करके पुन: धरती की कोख में समा गई। सीता मॉ का चरित्र सभी के लिये मार्गदर्शक रहा है और आज भी प्रासंगिक है, सीता उपनिषद् जो कि अथर्ववेदीय शाखा से संबंधित उपनिषद है। जिसमें सीता जी की महिमा एवं उनके स्वरूप को व्यक्त किया गया है। इसमें सीता को शाश्वत शक्ति का आधार बताया गया है तथा उन्हें ही प्रकृति में परिलक्षित होते हुए देखा गया है। सीता जी को प्रकृति का स्वरूप कहा गया है तथा योगमाया रूप में स्थापित किया गया है। सीता जी ही प्रकृति हैं। वही प्रणव और उसका कारक भी हैं। शब्द का अर्थ अक्षरब्रह्म की शक्ति के रूप में हुआ है। यह नाम साक्षात 'योगमाया' का है। देवी सीता जी को भगवान श्रीराम का साथ प्राप्त है, जिस कारण वह विश्वकल्याणकारी हैं। सीता जी जगत-माता हैं और श्री राम को जगत-पिता बताया गया है। एकमात्र सत्य यही है कि श्रीराम ही बहुरूपिणीमाया को स्वीकार कर विश्वरूप में भासित हो रहे हैं और सीता जी ही वही योगमाया है। वाल्मीकि रामायण में तथा वेद-उपनिषदों में सीता के स्वरूप का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। ऋग्वेद में एक स्तुति के अनुसार कहा गया है कि असुरों का नाश करने वाली सीता जी आप हमारा कल्याण करें। गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार पुत्रवधू, पत्नी और मां के रूप में उनका आदर्श रूप सभी के लिए पूजनीय रहा है। सीता जयंती के उपलक्ष्य पर भक्तगण उपासना करते हैं। परम्परागत ढंग से श्रद्धापूर्वक पूजन अर्चन किया जाता है। सीता जी की विधि-विधान पूर्वक आराधना की जाती है। सुबह स्नान आदि से निवृत होकर माता सीता व श्री राम जी की पूजा-उपासना करनी चाहिए। पूजन में चावल, जौ, तिल आदि का प्रयोग करना चाहिए। इस व्रत को करने से सौभाग्य, सुख व संतान की प्राप्ति होती है। मॉ सीता लक्ष्मी का रूप हैं। इस कारण इनके निमित किया गया व्रत परिवर में सुख-समृद्धि और धन की वृद्धि करने वाला होता है। एक अन्य मत के अनुसार माता का जन्म क्योंकि भूमि से हुआ था, इसलिए वे अन्नपूर्णा कहलाती है। माता जानकी का व्रत करने से उपासक में त्याग, शील, ममता और समर्पण जैसे गुण आते हैं। धर्मग्रंथो के मुताबिक इसी दिन सीता माता का जन्म राजा जनक के घर हुआ था। शास्त्रों के अनुसार जब राजा जनक संतान प्राप्ति के लिए वैशाख मास के शुक्ल पक्ष नवमी में जब यज्ञ के लिए भूमि की जोताई कर रहे थे, तब उसी समय पृथ्वी से कन्या प्रगट हुई। जोति हुई भूमि और हल के नोख को सीता कहा जाता है, जिसके कारण उस प्रगट हुई कन्या का नाम सीता रखा गया, इस दिन को हिंदू धर्म में बहुत ही अच्छा मुहूर्त माना जाता है और इस दिन दान पुण्य करने की भी परंपरा है। वैष्णव समाज के भक्त इस दिन माता सीता का नियमित व्रत रखते हैं और पूजा-पाठ करते हैं। ऐसी मान्यता है कि जो भी इस दिन व्रत रखता है और माता सीता के साथ-साथ भगवन राम की भी पूजा करता है, उसे सोलह महान दान का फल और तमाम धर्मिक स्थानों का लाभ एक साथ मिल जाता है, इसी कारण इस दिन को अत्यन्त शुभकारी माना गया है। सीता माता के विषय में रामायण में उल्लेख मिलता है कि मिथला के राजा जनक के राज्य में कई वर्षों से वर्षा नही हुई थी, इस बात से राजा जनक बहुत चिंतित होकर ऋषि-मुनियों से विचार किया तो ऋषियों ने विचार दिया कि यदि राजा जनक अगर खेत में स्वयं हल चलाए तो भगवान इंद्र की जरूर कृपा होगी। माना जाता है कि आज के समय में बिहार में स्थित सीममढ़ी का पुनौरा नमक गॉव ही वह जगह है, जहा राजा जनक ने हल चलाया था। हल चलते समय हल एक धातु से टकराया। तब राजा जनक ने वहां पर खुदाई करने को कहा और जब वहां पर खुदाई हुई तो वहां से एक कलश मिला, और उस कलश में से एक कन्या मिली। राजा जनक निसंतान थे तो उन्होने उस कन्या को ईश्वर की कृपा समझकर अपनी बेटी के रूप में स्वीकार कर लिया और उस कन्या का नाम सीता रखा, हल की नोक से टकराकर प्रगट होने की वजह से उस कन्या का नाम सीता रखा गया।

राशि अनुसार करना चाहिए ज्योतिर्लिंग की पूजा, बरसने लगेगी महादेव की कृपा

भगवान शिव पूरे भारत देश में 12 जगहों पर ज्योति के स्वरूप में विराजमान हैं। इन भगवान शिव की इन ज्योति स्वरूप को 12 ज्योतिर्लिंग के नाम से भी जाना जाता है। ऐसे में राशि अनुसार ज्योतिर्लिंग की पूजा करने से विशेष फल प्राप्त होता है। भोलेनाथ आसानी से अपने भक्तों से प्रसन्न हो जाते हैं। भगवान शंकर की कृपा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने राशि अनुसार ज्योतिर्लिंग की पूजा करनी चाहिए। ऐसे करने से व्यक्ति के जीवन में शांति और खुशहाली का आगमन होता है। भगवान शिव को भोलेनाथ भी कहा जाता है। भोलेनाथ आसानी से अपने भक्तों से प्रसन्न हो जाते हैं। वहीं कुछ लोग भगवान शिव की कृपा पाने के लिए सोमवार का व्रत करते हैं और विधि-विधान से शिवलिंग की पूजा करते हैं। आपको बता दें कि भगवान शिव पूरे भारत देश में 12 जगहों पर ज्योति के स्वरूप में विराजमान हैं। इन भगवान शिव की इन ज्योति स्वरूप को 12 ज्योतिर्लिंग के नाम से भी जाना जाता है। ऐसे में भगवान शंकर की कृपा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने राशि अनुसार ज्योतिर्लिंग की पूजा करनी चाहिए। ऐसे करने से व्यक्ति के जीवन में शांति और खुशहाली का आगमन होता है।

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग

गुजरात राज्य के सौराष्ट्र नगर में अरब सागर के तट पर 12 ज्योतिर्लिंगों में से सबसे पहला ज्योतिर्लिंग स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग को सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है। मेष राशि के जातकों को इस ज्योतिर्लिंग की पूजा करनी चाहिए। वहीं सोमनाथ ज्योतिर्लिंग का पंचामृत से अभिषेक करने से मेष राशि के जातकों को विशेष लाभ मिलता है।

शैल मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

शैल मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले में श्री शैलम नाम के पर्वत पर स्थित है। वृषभ राशि के जातकों को इस शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए। वहीं मिथुन राशि के जातकों को जीवन में कम से कम एक बार इस शिवलिंग के दर्शन जरूर करना चाहिए।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के उज्जैन में स्थित है। यह बारह फेमस ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मिथुन राशि के जातकों को इस ज्योतिर्लिंग की पूजा करनी चाहिए। वहीं भगवान शिव की कृपा पाने के लिए मंत्र जाप करना चाहिए।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

मध्यप्रदेश के इंदौर में नर्मदा नदी के पास ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है। कर्क राशि के जातकों को इस शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए। इससे आपको विशेष लाभ मिल सकता है।

बैजनाथ ज्योतिर्लिंग

झारखंड के देवघर में बारह ज्योतिर्लिंगों में से बैजनाथ ज्योतिर्लिंग स्थित है। सिंह राशि के जातकों के लिए इस शिवलिंग की पूजा विशेष फलदायी मानी जाती है।

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र से थोड़ी दूर सहाद्रि नामक पर्वत पर भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग स्थित है। कन्या राशि के जातकों को इस ज्योतिर्लिंग का दूध से अभिषेक करना चाहिए। ऐसा करने से इच्छाओं और मनोकामना की पूर्ति होती है।

रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग

रामेश्वर ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित है। साथ ही यह चार धामों में से एक माना जाता है। तुला राशि के जातकों को इस शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए। इससे इस राशि के जातकों का दांपत्य जीवन सुखमय बना रहता है।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का नंबर 10वें स्थान पर आता है। यह ज्योतिर्लिंग गुजरात के द्वारका में स्थित है। वृश्चिक राशि के जातकों को इस शिवलिंग की पूजा करने के साथ ही शमी और बेलपत्र अर्पित करने चाहिए। इससे जीवन में लाभ देखने को मिलेगा।

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग में से वाराणसी का काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग भी शामिल है। धनु राशि के जातकों को इस शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करना चाहिए। ऐसा करने से इस राशि के जातकों के सभी कष्ट दूर हो सकते हैं।

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र के नासिक से कुछ पर ब्रह्म गिरि नामक पर्वत के पास श्री त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है। मकर राशि के जातकों को गंगाजल में गुड़ मिलाकर शिवलिंग का अभिषेक करना चाहिए। इससे मकर राशि के जातकों को भगवान शिव की कृपा प्राप्त होगी।

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। केदारनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड की मंदाकिनी तट पर स्थित है। कुंभ राशि के जातकों के लिए इस ज्योतिर्लिंग की पूजा बेहद लाभकारी मानी गई है। कुंभ राशि के जातकों को केदारनाथ ज्योतिर्लिंग का पंचामृत से अभिषेक करना चाहिए।

घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में घृणेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है। यह भगवान शिव-शंकर के 12 ज्योतिर्लिंग में से एक है। मीन राशि के जातकों के लिए इस ज्योतिर्लिंग की पूजा बेहद खास महत्व रखती है। इच्छापूर्ति के लिए मीन राशि के जातकों को दूध में केसर डालकर शिवलिंग का अभिषेक करना चाहिए।

इस बार होली पर करें ये 5 उपाय, मिलेगी सफलता, मनोकामना भी होगी पूरी

मार्च के महीने की शुरुआत हो चुकी है। धार्मिक दृष्टि से यह महीना बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इस माह में कई प्रमुख व्रत और त्योहार मनाए जाते हैं। खासतौर पर होली जैसा बड़ा पर्व इस माह में मनाया जाता है। दरअसल, होली हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक है और फाल्गुन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की रात को होलिका दहन किया जाता है। इस दौरान घरों में गुझिया और पकवान बनाए जाते हैं। सभी एक दूसरे को रंग लगाते हुए होली की शुभकामनाएं देते हैं। होली पर विधिनुसार पूजा करने का भी विधान है। वहीं कुछ लोग पारिवारिक समस्याओं से निजात पाने के लिए कुछ उपाय भी करते हैं। अगर आपके जीवन में लंबे समय से परेशानियां और संकट बने हुए हैं, तो आप इस बार होली पर कुछ उपाय की सहायता से उनसे छुटकारा पा सकते हैं। आइए उन उपायों के बारे में जानते हैं। होलिका दहन के दिन नारियल के गोले में बुरा भरकर होलिका की अग्नि में डाल दें। ऐसा करने से आपकी आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर हो सकती है। होलिका दहन वाली जगह पर आप नारियल, सुपारी और पान भेंट कर दें। माना जाता है कि ऐसा करने से आपकी नौकरी से जुड़ी समस्या दूर हो सकती है। साथ ही परिवार में खुशियां बनी रहेगी। होलिका दहन होने के बाद आप उसकी लकड़ी की राख को अपने घर लाएं।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

लोकसभा चुनाव की घोषणा 14 या 15 मार्च को होने की संभावना

नईदिल्ली। बहुप्रतीक्षित लोकसभा 2024 चुनाव की तारीखों की घोषणा 14 या 15 मार्च को होने की संभावना है। सूत्रों ने बताया कि चुनाव 2019 की तरह सात चरणों में हो सकते हैं और पहले चरण के लिए मतदान अप्रैल के दूसरे सप्ताह में हो सकता है। 14 या 15 मार्च से आदर्श आचार संहिता लागू होने की संभावना है। दो प्रमुख गठबंधन, एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) और इंडिया (भारतीय राष्ट्रीय विकासात्मक समावेशी गठबंधन), आगामी चुनावों में बहुमत हासिल करने के लिए एक भयंकर लड़ाई के लिए तैयार हो रहे हैं। आयोग पिछले कुछ महीनों से तैयारियों का आकलन करने के लिए सभी राज्यों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओ) के साथ नियमित बैठकें कर रहा है। अधिकारियों ने बताया कि सीईओ ने समस्या वाले क्षेत्रों, ईवीएम की आवाजाही, सुरक्षा बलों की उनकी आवश्यकता, सीमाओं पर कड़ी निगरानी को सूचीबद्ध किया है।

भाजपा में शामिल हुए कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोढवाडिया

गांधीनगर। गुजरात के वरिष्ठ नेता अर्जुन मोढवाडिया, अंबरीश डेर और अन्य जिन्होंने सोमवार को कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया – राज्य भाजपा प्रमुख सीआर पाटिल की उपस्थिति में भाजपा में शामिल हुए। गुजरात कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अर्जुन मोढवाडिया ने 4 मार्च को राज्य विधानसभा से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने अपना इस्तीफा विधानसभा अध्यक्ष को सौंप दिया है। वह पोरबंदर से विधायक हैं। वह विधानसभा में विपक्ष के नेता भी थे। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को भी पत्र लिखकर पार्टी से अपने इस्तीफे की जानकारी दी। उन्होंने सबसे पुरानी पार्टी के साथ अपना लगभग चार दशक का रिश्ता खत्म कर दिया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को लिखे पत्र में, मोढवाडिया ने राम मंदिर में राम लला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल नहीं होने के पार्टी नेतृत्व के फैसले का हवाला दिया और कहा कि वह अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के लिए योगदान करने में असमर्थ हैं।

नीतीश ने विधान परिषद के लिए दाखिल किया नामांकन

पटना। बिहार विधान परिषद की 11 रिक्त सीटों के लिए नामांकन प्रक्रिया सोमवार से शुरू हो गई है। नामांकन के पहले दिन किसी भी प्रत्याशी ने नामांकन दाखिल नहीं किया है। वहीं, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मंगलवार को अपना नामांकन फॉर्म दाखिल कर दिया है। वह लगातार चौथी बार विधान परिषद के सदस्य चुने जायेंगे। विधान परिषद के इस द्विवार्षिक चुनाव में जेडीयू को दो सीटें मिलेंगी। पहली सीट से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उम्मीदवार होंगे। वहीं दूसरी सीट से मौजूदा सदस्य खालिद अनवर ने भी पर्चा भर दिया है। बता दें कि बिहार विधान परिषद चुनाव के लिए चार मार्च से नामांकन शुरू हो चुका है। नामांकन की अंतिम तिथि 11 मार्च निर्धारित की गयी है। नामांकन पत्रों की जांच 12 मार्च को जबकि नाम वापस लेने की अंतिम तिथि 14 मार्च निर्धारित की गयी है। आवश्यक हुआ तो 21 मार्च को मतदान कराया जायेगा।

कोर्ट ने नोटिस अवेहलना के लिए सोरेन को समन जारी किया

रांची। रांची की एक अदालत ने जेल में बंद झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को कथित तौर पर जमीन हथियाने के मामले से जुड़ी धनशोधन की जांच में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा जारी किए नोटिस की अवज्ञा का दोषी पाए जाने पर उन्हें अगले महीने पेश होने को कहा है। ईडी ने यह कहते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के वरिष्ठ नेता के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी थी कि वह उन्हें जारी किए सात समन के बावजूद जांच में शामिल नहीं हुए। उन्हें सबसे पहली बार पिछले साल 14 अगस्त को समन भेजा गया था। ईडी ने अपनी शिकायत में कहा कि सोरेन के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 174 (लोक सेवक के आदेश का पालन न करना) के तहत मुकदमा चलाया जाना चाहिए। जांच एजेंसी ने सोरेन (48) से रांची में उनके आधिकारिक आवास पर दूसरे चरण की पूछताछ के बाद 31 जनवरी को धनशोधन के आरोपों में गिरफ्तार कर लिया था।

प्रधानमंत्री का 7 मार्च को कश्मीर में बड़ी रैली

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष रविंदर रैना ने कहा कि इस सप्ताह कश्मीर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली में लगभग 2 लाख लोग शामिल होंगे। रैना ने कहा कि मेगा रैली श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में होने वाली है, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भीड़ को संबोधित करेंगे। इस आयोजन में लगभग 2 लाख लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि कश्मीर के लोग 7 मार्च की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देखने और सुनने के अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। कश्मीर में सार्वजनिक रैली महत्वपूर्ण महत्व रखती है क्योंकि यह कश्मीर घाटी में आगामी लोकसभा चुनावों के लिए भारतीय जनता पार्टी के चुनाव अभियान की शुरुआत का प्रतीक है। नरेन्द्र मोदी के बृहस्पतिवार को बख्शी स्टेडियम में एक जनसभा को संबोधित करने के कार्यक्रम के मद्देनजर सुरक्षाबलों को चौकन्ना रहने को कहा गया है।

प्रधानमंत्री ने तेलंगाना के संगारेड्डी में 7,200 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया

बीआरएस और कांग्रेस के बीच गठबंधन नहीं, बल्कि घोटालाबंधन है : मोदी

हैदराबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मौजूदा तेलंगाना की कांग्रेस सरकार और बीआरएस पर हमला करते हुए कहा कि दोनों के बीच गठबंधन नहीं घोटालाबंधन है। दोनों ही प्रदेश के लोगों का एटीएम का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जब से सत्ता में आई है, उसके बाद से बीआरएस पार्टी के द्वारा किसी भी भ्रष्टाचार से जुड़े दस्तावेजों की जांच नहीं करवाई है, क्योंकि उन्हें डर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को तेलंगाना के संगारेड्डी में 7,200 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया।

पीएम मोदी ने परिवारवाद पर हमला करते हुए कहा कि उन्हें भी टिप मिली, लेकिन उन्होंने उसका खुद इस्तेमाल न कर उसकी नीलामी की। उससे मिले लगभग 150 करोड़ रुपए से गरीबों के विकास और उनकी स्थिति में सुधार हो, उसके लिए काम किया। लेकिन इन परिवारवादी पार्टियों कालाधन छुपाने के लिए विदेशों में अपने अकाउंट खुलवाएं। उन्होंने आगे कहा कि मोदी का परिवार देश है और उसकी खातिर उन्होंने योजना के द्वारा गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाएं हैं। पीएम ने बताया कि ये परिवारवादी पार्टियों ने देश की खादानें बेंची, जमीनें बेची, आकाश बेचा, देश को बरबाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

प्रधानमंत्री ने कहा, मोदी ने देश को बचाने और बनाने के लिए, आपका भविष्य बनाने के लिए, जमीन, आकाश और पाताल ही नहीं, दिन-रात एक कर दी और वो लोग मोदी का परिवार नहीं होने की बात कर रहे हैं। वे भूल रहे हैं कि 140 करोड़ देशवासी मोदी का परिवार है। देश की हर माता, देश की हर बहन मोदी का परिवार, देश का हर नौजवान, बेटा और बेटी मोदी का परिवार है। कांग्रेस और इंडी गठबंधन वालों को अंदाजा नहीं है, करोड़ों लोग उन्हें अपने परिवार का सदस्य मानते हैं और इसलिए आज करोड़ों परिवार एक आवाज में कह रहे हैं वो हैं मोदी का परिवार। तेलंगाना के लोग कर रहे नेने मोदी कुटुम्बकम।

प्रधानमंत्री ने तेलंगाना में रैली को संबोधित करते हुए

कहा कि आज देश सबका साथ सबका विश्वास, सबका प्रयास की राह पर चल रहा है। हम हर प्रदेश का विकास चाहते हैं। उन्होंने ये भी कहा आप लोगों के सपने मोदी का संकल्प है, महिला, गरीब और किसानों का उद्धार हमारी सरकार की प्राथमिकता है। नल से जल से आयुष्मान योजना तक, सबसे ज्यादा लाभ महिलाओं को हुआ है। उन्होंने कहा कि अभी तक 70 वर्ष में ऐसा काम नहीं हुआ, मुद्रा योजना का लाभ देकर करोड़ों दलित बच्चों का सपना पूरा किया।

परिवारवाद के खिलाफ आवाज उठा रहा हूं

संगारेड्डी में एक सार्वजनिक सभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत पूरी दुनिया में आशा की नई किरण बनकर उभरा है। पीएम मोदी ने कहा, आप सब जानते हैं कि मोदी जो कहते हैं वो करते हैं। मैंने कहा था कि हम भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। आज आप देख सकते हैं कि भारत पूरी दुनिया में आशा की नई किरण बनकर उभरा है।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमने जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 के अंत की बात कही थी। ये वादा बीजेपी ने पूरा करके दिखाया। हमने कहा था कि हम सब मिलकर अयोध्या के भव्य मंदिर में भगवान राम का स्वागत करेंगे। ये वादा पूरा हुआ। मोदी की गारंटी पूरी हुई। उन्होंने कहा कि आज जब मोदी आपसे और आपके परिवार को दी गई गारंटी को पूरा करने में लगा है, तो कांग्रेस और उसके साथी मोदी को और मोदी के परिवार को गाली देने पर उतर आए हैं। इसका कारण है - क्योंकि मैं इनके सैंकडों हजारों रुपयों के घोटालों की पोल खोल रहा हूं। मैं इन लोगों के परिवारवाद के खिलाफ आवाज उठा रहा हूं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जब मैं परिवारवाद का विरोध करता हूं, जब मैं कहता हूं कि परिवारवाद लोकतंत्र के लिए खतरा है, तो ये लोग जवाब नहीं देते बल्कि उल्टा कहते हैं कि मोदी का कोई परिवार ही नहीं है। कांग्रेस और उसके गठबंधन सहयोगी मोदी पर व्यक्तिगत टिप्पणियां कर रहे हैं। उनके दर्शन मात्र से ही वे बेचैन हो जाते हैं, इसका कारण यह है कि मैं उनके रहस्यों और घोटालों का उद्घाटन कर रहा हूँ। मैं कभी किसी पर व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं करता, बस इतना कहता हूं कि वे परिवारवादी हैं।

उन्होंने कहा कि मैं परिवारवाद की निंदा करता हूं क्योंकि यह लोकतंत्र के लिए खतरा है, यह प्रतिभा को बढ़ने नहीं देता है और देश के साथ-साथ व्यक्तियों के विकास में बाधा डालता है। विपक्ष पर वार करते हुए मोदी ने कहा कि वो कहते हैं - फैमिली फर्स्ट, मोदी कहता है - राष्ट्र फर्स्ट। उनके लिए उनका परिवार भी सबकुछ है। मेरे लिए देश का हर परिवार सबकुछ है। इन्होंने अपने परिवार के हितों के लिए देशहित को बलि चढ़ा दिया। मोदी ने देशहित के लिए खुद को खपा दिया है।

मोदी ने तेलंगाना में 7,200 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को संगारेड्डी में 7,200 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इन परियोजनाओं में सड़क, रेल, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे कई प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने हैदराबाद में नागरिक उड्डयन अनुसंधान संगठन (सीएआरओ) केंद्र राष्ट्र को समर्पित किया। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने इसे नागरिक उड्डयन क्षेत्र में अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) गतिविधियों को और बेहतर करने के लिए हैदराबाद के बेगमपेट हवाई अड्डे पर स्थापित किया है।

संदिग्ध लेनदेन को छिपाने एसबीआई का ढाल के रूप में इस्तेमाल कर रही है सरकार: खरगे

नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मंगलवार को आरोप लगाया कि सरकार अपने संदिग्ध लेनदेन को छिपाने और चुनावी बॉन्ड से संबंधित उच्चतम न्यायालय के फैसले को नाकाम बनाने के लिए भारतीय स्टेट बैंक का ढाल के रूप में उपयोग कर रही है। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने राजनीतिक दलों द्वारा भुनाए गए प्रत्येक चुनावी बॉन्ड के विवरण का खुलासा करने के लिए 30 जून तक समय बढ़ाने का सोमवार को उच्चतम न्यायालय से अनुरोध किया। पिछले महीने अपने फैसले में उच्चतम न्यायालय ने एसबीआई को छह मार्च तक निर्वाचन आयोग को विवरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया था।

चुनावी बांड विवरण का खुलासा करने के लिए अधिक समय की मांग करने वाली भारतीय स्टेट बैंक की सुप्रीम कोर्ट में याचिका पर प्रतिक्रिया करते हुए कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंगलवार को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार पर अपने कथित संदिग्ध लेनदेन को छिपाने के लिए बैंक का उपयोग करने का आरोप लगाया।

खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, मोदी सरकार चुनावी बॉन्ड के माध्यम से अपने संदिग्ध लेनदेन को छिपाने के लिए हमारे देश के सबसे बड़े बैंक को ढाल के रूप में उपयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने चुनावी बॉन्ड की मोदी सरकार की काला धन रूपांतरण योजना को असंवैधानिक , आरटीआई का उल्लंघन और अवैध करार देते हुए रद्द कर दिया था और एसबीआई को 6 मार्च तक दाता विवरण प्रस्तुत करने के लिए कहा था, लेकिन भाजपा चाहती है कि इसे लोकसभा चुनाव के बाद किया जाए। उनके मुताबिक, इस लोकसभा का कार्यकाल 16 जून को खत्म होगा और एसबीआई 30 जून तक डेटा साझा करना चाहता है।

खरगे ने आरोप लगाया कि भाजपा इस फर्जी योजना की मुख्य लाभार्थी है। उन्होंने सवाल किया, क्या मोदी सरकार आसानी से भाजपा के संदिग्ध सौदों को नहीं छिपा रही है, जहां राजमार्गों, बंदरगाहों, हवाई अड्डों, बिजली संयंत्रों आदि के अनुबंध इन अपारदर्शी चुनावी बॉन्ड के बदले मोदी

जी के करीबियों को सौंप दिए गए थे? खरगे ने कहा, विशेषज्ञों का कहना है कि दानदाताओं की 44,434 स्वचालित डेटा प्रविष्टियों को केवल 24 घंटों में प्रकट और मिलान किया जा सकता है, फिर इस जानकारी को एकत्रित करने के लिए एसबीआई को 4 महीने और क्यों चाहिए? उनके अनुसार, कांग्रेस पार्टी का स्पष्ट रुख रहा है कि चुनावी बॉन्ड योजना अपारदर्शी, अलोकतांत्रिक और समान अवसर को नष्ट कर देने वाली थी।

खरगे ने आरोप लगाया, मोदी सरकार, प्रधानमंत्री कार्यालय और वित्त मंत्री ने भाजपा का खजाना भरने के लिए हर संस्थान - आरबीआई, चुनाव आयोग, संसद और विपक्ष पर बुलडोजर चला दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि अब हताश मोदी सरकार उच्चतम न्यायालय के फैसले को विफल करने के लिए एसबीआई का उपयोग करने की कोशिश कर रही है।

कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट को एसबीआई को चुनावी बांड पर अपनी चालाकी से बच निकलने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। आम चुनाव से पहले लोगों को पता होना चाहिए कि किसने किससे क्या प्राप्त किया और क्या इसमें प्रथम दृष्टया कोई बदले की भावना शामिल थी? एक्स पर एक पोस्ट में राहुल गांधी ने कहा था कि नरेंद्र मोदी ने %चंदा कारोबार% को छुपाने के लिए पूरी ताकत लगा दी है। जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि चुनावी बांड के बारे में सच्चाई जानना देश के लोगों का अधिकार है, तो फिर एसबीआई क्यों नहीं चाहता कि यह जानकारी चुनाव से पहले सार्वजनिक की जाए?

खेल
प्रमुख समाचार

जायसवाल तोड़ सकते हैं गावस्कर का ऐतिहासिक रिकॉर्ड

धर्मशाला। भारत और इंग्लैंड के बीच पांचवां और आखिरी टेस्ट मुकाबला धर्मशाला में सात मार्च से शुरू होने वाला है। टीम इंडिया के स्टार युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल के पास इस मैच में इतिहास रचने का मौका है। इस युवा बल्लेबाज ने अब तक हुए चार मुकाबलों में दो में दोहरा शतक जड़ा है। इस समय वह सीरीज के टॉप स्कोरर भी हैं। उन्होंने अब तक चार मुकाबलों में 655 रन बना लिए हैं। उनके पास महान सुनील गावस्कर सहित कई और बड़े क्रिकेटरों का रिकॉर्ड तोड़ने का मौका है। सबसे पहले तो वह 700 रन का आंकड़ा पार करने वाले दूसरे भारतीय बन सकते हैं। ऐसा करने वाले पहले और एक मात्र भारतीय बल्लेबाज सुनील गावस्कर हैं। उन्होंने दो बार यह कारनामा किया है। दोनों बार सुनील गावस्कर ने यह रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के खिलाफ बनाया है।

यशस्वी जायसवाल के पास एक टेस्ट सीरीज में किसी भारतीय बल्लेबाज द्वारा सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड तोड़ने का भी मौका है। यह रिकॉर्ड भी सुनील गावस्कर के नाम पर है। उन्होंने 1971 में वेस्टइंडीज के खिलाफ एक सीरीज में ऐतिहासिक 774 रन बनाए थे। उस सीरीज में गावस्कर ने 65, 67, 116, 64, 117*, 124 और 220 रनों की पारी खेली थी। वह केवल एक पारी में एक रन के स्कोर पर आउट हुए थे। इस रिकॉर्ड को तोड़ने के लिए जायसवाल को 120 रनों की और जरूरत है।

रांची में खेले गए चौथे टेस्ट में जायसवाल ने 73 रनों की पारी खेली और वह एक टेस्ट सीरीज में 600 या अधिक रन बनाने वाले पांचवें भारतीय बल्लेबाज बन गए। इस युवा खिलाड़ी ने इंग्लैंड के खिलाफ चल रही मौजूदा सीरीज के चार मुकाबलों में अब तक 93 157 की औसत से 655 रन बनाए हैं। इसमें बैक टू बैक दो दोहरा शतक शामिल है।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

शेयर बाजार की तेजी पर लगा ब्रेक, सेंसेक्स 195 अंक टूटा

नईदिल्ली। ग्लोबल मार्केट में नरमी और आईटी शेयरों में मुनाफावसूली के कारण हफ्ते के दूसरे कारोबारी दिन यानी मंगलवार को शेयर बाजार में लगातार चार सत्रों से जारी तेजी पर ब्रेक लग गया। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 195 अंक कमजोर हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 49 अंक की गिरावट दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स क्रमशः 0.17 फीसदी और 0.63 फीसदी कमजोर होकर बंद हुए। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 195.16 अंक यानी 0.26 फीसदी की गिरावट के साथ 73,677.13 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में आज 73,412.25 और 73,915.54 के रेंज में कारोबार हुआ। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के निफ्टी में भी 49.30 अंक यानी 0.22 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 22,356.30 अंक पर बंद हुआ।

बजाज जल्द ही लॉन्च करेगी पहली सीएनजी बाइक

नईदिल्ली। देश के ऑटो सेक्टर की मजबूत प्लेयर बजाज अब सेक्टर में अपना दबदबा कायम रखने के लिए एक और रिकॉर्ड बनाने की तैयारी में हैं। जल्द ही बजाज पहला सीएनजी बाइक लॉन्च करने की तैयारी में हैं। इस बारे में जानकारी दी है कंपनी के एमडी राजीव बजाज ने। राजीव बजाज ने मंगलवार को दिए एक इन्टरव्यू में इस प्लान के बारे में बताया। बजाज ने कहा कि कंपनी अगली तिमाही में दुनिया की पहली सीएनजी बाइक लॉन्च करेगी। इंटरव्यू में बजाज ने कहा कि, बजाज सीएनजी मोटरसाइकिल वही कर सकती है जो हीरो होंडा ने किया और वह है ईंधन की लागत को आधा करना। उन्होंने आगे बताया कि ईंधन लागत और परिचालन लागत में 50 से 65 फीसदी की कमी आई है। आईसीई वाहनों की तुलना में उत्सर्जन स्तर कम था।

बिक्री में नरमी के चलते फरवरी में सर्विस सेक्टर की ग्रोथ सुस्त

नईदिल्ली। कारोबारी गतिविधियों, बिक्री और नौकरियों में नरमी के चलते भारत में फरवरी में सेवा क्षेत्र की वृद्धि सुस्त पड़ गई। एक मासिक सर्वेक्षण में मंगलवार को यह बात कही गई। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया सेवा व्यवसाय गतिविधि सूचकांक फरवरी में 60.6 रहा, जो इससे पहले जनवरी में 61.8 था। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से अधिक अंक का अर्थ है कि गतिविधियों में विस्तार हो रहा है, जबकि 50 से कम अंक संकुचन को दर्शाता है। एचएसबीसी की अर्थशास्त्री इनेस लैम ने कहा, भारत की सेवा पीएमआई से पता चलता है कि सेवा क्षेत्र में विस्तार की गति जनवरी के मुकाबले फरवरी में कम हो गई है। सर्वेक्षण के मुताबिक फरवरी में व्यावसायिक गतिविधि सूचकांक में कमी आई, लेकिन ऐतिहासिक रूप से यह मजबूत बना रहा।

आईईएक्स पर फरवरी में ऊर्जा कारोबार 15.4% बढ़ा

नईदिल्ली। भारतीय ऊर्जा बाजार (आईईएक्स) ने सोमवार को बताया कि उसके मंच पर फरवरी में सकल ऊर्जा कारोबार सालाना आधार पर 15.4 प्रतिशत बढ़कर 946.2 करोड़ यूनिट हो गया। आईईएक्स ने एक बयान में कहा कि फरवरी 2024 के दौरान एक दिन बाद की खरीद में औसत बाजार कीमत 4.93 रुपये प्रति यूनिट थी। यह राशि सालाना आधार पर 26 प्रतिशत कम थी। बयान के मुताबिक समीक्षाधीन महीने में एक्सचेंज पर बिक्री बोलियां (एक दिन बाद की खरीद और तत्काल खरीद) सालाना आधार पर 47 प्रतिशत बढ़ीं। आईईएक्स ने फरवरी 2024 में कुल 946.2 करोड़ यूनिट का कारोबार हासिल किया, जो सालाना आधार पर 15.4 प्रतिशत अधिक है। एक दिन बाद की खरीद (डीएएम) की मात्रा पिछले महीने 472.2 करोड़ यूनिट थी, जबकि पिछले वर्ष इसी महीने में यह 466.4 करोड़ यूनिट थी।

आर्थिक वृद्धि दर ने साबित किया मोदी का नेतृत्व देश के काम आया

प्रह्लाद सबनानी

वित्तीय वर्ष 2023-24 की तृतीय तिमाही के दौरान सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर ने भारत सहित विश्व के समस्त आर्थिक विश्लेषकों को चौंका दिया है। इस दौरान, भारत में सकल घरेलू उत्पाद में 8.4 प्रतिशत की वृद्धि हासिल हुई है जबकि प्रथम तिमाही के दौरान वृद्धि दर 7.8 प्रतिशत एवं द्वितीय तिमाही के दौरान 7.6 प्रतिशत की रही थी। पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान वृद्धि दर 4.4 प्रतिशत रही थी। साथ ही, क्रेडिट रेटिंग संस्थान इकरा ने इस वर्ष तृतीय तिमाही में 6 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान एवं भारतीय स्टेट बैंक ने भी 6.9 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान जताया था। कुल मिलाकर, लगभग समस्त वित्तीय संस्थानों के अनुमानों को झुठलाते हुए सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 8.4 प्रतिशत की रही है।

हम सभी के लिए हर्ष का विषय तो यह है कि विनिर्माण इकाईयों की वृद्धि दर 4.8 प्रतिशत से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2023-24 की तृतीय तिमाही में 11.6 प्रतिशत हो गई है तथा निर्माण के क्षेत्र में वृद्धि दर 9.5 प्रतिशत की रही है। साथ ही, खनन के क्षेत्र में वृद्धि दर 1.4 प्रतिशत से बढ़कर 7.5 प्रतिशत की रही है। यह तीनों ही क्षेत्र रोजगार सृजन के क्षेत्र माने जाते हैं। अतः देश में अब रोजगार के नए अवसर भी निर्मित हो रहे हैं। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयों में वृद्धि दर आकर्षक रही है। कृषि का क्षेत्र जरूर, विपरीत मानसून एवं अल नीनो के प्रभाव के चलते, विपरीत रूप से प्रभावित हुआ है एवं कृषि के क्षेत्र में वृद्धि दर 0.2 प्रतिशत ऋणात्मक रही है। हालांकि वित्तीय वर्ष 2019-20 से लेकर 2022-23 तक कृषि के क्षेत्र में औसत वृद्धि दर 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष से अधिक की रही है। परंतु, प्रकृति के आगे तो

किसी की चलती नहीं है।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के तृतीय तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद के विशेष रूप से उद्योग क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र में वृद्धि दर के आंकड़ों को देखकर तो अब यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भारत आगे आने वाले वर्षों में 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की विकास दर हासिल करने की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है एवं अगले लगभग 4 साल के अंदर ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, वर्तमान में भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। साथ ही, भारतीय शेयर बाजार भी बाजार पूंजीकरण के मामले में वर्तमान में विश्व में चौथे स्थान से तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा। क्योंकि, भारत में आर्थिक विकास की तीव्र गति को देखते हुए विदेशी निवेशक एवं विदेशी निवेश संस्थान, दोनों ही भारतीय पूंजी बाजार में अपने निवेश को निश्चित ही बढ़ाएंगे।

भारत में वित्तीय वर्ष 2023-24 की तृतीय तिमाही में अनुमानों से कहीं अधिक वृद्धि दर हासिल करने के पीछे दरअसल हाल ही के समय में आर्थिक क्षेत्र के साथ साथ सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तन भी मुख्य भूमिका निभाते नजर आ रहे हैं, इस ओर सामान्यतः विदेशी अर्थशास्त्रियों एवं वित्तीय संस्थानों का ध्यान शायद नहीं जा रहा है। हालांकि केंद्र सरकार द्वारा आर्थिक क्षेत्र में लगातार किए जा रहे सुधारों के चलते एवं पूंजीगत खर्च में लगातार की जा रही बढ़ोतरी से भी भारतीय अर्थव्यवस्था को गति मिल रही है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में केंद्र सरकार द्वारा 10 लाख करोड़ रुपए की राशि इस मद पर खर्च की गई है जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में इस मद पर 7.5 लाख करोड़ रुपए की राशि खर्च की गई थी। वहीं वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट में पूंजीगत खर्च की राशि को बढ़ाकर 11.11 लाख करोड़ रुपए कर दिया गया है। दूसरे, भारत में कर (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) के संग्रहण में भी अपार सुधार दिखाई दे रहा है। कर ढांचे को आसान बनाकर सम्बंधित नियमों के अनुपालन में सुधार कर, कर संग्रहण में 20 प्रतिशत के आसपास की वृद्धि हासिल की गई है। देश में अनौपचारिक क्षेत्र भी तेजी से औपचारिक क्षेत्र में बदल रहा है, इससे कर संग्रहण के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी औपचारिक क्षेत्र में अधिक निर्मित हो रहे हैं तथा विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों को अतिरिक्त आर्थिक लाभ मिलते दिखाई दे रहे हैं।

भाजपा की मैराथन बैठक में सभी 11 लोकसभा सीट जीतने बना मास्टर प्लान

जनता के बीच रहना और जनता की सेवा करना है: नबीन

सभी 11 लोकसभा सीटें भाजपा की झोली में डालनी है: जम्वाल

प्रदेश में भाजपा के पक्ष में जबर्दस्त सकारात्मक वातावरण : किरण

रायपुर। छत्तीसगढ़ में बीजेपी ने आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर आज राजधानी स्थित बीजेपी कार्यालय कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में मंत्रीगण और लोकसभा प्रत्याशियों समेत विभिन्न समितियों की मैराथन बैठक खत्म हो गई है.

इस बैठक के दौरान भाजपा के प्रदेश सह प्रभारी नितिन नबीन ने लोकसभा क्लस्टर प्रभारी-सहप्रभारी, लोकसभा प्रभारी-सहप्रभारी, लोकसभा संयोजक-सहसंयोजक, चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक-सहसंयोजक, लोकसभा विस्तारकों, लोकसभा प्रत्याशियों की बैठक लेकर आगामी लोकसभा चुनाव के लिए कमर कसकर परिश्रम करने का आह्वान किया है. बैठक में प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जम्वाल और प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय ने भी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों का मार्गदर्शन किया. प्रदेश सह प्रभारी नबीन ने इस दौरान कहा कि आगामी चुनाव में पार्टी के चुनावी प्रबंधन में कोई कसर बाकी नहीं रखें और प्रदेश की सभी 11 लोकसभा सीटों पर भाजपा का कमल खिलाने के लिए कृत-संकल्पित हों. इसके लिए योजनाएं बनाने के साथ-साथ उनके समयबद्ध क्रियान्वयन पर भी बहुत ज्यादा ध्यान देना है. प्रबंधन समिति के 36 विभागों में आपसी समन्वय पर भी उन्होंने बल दिया.

प्रदेश सह प्रभारी नबीन ने बैठक के बाद कहा कि हम लोगो को एक ही मंत्र मिला है. जनता के बीच रहना और जनता की सेवा करना है. हमारे देश के प्रधानमंत्री प्रधान सेवक बनकर जिस प्रकार से देश की सेवा की है. कही न कही वहीं कारण है कि आज देश में पहली बार दस साल सरकार रहने के बाद सरकार के पक्ष में पूरा माहौल नज़र आ रहा है. भाजपा ने समर्पण भाव से ग़रीब, महिला, किसान और युवाओं के प्रति चिंता की है. इसीलिए आज पूरे देश में बीजेपी का सकारात्मक वातारण दिख रहा है. उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ के सभी 11 लोकसभा प्रत्याशियों को क्षेत्र से बुलाकर फीडबैक लिया गया है. एक-एक लोकसभा को लेकर पार्टी की रणनीति पर चर्चा हुई है. हमारी मंडल, बूथ, लोकसभा कार्यालय सभी पूरी तरह से तैयार हो चुकें है. होली के पहले और उसके बाद तक पूरी रणनीति बना ली गई है. भाजपा 24*7 काम भी करती है, और हर वक्त चुनाव के लिए तैयार भी रहती है. हम लोकतंत्र के महापर्व को मानते है. हमारा एक-एक कार्यकर्ता इस महापर्व से जुड़ा होता है. कांग्रेस अब किस मुँह से जनता के बीच जाएगी. इनके पास महादेव एप, शराब घोटाले, महिला उत्पीड़न जैसे कारनामे है. आज जनता के बीच इनके पास जाने के लिए कुछ भी नहीं है.

प्रदेश संगठन महामंत्री और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस दौरान आगामी 30 मार्च तक दीवार लेखन, प्रतिदिन 10 लाभार्थी परिवारों से और 200 लाभार्थियों से मुलाकात, हर घर में झंडा अभियान की विस्तार से चर्चा करते हुए इन कार्यक्रमों को पूर्ण करने का आग्रह किया. इसके अलावा उन्होंने विकसित भारत संकल्प सुझाव संग्रहण अभियान के तहत 15 मार्च तक प्रबुद्ध नागरिकों से सुझाव एकत्रित करने के बारे में भी बताया.

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने बैठक के दौरान कहा कि प्रदेश में भाजपा के पक्ष में जबर्दस्त सकारात्मक वातावरण है और इसलिए किसी भी प्रकार के अति आत्मविश्वास से बचते हुए कार्यकर्ता केंद्रीय और प्रदेश फाजपा नेतृत्व द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों को समय पूरी गंभीरता के साथ पूर्ण करें. पार्टी के सभी नेताओं, पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं पर यह बड़ी जिम्मेदारी है कि प्रदेश की सभी 11 सीटों पर भाजपा को जिताकर प्रधानमंत्री मोदी को भेंट करें.

क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जम्वाल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि पिछली कमियों को दूर करके अब लोकसभा चुनाव में सभी 11 लोकसभा सीटें भाजपा की झोली में डालनी है. भाजपा की गठित सभी समितियों के सुझाव लेने और आने वाली दिक्कतों से पार पाने के उपाय बताने के साथ ही उन्होंने सभी समितियों के कार्यों और पार्टी के कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तार से चर्चा की.

आज भाजपा की मेराथन बैठकों के क्रम में सबसे पहले लोकसभा क्लस्टर प्रभारी-सहप्रभारी, लोकसभा प्रभारी-सहप्रभारी, लोकसभा संयोजक-सहसंयोजकों की बैठक हुई। इसके पश्चात नैरेटिव टीम और सबसे अंत में प्रदेश सरकार के मंत्रियों, लोकसभा प्रत्याशियों बैठक में भाजपा प्रदेश सह प्रभारी नितिन नबीन, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष किरण सिंह देव, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जम्वाल, प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, मंत्री केदार कश्यप, ओपी चौधरी, लखन लाल देवांगन, लक्ष्मी राजवाड़े, श्याम बिहारी जायसवाल, रामविचार नेताम, प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव, रामजी भारती, भरतलाल वर्मा, जगदीश रामू रोहरा, सभी लोकसभा प्रत्याशी सरोज पांडेय, विजय बघेल, संतोष पांडेय, महेश कश्यप, भोजराज नाग, रूपकुमारी चौधरी, तोखन साहू, कमलेश जांगड़े, राधेश्याम राठिया, चिंतामणि महाराज, सहित भाजपा पदाधिकारी बैठक में मौजूद रहे एवं प्रबंधन समिति की बैठक हुई.

मेरी बात

✍ गिरीश पंकज

मोदी का परिवार

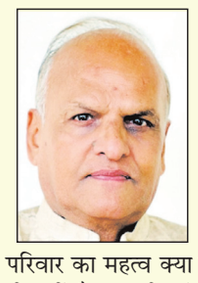

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने विपक्षियों के हर आरोप पर पल भर में मुंहतोड़ जवाब देने की क्षमता रखते हैं । कहने का मतलब यह है कि अगर विपक्षी डाल-डाल है तो मोदी जी पात - पात हो जाते हैं ।अभी हाल ही में लालू यादव ने अपने एक भाषण में कहा कि मोदी बार-बार परिवारवाद परिवारवाद करते हैं, लेकिन उनका तो कोई परिवार ही नहीं है । वे परिवार का महत्व क्या जाने । लालू ने यह भी कहा कि मोदी तो हिंदू ही नहीं है। उनकी मां का जब निधन हुआ तो उन्होंने मुंडन में नहीं करवाया,दाढ़ी भी नहीं कटवाई। लालू यादव को करारा जवाब देते हुए मोदी जी ने कहा कि देश के 140 करोड लोग मेरा परिवार है। मोदी के उस कथन का समर्थन करते हुए भारतीय जनता पार्टी के तमाम प्रमुख नेताओं ने अपनी सोशल मीडिया की प्रोफाइल के साथ टैगलाइन %मेरा परिवार% जोड़ दिया । मोदी के एक इशारे पर देश भर के तमाम भाजपा नेता खड़े होकर उनके समर्थन में उतर आए कि मोदी का परिवार मतलब देश के 140 करोड़ लोगों का परिवार। मोदी ने यह कहा कि देश के तमाम लोग मेरे अपने परिजन हैं इसलिए मुझे अपने परिवार की अलग से ज़रूरत नहीं। मेरा परिवार बहुत बड़ा परिवार है ।ऐसा कहकर प्रधानमंत्री ने लालू यादव की बोलती बंद कर दी। हालांकि यह एक मुहावरा है कि बोलती बंद कर दी। लेकिन विपक्षी लगातार कुछ न कुछ बोलते रहेंगे, क्योंकि आने वाले लोकसभा चुनाव में उनको मोदी जी की छवि धूमिल करने का काम है करना है । मोदी जी ने अबकी बार 400 पार का नारा देकर जन मन में इस बात को पुख्ता कर दिया है कि हो सकता है इस बार एनडीए 400 पार कर जाए । और इधर भाजपा 370 का आंकड़ा लेकर कमर कस चुकी है। हालांकि यह लक्ष्य एक बड़ी चुनौती है क्योंकि जब तक दक्षिण भारत में कमल खेलने की संख्या नहीं बढ़ेगी, इस आंकड़े तक पहुंच पाना कठिन काम होगा। यही कारण है कि मोदी जी दक्षिण भारत का लगातार दौरा कर रहे हैं ।वहां अनेक परियोजनाओं का शिलान्यास कर रहे हैं । इसका जनमानस पर अच्छा असर पड़ेगा और उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा कम से कम 40-50 सीटों तक तो पहुंचेगी। अभी दक्षिण में कुल 129 सीटों में भाजपा को केवल 29 सीट ही मिल पाई है । वैसे बाकी राज्यों में भाजपा की पकड़ काफी मजबूत है। वहां 248 सीटों में उसे 220 सीटें हैं। अब यह आंकड़ा और अधिक कैसे बढ़े, इसकी जुगत में भारतीय जनता पार्टी पूरी मेहनत कर रही है। सर्वाधिक मेहनत प्रधानमंत्री कर रहे हैं। उनके साथ गृहमंत्री अमित शाह भी बड़ी भूमिका में है। इन दोनों के कारण पूरे देश में भाजपा कार्यकर्ता भी प्राणपण से मेहनत कर रहे हैं कि इस बार के चुनाव में उन्हें पिछले आंकड़ों से बहुत ज्यादा सफलता अर्जित करनी है। इस बीच प्रधानमंत्री ने विपक्षी नेताओं को मुंहतोड़ जवाब देते हुए 140 करोड़ जनता को अपना परिवार बताकर अपने पक्ष में अनुकूल वातावरण बना लिया है । निसंदेह इसका लाभ भारतीय जनता पार्टी को मिलेगा ही मिलेगा।

भाजपा के 11 लोकसभा प्रत्याशियों ने छग में 'मैं हूं मोदी का परिवार' कैंपेन किया लॉन्च

हम देश की जनता को मानते हैं अपना परिवार: पांडेय

रायपुर. छत्तीसगढ़ में भाजपा के 11 लोकसभा प्रत्याशियों ने छत्तीसगढ़ में मैं हूं मोदी का परिवार कैंपेन को लॉन्च किया है. कैंपेन को लेकर सांसद संतोष पाण्डेय का बयान सामने आया है. उन्होंने कहा, प्रदेश की जनता से बीजेपी ने चुनाव से पहले वादा किया था, सीएम हाउस में जाने से पहले लोगों को पक्का मकान देंगे. बीजेपी पूरे प्रदेश को अपना परिवार मानती है. जो आरोप लगाते हैं, उनके पास सिर्फ परिवारवाद है. आगे उन्होंने परिवारवाद को लेकर कहा, आरोप लगाने वालों के विषय पर ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है. जिनके पास केवल नाम भर का है, वह परिवारवाद की बात करते हैं. जिनके पास परिवार नहीं है, वह वासुदेव कुटुम्बकम की बात करते हैं. पूरी वसुधा की बात हम करते हैं. हम देश की जनता को अपना परिवार मानते हैं.

पीसीसी चीफ पर करारा हमला- इतना ही नहीं दीपक बैज के परिवारवाद के बयान पर विजय बघेल ने हमला बोला है. उन्होंने कहा, जो लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते वह ऐसी बात करते हैं. 140 करोड़ जनता परिवार है, यह कहना बड़ी बात है. बड़े से बड़े और छोटे से छोटे व्यक्ति की चिंता कहने वाला व्यक्ति ही कह सकता. पूरे विश्व ने यह माना है. पीएम मोदी कांग्रेस को समझना नहीं चाहते. वे इसलिए कहते हैं कि पत्थर फेंके या ईंट फेंके, पत्थर और ईंटों का भारत मां के नींव के पत्थर के रूप में एक मजबूत विश्व का निर्माण करूंगा.

पर्यावरण संरक्षण के लिए रणनीति बनाकर करना होगा काम : साय

मुख्यमंत्री ने दो दिवसीय ''छत्तीसगढ़ क्लाइमेट चेंज कॉन्क्लेव 2024'' का किया शुभारंभ

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि जलवायु परिवर्तन पूरे विश्व के लिए विकराल समस्या है। जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के कारण अनियमित वर्षा, लंबे समय तक सूखा, चक्रवाती वर्षा, वर्षा ऋतु के समय में परिवर्तन जैसी चुनौतियां पूरी दुनिया के साथ ही देश और प्रदेश के सामने भी हैं। इससे निपटने के लिए हमें रणनीति तय कर प्रकृति को बचाने और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करना होगा। मुख्यमंत्री आज राजधानी रायपुर के एक निजी होटल में दो दिवसीय ''छत्तीसगढ़ क्लाइमेट चेंज कॉन्क्लेव 2024'' को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित कर कॉन्क्लेव का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। ज्यादा सुख-सुविधाओं की ओर बढ़ रहे है। जिससे असंतुलन की स्थिति बनती है, विसंगतियां आती हैं। जलवायु परिवर्तन की चुनौती के समाधान के उपायों के संबंध में वर्ष 2015 में पेरिस समझौता किया गया था। जिसमें 196 देश शामिल हैं और अपने पर्यावरण को बचाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वैश्विक समस्या के समाधान के लिए हम सब मिलकर प्रयास करेंगे तो जरूर सफल होंगे।

उन्होंने ''छत्तीसगढ़ क्लाइमेट चेंज कॉन्क्लेव 2024'' के आयोजन के लिए प्रदेश के वन विभाग और छत्तीसगढ़ स्टेट सेंटर फॉर क्लाइमेट चेंज के अधिकारियों-कर्मचारियों बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने में प्रदेश की भूमिका और भविष्य की कार्ययोजनाओं के लिए यह कार्यशाला मील का पत्थर साबित होगी।

शिक्षक पद की ऑनलाइन काउंसिलिंग 7 तक

रायपुर। शिक्षक सीधी भर्ती 2023 में शिक्षक पद हेतु अभ्यर्थियों की पंचम चरण की ऑनलाईन काउंसिलिंग 6 मार्च 2024 दोपहर 3 बजे से 7 मार्च 2024 रात्रि 10 बजे तक स्कूल शिक्षा विभाग की वेबसाईट https://eduportal.cg.nic.in/ में प्रारंभ की जा रही है। उक्त काउंसिलिंग में व्यापम की परीक्षा परिणाम के अनुसार शिक्षक पद के कटऑफ रैंक की विस्तृत जानकारी विभाग के पोर्टल https://eduportal.cg.nic.in/ पर देखी जा सकती है।

उप संचालक लोक शिक्षण संचालनालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस काउंसिलिंग में कुल 1021 अभ्यर्थियों को शामिल किया गया है। शालाओं के आबंटन पश्चात् अभ्यर्थियों का दस्तावेज सत्यापन आबंटित संभाग के कार्यालय संयुक्त संचालक, शिक्षा संभाग, बस्तर/सरगुजा में किया जायेगा।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

चिंतामणि महराज बताएं कि ईडी के आरोप सही है या गलत?

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि सरगुजा से भाजपा प्रत्याशी बनाए गए चिंतामणि महाराज यह बताएं कि ईडी के द्वारा तथाकथित कोल परिवहन घोटाले मे 5 लाख लेने का जो आरोप लगाया गया है वह सही है या गलत? सरगुजा में भाजपा के घोषित प्रत्याशी चिंतामणि महाराज तथाकथित भ्रष्टाचार का आरोप लगने के बाद हाल ही में विधानसभा चुनाव के पूर्व ही भाजपा ज्वाइन किया और उसके बाद अब सरगुजा लोकसभा सीट से भाजपा के प्रत्याशी घोषित किए गए इसका तात्पर्य यह है कि सरगुजा संभाग में भारतीय जनता पार्टी के योग्य नेता और कार्यकर्ताओ का अभाव है या उनपर भरोसा नहीं है। भाजपा के षडयंत्रों और राजनैतिक एजेंडे को ईडी आईटी अंजान दे रही है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भय और लालच देकर अपना कुनबा बढ़ाना ही भाजपा का राजनैतिक चरित्र है। विपक्षी दलों के नेताओं के खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसियों ईडी, आईटी, सीबीआई को आगे कर मुकदमा दर्ज किया जाता है, दबाव बनाया जाता है, जेल भेजा जाता है, लेकिन जैसे ही वह नेता भाजपा में शामिल हो जाता है तब उसके खिलाफ सारी कार्यवाहियां रोक दी जाती है।

साय 7 मार्च को करेंगे महतारी वंदन योजना का शुभारंभ

रायपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2024 के अवसर पर रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय 7 मार्च 2024 को महतारी वंदन योजना का शुभारंभ कर पात्र हितग्राहियों के खाते में राशि अंतरित करेंगे। इस दौरान हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र प्रदान किया जाएगा। कार्यक्रम में अन्य जिलों के हितग्राही वर्चुअली जुड़ेंगे, जिनसे मुख्यमंत्री संवाद करेंगे। मुख्यमंत्री श्री साय बाल विवाह मुक्त अभियान की शुरूआत करेंगे। इस कार्यक्रम स्थल की तैयारियों का निरीक्षण करने के लिए आज साइंस कॉलेज मैदान में महिला एवं बाल विकास विभाग की सचिव श्रीमती शम्मी आबिदी, संचालक श्रीमती तुलिका प्रजापति, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह और नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा समेत अधिकारी गण पहुंचे। उन्होंने अधिकारियों को सुरक्षा, पार्किंग समेत अन्य आवश्यक निर्देश दिए । उल्लेखनीय है कि महतारी वंदन योजना के तहत करीब 70 लाख पात्र हितग्राहियों को राशि उनके बैंक खाते में ऑनलाईन डीबीटी के माध्यम से अंतरित किए जाएंगे।

ननि रायपुर का बकाया अनिवार्य निधि देने प्रमोद ने साव को लिखा पत्र

रायपुर। रायपुर नगर निगम के पूर्व महापौर एवं वर्तमान अध्यक्ष प्रमोद दुबे ने नगरीय प्रशासन मंत्री श्री अरुण साव को पत्र लिखकर रायपुर नगर निगम को जो राशि अनिवार्य रूप से दिया जाना है, को शीघ्र जारी करने की मांग की है। दुबे ने कहा है कि 2023-24 के बार लाइसेंस की राशि 11 करोड़ 42 लाख 2022-23 के मुद्रांक शुल्क की राशि 45 करोड़ 44 लाख पार्षद महापौर निधि का लगभग 4 करोड़ इस प्रकार लगभग 62 करोड़ की राशि जो जनवरी में प्राप्त हो जाना था अभी तक प्राप्त नहीं होने के कारण सभी विकास के कार्य ठप्प पड़ चुके हैं । चुनाव के पूर्व जो काम शुरू हुए थे उन्हें भी आधे बीच में रोक दिया गया है. दुबे ने कहा है कि चुनाव आचार संहिता 4 दिसंबर को खत्म होने के बाद भी 200 करोड़ की अधोसंरचना की राशि भी रोक दी गई है । नगर निगम के इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी रकम को रोकना रायपुर की जनता के साथ अन्याय है। इसके विपरीत जो 70 विकास कार्य जिसमें अति अनिवार्य कार्य मुख्य रूप से नालों के निर्माण तथा सड़कों से संबंधित है उनके टेंडर लग चुके थे तथा समिति द्वारा अप्रूवल भी हो चुका था उन सारे कार्यों को रोक दिया गया है।

बैज के खिलाफ लखमा ने खोला मोर्चा

रायपुर। विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद शायद अब कांग्रेस नेता यह मानकर चल रहे हैं कि उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं है,तभी तो वे दिल्ली जाकर वे पार्टी आलाकमान की मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। कोई भी सीट ऐसी नहीं हैं जहां पर एक नाम तय हो सके। यहां तक कि प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज के नाम पर बस्तर के ही वरिष्ठ विधायक कवासी लखमा ने मोर्चा खोल दिया है,कुछ पूर्व विधायकों व नेताओ को लेकर वे दिल्ली पहुंच गए हैं और हरीश लखमा को टिकट देने की मांग कर रहे हैं। दो टूक कह दिया है कि जो विधानसभा नहीं जीत पाए वह लोकसभा क्या जीतेंगे? वहीं कोरबा सांसद ज्योत्सना महंत के नाम का भी अब विरोध होने लगा है। पूर्व मुख्यमंत्री व कुछ हारे हुए मंत्रियों पर आलाकमान दबाव बना रही है कि वे चुनाव लड़े। जैसे तैसे कांग्रेस को छत्तीसगढ़ से कुछ सीट की उम्मीद है इसलिए वह हर सीट व हर नाम पर गहन विचार कर रही है। लेकिन छत्तीसगढ कांग्रेस के नेता है कि खुलकर विरोध और समर्थन पर उतर आए हैं। सूबे में कांग्रेस नेताओं की खेमेबंदी ने टिकट को लेकर घमासान मचा दिया है। ऐसे में टिकट मिल भी गई तो जीतने की गारंटी कौन लेगा?

मुख्यमंत्री बताये राजीव भवन की सुरक्षा क्यों हटाई गई?

रायपुर। राजीव भवन कांग्रेस मुख्यालय से सुरक्षा हटाए जाने पर आपत्ति करते हुए प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी महामंत्री मलकीत सिंह गेंदू ने इसे भाजपा सरकार की राजनीतिक द्वेष के चलते दुर्भावना पूर्ण कार्यवाही करार दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश नक्सल प्रभावित क्षेत्र है भाजपा सरकार बनने के बाद नक्सली एवं अपराधिक गतिविधियां बढ़ी हुई है ऐसे में राजीव भवन में सुरक्षा बढ़ाने के बजाय वहां की सुरक्षा को हटा देना एक गंभीर षड्यंत्र की ओर इशारा कर रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी महामंत्री मलकीत सिंह गेंदू ने पुलिस अधीक्षक रायपुर को पत्र लिखकर राजीव भवन में तत्काल सुरक्षा व्यवस्था बहाली कर अनुरोध किया है। प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी महामंत्री मलकीत सिंह गेंदू ने कहा कि आसन्न लोक सभा चुनाव को लेकर कांग्रेस के केंद्रीय नेताओं का लगातार छत्तीसगढ़ आगमन हो रहा है राजीव भवन में लगातार बैठकर हो रही है। आखिर बीजेपी कांग्रेस नेताओं के सुरक्षा के साथ खिलवाड़ क्यों कर रही है? प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को बताना चाहिए राजीव भवन की सुरक्षा क्यों हटाई गई है? पूर्व रमन सरकार के दौरान 2013 में कांग्रेस के परिवर्तन यात्रा को पर्याप्त सुरक्षा नहीं दिया गया था.

खेलकूद, चित्रकला, सलाद सजाओं जैसे विविध प्रतियोगिता में महिलाओं ने लिया हिस्सा

विकसित भारत विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण: वर्मा

रायपुर। राजस्व मंत्री श्री टंक राम वर्मा ने कहा है कि विकसित भारत और विकसित छत्तीसगढ़ का सपना महिलाओं को सशक्त बनाकर ही पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा अनेक योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। महिलाओं में आर्थिक स्वावलंबन, स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए महतारी वंदन योजना शुरू की गई है। इस योजना में महिलाओं को साल में 12 हजार रूपए की राशि दी जाएगी। इस योजना की पहली किस्त 7 मार्च को दी जाएगी। श्री वर्मा तिल्दा में आयोजित सशक्त नारी सम्मान समागम कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। बीएनबी स्कूल में आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए बालिकाओं की शिक्षा के लिए समाज को जागरूक होना पड़ेगा। शिक्षित महिलाओं से ही समाज आगे बढ़ेगा। महिलाओं की शिक्षा से समाज में फैली अनेक कुरूतियां, भेदभाव को मिटाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अधिकार सम्पन्न महिला न केवल परिवार अपितु समाज और देश की निर्माण और उन्नति में महती भूमिका कर सकती है। कार्यक्रम में राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि तिल्दा ब्लॉक के ग्राम पंचायतों में महतारी सदन के नाम से भव्य भवन निर्माण कराया जाएगा। इस सदन में सभी मूलभूत सुविधाएं होंगी, जहां महिलाएं विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित कर सकेंगी। इस सदन से जुड़ा बड़ा मैदान भी होगा। जहां महिलाओं के लिए खेलकूद और अन्य आयोजन किया जा सकेगा। इस अवसर पर महिलाओं के लिए पाककला, खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महिलाओं ने इस सभी गतिविधियों में उत्साह से हिस्सा लिया। कार्यक्रम में सम्मानित उत्कृष्ट महिलाओं में तहसीलदर ज्योति मशियारे, स्वास्थ के क्षेत्र में डॉ. उमा पैकरा, ममता सुनानी, एवम विविध क्षेत्र में कला साहित्य शशि दुबे, पुष्पा वर्मा, सीमा शर्मा पत्रकारिता, जैसे महिलाओ का सम्मान किया गया जिसमे डॉ. ज्योति वाधवा जी, डॉ. आशा भट्टर जी, डॉ. अल्का सुना जी, डॉ. सुमन हरिरमानी मंजू तिवारी, सुधा डहरवाल, मधु राजपूत, मोना शर्मा,निलिमा वर्मा, नैना रोहरा, पूनम वर्मा ,प्रिया राठी सरिता चंदानी, सविता वर्मा शामिल है।

राज्य स्तर पर होगा मतदाता जागरूकता कार्यक्रम : कंगाले

रायपुर। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबा साहेब कंगाले ने कहा है कि लोकसभा आम निर्वाचन के महापर्व में मतदाताओं की भूमिका अहम है। निर्वाचन महापर्व में प्रत्येक मतदाता के मत की अपने क्षेत्र और देश के भविष्य का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए मतदान केन्द्र तक पहुँचे, यह निर्वाचन आयोग का लक्ष्य है। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम मतदाताओं को मताधिकार के लिए प्रेरित करने का एक बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है। श्रीमती कंगाले आज मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय स्वीप कोर कमेटी की बैठक को संबोधित कर रहीं थीं। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती कंगाले ने कहा कि आगामी एक माह में राज्य स्तर पर विभिन्न मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि स्वीप (सिस्टमेटिक वोटर्स एजुकेशन एंड इलेक्टोरल पार्टिसिपेशन) कार्यक्रम के तहत आगामी 17 मार्च को नववधु सम्मान समारोह का राज्य स्तरीय आयोजन किया जाएगा। इसमें नवविवाहित वधुओं को सम्मानित किया जाएगा । मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि कम मतदान प्रतिशत वाले क्षेत्रों में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम विशेष तौर पर आयोजित किए जाएं।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.